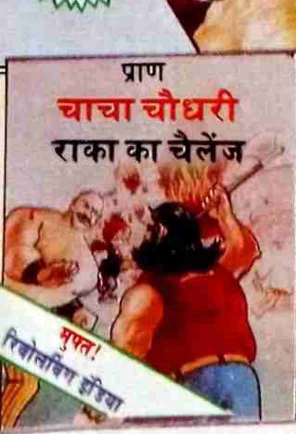


नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
उपहार विशेषांक
● चार रंगीन चित्र कथाएं
● अपना देश प्रतियोगिता पुरस्कार
● बच्चों की अलबेली दुनिया
● हमारे राष्ट्रपति
नवम्बर '९३
पांच रुपए
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन





डायमण्ड कामिक्स का सुपरहिट

800 वां अंक

कार्टूनिस्ट प्राण का

चाचा चौधरी-राका का चैलेंज

खूंखार राका छूट गया है, उसने वैद्यराज चक्रमाचार्य की चमत्कारी दवाई पी है जिसके कारण वह मर नहीं सकता, उसके अत्याचारों से सारी पृथ्वी कांप उठी है, कम्प्यूटर से तेज दिमाग वाले चाचा चौधरी और विश्व के सबसे ज्यादा ताकतवर इंसान साबू के लिए राका एक चैलेंज बनकर खड़ा है।

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002



मेरा जीवन ही मेरा संदेश है

महात्म गांधी

गांधी जयन्ती, (2 अक्तूबर, 1993) के पावन अवसर पर,
हम एक बार फिर उनके दिखाये हुए
सत्य, अहिंसा, विश्व-बंधुत्व, समता और प्रगति के
मार्ग पर चलते रहने का व्रत लें।

चिल्ड्रन्स साइंस लायब्रेरी



भारत में पहली बार बच्चों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई एक संपूर्ण साइंस लायब्रेरी। पाठ्य-सामग्री बहुत सरल और चित्रों से भरपूर। हर पुस्तक अपने-आप में स्वतंत्र एवं पूर्ण।

पृथ्वी (THE EARTH)*

इसकी उत्पत्ति, वायुमंडल, स्थलमंडल, महाद्वीप, पर्वतों का निर्माण, ज्वालामुखी, मरुस्थल, महासागर, नदियां, गुफाएं, मौसम और जलवायु, कुहरा और हिमपात, बादल, वर्षा, चक्रवात, आर्कटिक प्रदेश, पेट्रोलियम आदि विभिन्न विषयों की जानकारी इस पुस्तक से बच्चे बखूबी प्राप्त कर सकेंगे।

पृथ्वी पर जीवन (LIFE ON EARTH)*

भूवैज्ञानिक काल, जीवाश्म, सागरों में जीवन का आरंभ, डायनासौर, उड़ने वाले सरीसृप, पक्षी, पेड़-पौधे, प्रारंभिक स्तनधारी तथा जीवों का प्रारंभिक जीवन- यह सारी सामग्री बड़ी रोचकता के साथ प्रस्तुत की गई है।

ब्रह्माण्ड (THE UNIVERSE)*

इसमें पाठकों को जिनके बारे में जानकारी मिलेगी, उनमें प्रमुख हैं-तारे, मंदाकिनियां, सूर्य, सौर-मंडल, नौ ग्रह, चंद्रमा, उल्का, उल्कापिंड, धूमकेतु आदि। साथ ही, अंतरिक्ष की खोज एवं चंद्रमा की यात्रा का भी संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

वनस्पति-जगत (PLANT KINGDOM)*

इस पुस्तक में शैवाल, कवक, जीवाणु, ब्रायोफाइटा फर्न, बीज वाले पौधे, लाभदायक जड़ें, भूमिगत तने, प्रकाश-संश्लेषण, पतझड़, कीटभक्षी पौधे, परजीवी पौधे, विषैले पौधे आदि की जानकारी दी गई है। साथ-साथ वनस्पति-जगत के विभिन्न पक्षों पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।



लायब्रेरी की अन्य पुस्तकें -

- जंतु-जगत*
- प्रकाश
- ऊर्जा*
- ध्वनि (प्रेस में)
- संचार
- परिवहन
- बल और गति*
- मानव-शरीर
- पर्यावरण और प्रदूषण*
- विद्युत और चुंबकत्व*
- रसायन का विकास*
- खनिज और धातुएं
- वैज्ञानिक और आविष्कार (प्रेस में)

** निशान वाली पुस्तकें अंग्रेजी में भी उपलब्ध*

प्रत्येक का मूल्य; 15/- डाकखर्च; 4/- *8 पुस्तकों पर डाकखर्च माफ*

VANDANA/008/93/H

पुस्तक महल 10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-11002 फोन: 3268292-93

H.O.: दिल्ली-11006, *शाखाएं* • बंगलोर फोन: 234025 • बंबई फोन: 2010941 • पटना फोन: 65365

आओ बात करें

यम यानी मृत्यु के देवता की बेटी थी सुनीथा । कन्या एकदम भोली-भाली और सरल थी । बचपन से ही वह देखती थी कि उसके पिता पापियों को दंड देते हैं । सुनीथा सहेलियों के साथ खेलती तो खेल-खेल में किसी न किसी सहेली को दंड दिया करती ।

एक बार वह घूमती-घामती दूर निकल गई । वहां एक सुंदर युवक पालथी मारे पूजा-पाठ कर रहा था । वह गंधर्वकुमार सुशंख था । सुनीथा ने उसे देखा । देखती रही । पर सुशंख तो काफी देर तक हिला-डुला नहीं । न जाने सुनीथा को क्या सूझी, वह सुशंख पर कोड़े बरसाने लगी । उसने यह न सोचा कि किसी के तप में बाधा डाल रही है । भोलेपन में इसे खेल ही समझती रही । इतना होने पर भी गंधर्वकुमार ने उसे कुछ न कहा ।

अब तो हर दिन सुनीथा वहां आती । सुशंख पर कोड़े बरसाती । सुशंख ने एक दिन उससे कहा—"भले लोग मारने वाले को मारते नहीं । गाली देने वाले को गाली नहीं देते ।"

सुनीथा शायद कुछ न समझी । लौटकर उसने अपने पिता को सारी घटना सही-सही सुना दी । फिर पिता से पूछा कि उस युवक की बात का क्या अर्थ हुआ ? पिता ने हां-हूं की और अपने काम में लग गए । उन्होंने सुनीथा को ऐसा न करने को नहीं कहा । सुनीथा रुकी नहीं । वह रोज-रोज अपनी सखियों के साथ सुशंख के पास जाती । उसे कोड़े से पीटती ।

आखिर कोई कब तक सहन करे । एक दिन गंधर्वकुमार ने उसे शाप दे दिया—"तुम्हें इस पाप का फल मिलेगा । तुम ऐसे पुत्र की मां बनोगी जो घोर पापी होगा ।"

सुनीथा ने पिता को यह भी सच-सच बता दिया । शाप की बात सुनकर यम को दुःख हुआ । इस बार उन्होंने कहा—"निर्दोष तपस्वी को तुमने क्यों पीटा ? तुमने भारी पाप किया है । अब तुम पुण्य कर्म करो । विष्णु की पूजा करो ।"

धीरे-धीरे सुनीथा बड़ी हो गई । पिता को उसके विवाह की चिंता हुई । पर जहां भी बात चलती, शाप के कारण कोई उससे विवाह के लिए तैयार न होता । उसका विवाह ही रुक गया ।

पिता की आज्ञा से वह वन में जाकर तपस्या करने लगी । कई अप्सराएं सुनीथा की सहेली थीं । उनके कहने पर सुनीथा वर की खोज में चल दी । गंगा के तट पर अत्रि पुत्र अंग मिल गया । अंग को वरदान था कि उसका पुत्र विष्णु के समान सुंदर और इंद्र जैसा सम्पन्न होगा । सुनीथा रूपवती थी । अप्सरा रम्भा ने अपनी माया से सुनीथा को और भी आकर्षक बना दिया था । झूले पर बैठकर वह गीत गाने लगी । अंग ने उसे देखा तो देखता ही रह गया ।

सुनीथा और अंग का विवाह हो गया । उनके एक पुत्र हुआ । उसका नाम रखा वेन । वेन ने बचपन में ही सब विद्याएं सीख लीं । वरदान के अनुरूप वह सुंदर था, बड़ा तेजस्वी था । वेन को राजा बनाया गया । राज्य में सब ओर सुख-शांति थी । लेकिन गंधर्वकुमार का शाप बेकार कैसे जाता ! वेन धीरे-धीरे नास्तिक होने लगा । उसने धर्म के कामों पर रोक लगा दी । हर तरफ पाप का बोलबाला हो चला । ऋषि-मुनियों ने उसे समझाना चाहा, पर वह कब मानने वाला था ? फिर तो सप्त ऋषियों ने उसका कठोर उपचार किया । वन में जाकर वेन ने तप किया और गोलोक गया ।

यम ने शुरू में सुनीथा की बात को सुनकर भी अनसुनी किया । ऐसा न करते तो वेन का जीवन वरदान से महकता रहता ।

यह विशेषांक मिठाई की डलिया है । रस से भरी कहानियों के अलावा भी बहुत कुछ है।दीवाली की बधाई लो । लिखना अंक कैसा लगा ।

—तुम्हारे भइया

नंदन

नवम्बर '९३
वर्ष : ३० अंक : १

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है वार्षिक उपहार विशेषांक

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

आवरण : देबव्रत बनर्जी

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील
वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्र कुमार





लोभीलाल

—सुभद्रा मालवी

कनकावती नगरी में लोभीलाल नाम का एक ब्राह्मण रहता था। यों तो उसका असली नाम था लाभशंकर। उसके लोभ की कोई सीमा नहीं थी, इसी कारण सारे नगर के लोग उसे लोभीलाल के नाम से पुकारते थे। घर में उसकी स्त्री, चार पुत्र और पुत्र वधुएं थीं।

लोभीलाल के पास प्रचुर धन था, परंतु सारा धन जमीन में गाड़कर उस जगह अपनी फटी गुदड़ी बिछाकर सोता था। किसी को धन उधार देता, तो बदले में भारी ब्याज लेता। जब उधार की अवधि समाप्त हो जाती, तो वह उस व्यक्ति के घर जाता। अपना धन वसूल करके ही लौटता। इसके लिए फिर चाहे कितनी ही देर तक भूखा-प्यासा रहना पड़े या अपमान सहन करना पड़े।

घर के सभी लोग फटे,थेगली लगे कपड़े पहनते और भिक्षा में मिले पंचअनाज की रोटी खाते। वह अपने चारों बेटों को अलग-अलग गांवों में भीख मांगने भेजता। उस भीख में मिले अनाज में से भी बचा लेता।

लोग उससे त्रस्त थे और उससे नफरत करते थे। सुबह-सवेरे कोई उसका नाम न लेता। अगर वह सामने पड़ जाए तो लोग इसे अपशकुन मानते थे।

एक बार कनकावती नगरी के नगरसेठ को दो लाख रुपयों की आवश्यकता पड़ी। बहुत-सी हुंडियां भुगतान के लिए इकट्ठी हो गई थीं। उसके पास इस समय इतना धन नहीं था कि वह सारी हुंडियों का भुगतान कर देता। अन्य किसी साहूकार से मांगने पर बात खुलने का भय था। उसे दिवालिया घोषित कर दिया जाता। अंत में मजबूर होकर वह रुपए उधार मांगने, लोभीलाल के पास पहुंचा। आठ दिन के बाद वापस लौटाने का वायदा करके, उसने दो लाख रुपए उधार मांगे। इतना बड़ा सेठ उसके पास उधार मांगने आया, इसी खुशी से लोभीलाल ने रुपए बिना किसी ब्याज के ही उधार दे दिए।

नगरसेठ दो लाख रुपए लेकर लौट आया और सारी हुंडियों का भुगतान किया। सेठ अपने काम-काज में हमेशा की तरह जुट गया। आठवां दिन बीतने को आया, परंतु सेठ को काम-काज में रुपए लौटाने की बात याद नहीं रही। अब तो लोभीलाल चिंता में डूब गया। पता नहीं सेठ रुपए लौटाएगा भी या नहीं? अंत में आदत से मजबूर होकर वह नगरसेठ के भवन में जा पहुंचा।

द्वार पर पहरेदार ने उसके फटे वस्त्रों को देखकर उसे भिखारी समझकर रोक लिया। तब लोभीलाल क्रोध से बोला—"जा,अपने सेठ से कह दे कि दो लाख रुपयों का लेनदार आया है।"

पहरेदार को विश्वास नहीं हुआ। परंतु जब लोभीलाल ने पीछा नहीं छोड़ा, तो अंदर जाकर उसने सेठ को सारी बात बताई। अब सेठ पछताया कि उससे चूक हो गई। उसने तुरंत लोभीलाल को अंदर बुलाया।

अंदर आकर लोभीलाल नगरसेठ का वैभव देख चकित रह गया। सोचने लगा—"यह धन उड़ाऊ आदमी कभी रुपया जमा नहीं कर सकता। मेरे पास से रुपया ले आया और इस तरह उड़ा दिया। इतने

ठाठ-बाट की क्या आवश्यकता है ?''

सेठ ने उसे अपने पास बुलाकर समझाया—''आज आपके रुपए नहीं भेज सका, इसका मुझे दुःख है । कल प्रातः ही आपके रुपए भेज दूंगा ।''

लोभीलाल बोला—''मैं कुछ नहीं जानता । अपने रुपए लिए बिना वापस नहीं जाऊंगा । आपने आज का वायदा किया था । मुझे तो रुपए अभी चाहिएं ।''

नगरसेठ ने उसे अपने पास आकर बैठने के लिए कहा । परंतु सुंदर गलीचा और उस पर बिछे गद्दे-तकियों पर बैठना, लोभीलाल को पसंद नहीं आया । द्वार के पास लकड़ी का तख्त रखा था । वह उसी पर जाकर बैठ गया ।

रात में भोजन के समय नगरसेठ ने उसे भोजन के लिए बुलाया । बैठने के लिए कीमती आसन, मूल्यवान बर्तनों में भांति-भांति के पदार्थ देखकर लोभीलाल का सिर चकरा गया । वह पछताने लगा कि इतनी फिजूलखर्ची में जो आदमी अपना सारा धन यों उड़ा रहा है, उसे उधार क्यों दिया ! उसने भोजन करने से मना कर दिया । बोला—''यह भोजन मेरे गले से नीचे नहीं उतरेगा । मुझे तो पीतल की थाली में मक्का की रोटी और मिर्च तथा पानी पीने के लिए तूंबड़ी चाहिए ।'' उसका उत्तर सुनकर सेठ मन ही मन हंसने लगा—'इतना धनवान होकर भी यह कंजूस एक पाई खुद खर्च नहीं कर सकता । और तो और खाने-पीने के लिए मुफ़्त में मिल रहा है, फिर भी इससे खाया नहीं जाता । ईश्वर की लीला अपरम्पार है !' सेठ ने रसोइए से कहकर मक्का की रोटी बनवा दी । खा-पीकर नर्म गद्दों पर न सोकर, वह द्वार पर ही, तख्त पर अपनी फटी पगड़ी बिछाकर सो गया ।

उसे चिंता के कारण नींद नहीं आ रही थी । वह सोच रहा था कि सेठ इतने ठाठ-बाट में ही अपने सारे रुपए खर्च कर रहा है । मेरे रुपए कहां से लौटाएगा ? इसी तरह सोचते-सोचते मध्यरात्रि हो गई । उसी समय उसने देखा कि बहुमूल्य वस्त्र और आभूषणों से सजी एक सुंदर युवती सेठ के भवन में प्रवेश कर रही है ।

उसने स्त्री को द्वार पर ही रोककर कहा—''कौन हो तुम ?''

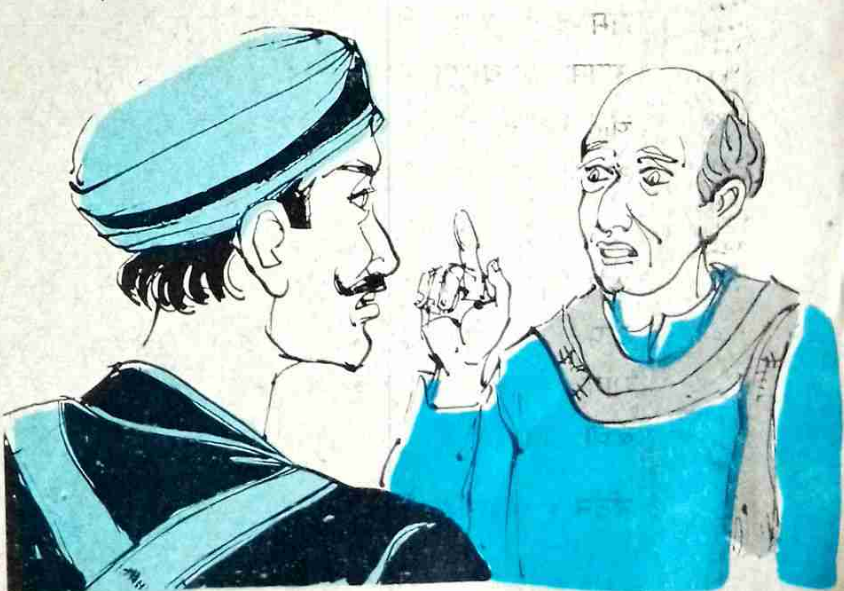
स्त्री बोली—''अरे लोभीलाल ! तूने मुझे पहचाना नहीं ? मैं लक्ष्मी हूं । यह सारा वैभव मैं ही भोगने के लिए देती हूं । मैं तेरे घर में भी रहती हूं, परंतु तू मेरा दिया धन भोग नहीं सकता । सेठ खर्च करना जानता है, इसलिए वह वैभव भोग रहा है । तू लक्ष्मी संचित करके जब मर जाएगा, तब कोई दूसरा भाग्यवान उसका उपभोग करेगा ।''

लक्ष्मीजी के दर्शन से लोभीलाल को सत्य का ज्ञान हुआ । वह दृढ़ता से बोला—''मेरी संचित लक्ष्मी का उपभोग मैं ही नहीं कर सकूंगा ! कौन रोकेगा मुझे ? घर जाकर मैं तुरंत अपने धन का सदुपयोग करूंगा ।''

लक्ष्मीजी हंसने लगीं—''नहीं, तू उसे नहीं भोग सकेगा । अगर ऐसा करने लगेगा, तो तेरे वक्ष पर दाग दिया जाएगा । तेरे पास जो लक्ष्मी है, वह दूसरे के संरक्षण में है । इसका रक्षक जब तक अनुमति नहीं देगा, तू उसे भोग नहीं सकेगा ।''

लोभीलाल ने निश्चय किया कि वह घर जाकर, अपने धन का उपभोग करेगा । प्रातःकाल होने पर सेठ ने उसे रुपए लौटा दिए ।

आकर अपनी टूटी झोंपड़ी और परिवार जनों के फटे वस्त्र देखकर, उसे दुःख हुआ । उसने अपने पुत्रों को बुलाकर कहा—''नगर में जाकर अच्छे-अच्छे खाद्य पदार्थ लाओ । राज मिस्त्री को बुलाकर भव्य भवन बनवाओ । सभी प्रकार की उत्तम वस्तुएं खरीदो ।''



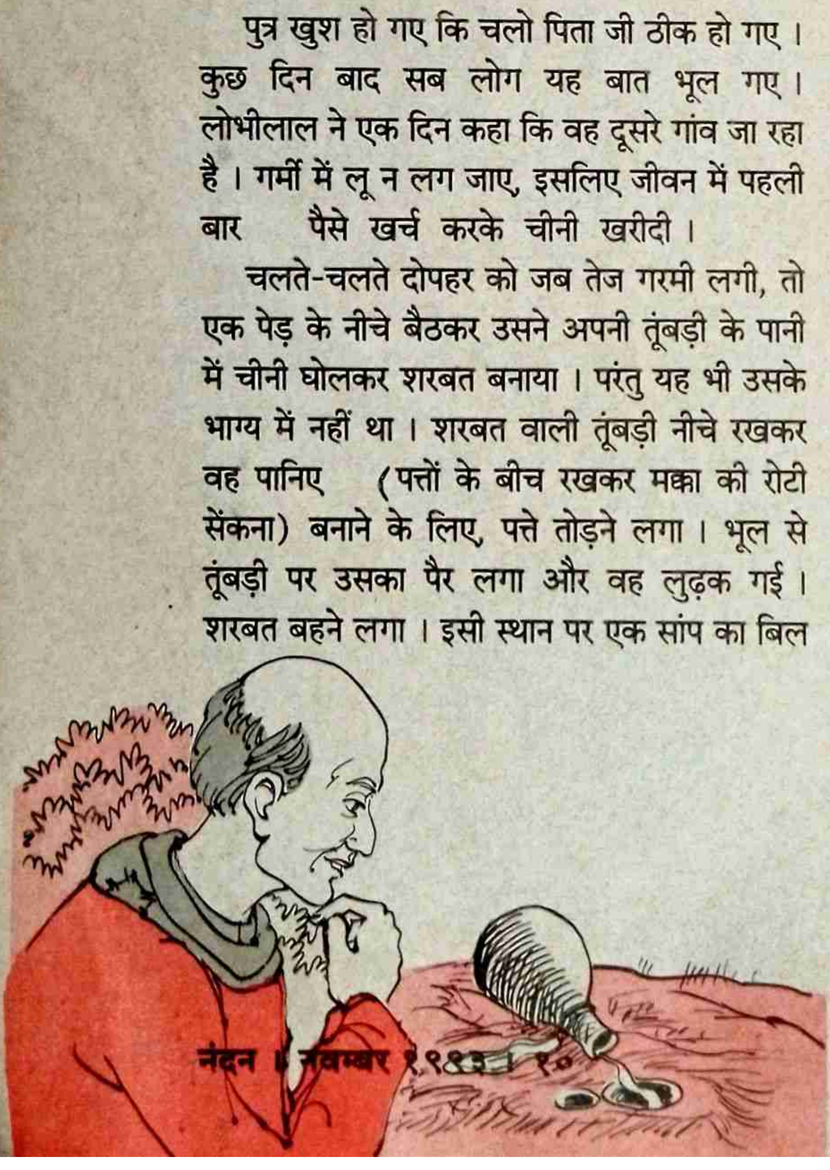
पिता की बातें सुनकर पुत्रों ने सोचा—'पिता जी रात्रि में बाहर गए थे । जरूर इन्हें कोई भूत लग गया है । भूत उतारना पड़ेगा ।' उन्होंने आपस में सलाह करके ओझा को बुला लिया । ओझा ने कहा—"इनको भूत लगा है, इनके वक्ष पर लोहा गरम करके दाग दो ।" लोभीलाल ने अनेक प्रकार से समझाने का प्रयास किया, मगर बेटों ने उसके वक्ष पर गरम लोहे से दाग दिया ।

लोभीलाल ने मन में सोचा—'लक्ष्मीजी ने ठीक कहा था । अब क्या करूं ? किसी साधु-महात्मा की शरण जाऊं ।'जो मेरा है उसे मुझे खाने दो'-यह वरदान मांग लूं ?'

कुछ सोचकर, वह अपने पुत्रों से कहने लगा—"मुझे न जाने क्या हो गया था,जो मैं बेकार की बातें कह गया । खबरदार जो एक पाई भी किसी ने खर्च की ।"

पुत्र खुश हो गए कि चलो पिता जी ठीक हो गए । कुछ दिन बाद सब लोग यह बात भूल गए । लोभीलाल ने एक दिन कहा कि वह दूसरे गांव जा रहा है । गर्मी में लू न लग जाए, इसलिए जीवन में पहली बार पैसे खर्च करके चीनी खरीदी ।

चलते-चलते दोपहर को जब तेज गरमी लगी, तो एक पेड़ के नीचे बैठकर उसने अपनी तूंबड़ी के पानी में चीनी घोलकर शरबत बनाया । परंतु यह भी उसके भाग्य में नहीं था । शरबत वाली तूंबड़ी नीचे रखकर वह पानिए (पत्तों के बीच रखकर मक्का की रोटी सेंकना) बनाने के लिए, पत्ते तोड़ने लगा । भूल से तूंबड़ी पर उसका पैर लगा और वह लुढ़क गई । शरबत बहने लगा । इसी स्थान पर एक सांप का बिल था । सांप गरमी से बेहाल हो गया था । शरबत बहकर उसके बिल में पहुंचा, तो उसे पीकर सांप को आराम मिला । वह बाहर निकला । उसे देखते ही लोभीलाल भय से जड़ हो गया ।



"हे ब्राह्मण तू मुझसे डर मत । मैं,चरमानिया नाग तुझ पर प्रसन्न हूं । तुझे जो चाहिए मांग ले ।"_सांप ने प्रसन्नता पूर्वक कहा ।

दोनों हाथ जोड़कर लोभीलाल बोला—"हे नागदेव ! आप मुझ पर प्रसन्न हैं,तो मुझे केवल इतना वरदान दे दीजिए कि जो मेरा है, मैं उसे खा सकूं । उसका उपभोग कर सकूं ।"

ब्राह्मण की बात सुनकर नाग बोला—"भाई मैं तेरा रक्षक नहीं हूं । तेरी लक्ष्मी की रक्षा मेरा मौसेरा भाई तंबोलिया नाग कर रहा है । वह तुझे अनुमति दे, तभी तू अपने धन का उपभोग कर सकता है ।"

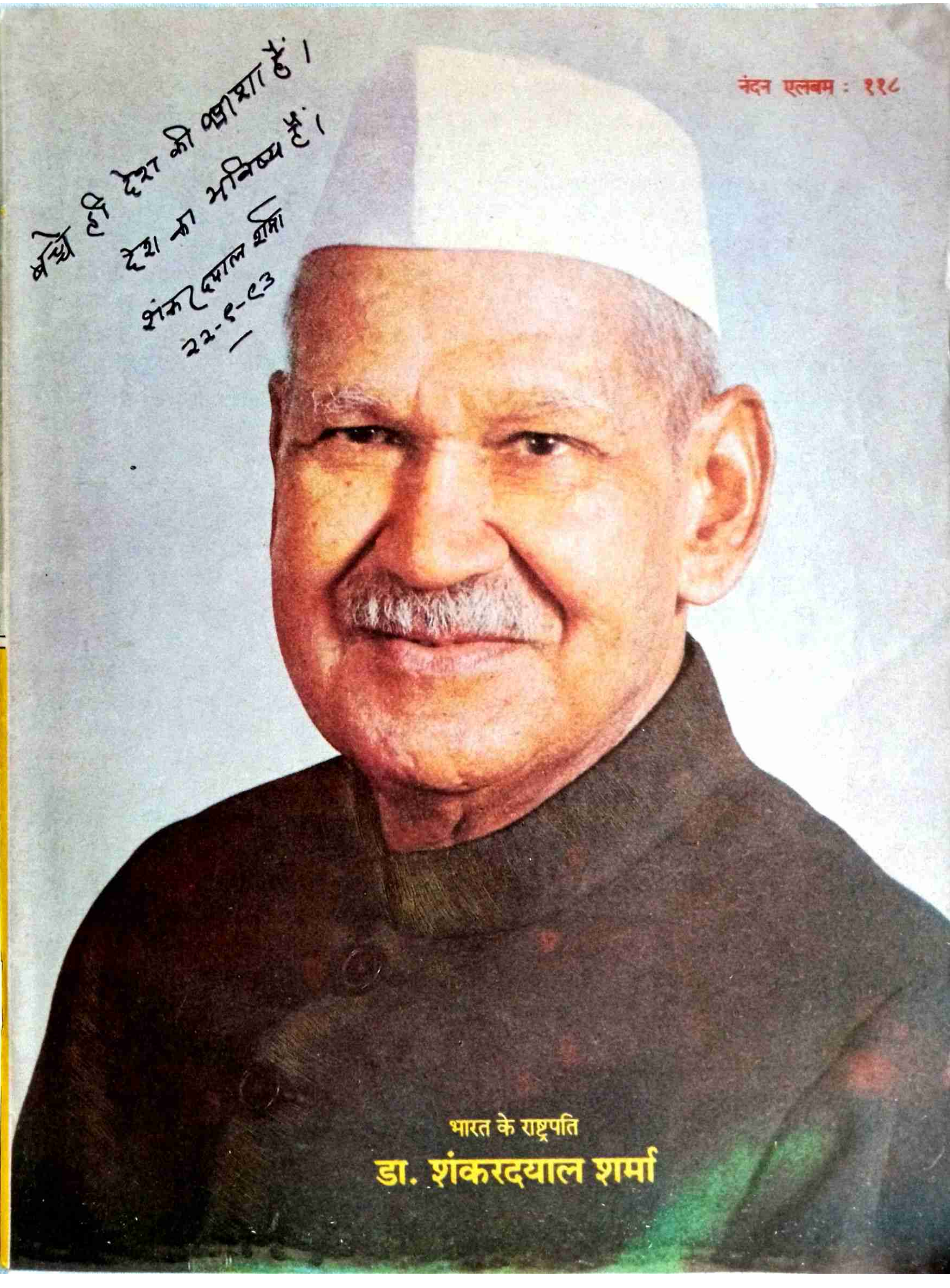
—"आपने मुझे दर्शन दिए और प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहा । मैं जो मांग रहा हूं,आप वह वरदान दीजिए । नहीं तो अपना वचन वापस लीजिए ।"

अपने वचन से बंधा नाग ब्राह्मण को अपने वापस आने तक वहीं रुकने के लिए कहकर, अपने भाई तंबोलिया नाग के पास गया । उसने अपने भाई को सारी बात बताई । तंबोलिया नाग बोला—"मेरी रक्षा में जितने कुल हैं,उनमें लोभीलाल सबसे अच्छा है । मैं उसे छोड़ नहीं सकता ।"

चरमानिया नाग ने उसे बहुत समझाया । जब दोनों भाइयों में सम्बंध टूटने तक बात आ पहुंची, तो तंबोलिया नाग अपने भाई के रक्षण में से दो कुल लेने पर राजी हो गया । उसने लोभीलाल को मुक्त कर दिया ।

चरमानिया नाग प्रसन्नता से लोभीलाल के पास आकर कहने लगा—"आज से जो तेरा है, उसे तू उपभोग कर ।"

इस प्रकार इच्छित वरदान पाकर, लोभीलाल खुशी-खुशी घर लौट आया । वरदान के कारण उसके परिवारजनों का हृदय भी बदल गया था । ●



भारत के राष्ट्रपति

डा. शंकरदयाल शर्मा

हर घर जगमग

—जयप्रकाश भारती

छोटा-सा गांव शिरडी । बहुत बरस पहले, एक दिन वहां नीम के पेड़ तले एक युवक बैठा था । गांव के दो लोग उधर से गुजरे । उन्होंने युवक को देखा । लगा कि उनके गांव का तो है नहीं । उससे पूछा—''कौन हो, कहां से आए हो ? क्या नाम है तुम्हारा ?''

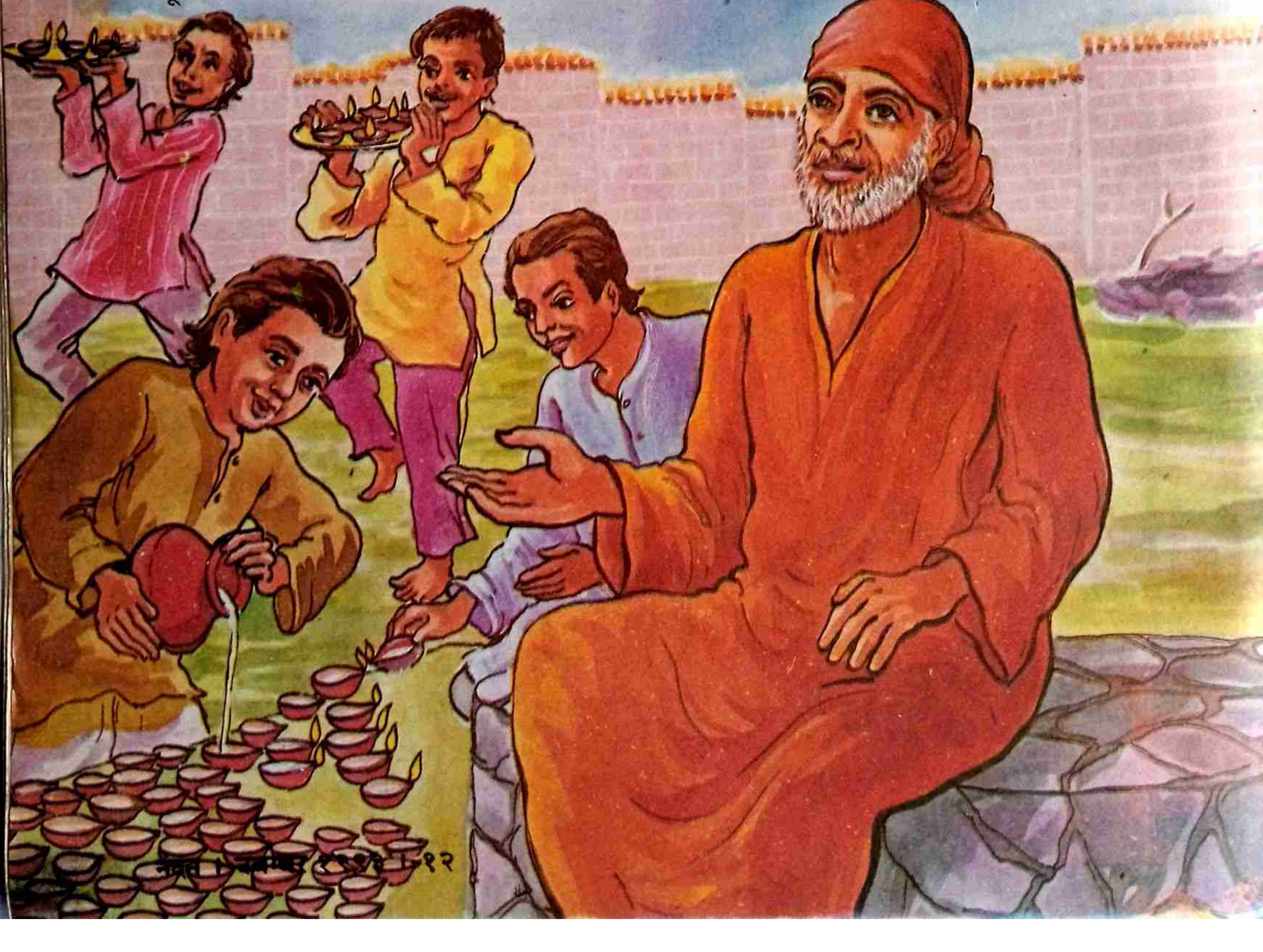
युवक ने एक जोरदार ठहाका लगाया । कुछ देर बाद कई और गांव वाले भी वहां आ गए । उन्होंने भी जानना चाहा, उस युवक के बारे में । पर ठीक से कोई उत्तर नहीं दिया, सिवाय हंसने-खिलखिलाने के । किसी ने कहा—''घर से भाग आया है ।'' कोई दूसरा बोला—''नहीं-नहीं, यह तो कोई पहुंचा हुआ साधु मालूम होता है ।''

जितने मुंह, उतनी बातें । पर उस युवक को किसी से जैसे कुछ लेना-देना ही नहीं, अपने में ही खोया-खोया । तभी वहां एक सजा-धजा आदमी आया । लोगों का ध्यान उसकी ओर गया । कई लोग उसे पहचानते थे—वह पास के गांव का नवाब था । नवाब कुछ परेशान-सा था । बोला—''अरे भई, तुम लोगों में से किसी ने मेरा घोड़ा तो नहीं देखा ? बड़ी देर से खोज रहा हूं ।''

''कैसा था नवाब साहब, आपका घोड़ा ?''—एक आदमी ने पूछा ।

''भई, काले रंग का है । माथे पर सफेद टीके जैसा निशान है ।''– नवाब ने बताया ।

तभी वह युवक बोला—''आपका घोड़ा यहीं बुलाए देता हूं । आप परेशान क्यों होते हैं !'' युवक ने दायां हाथ उठाया और जरा देर को आंखें झपकाईं, फिर आंखें खोल दीं । दो मिनट बाद ही एक ओर से



घोड़े के हिनहिनाने की आवाज आई। सभी ने देखा कि थोड़ी दूरी पर नवाब साहब का घोड़ा खड़ा है।

नवाब उस युवक के चरणों में झुक गया। कहने लगा—"सच बताइए, आप कौन हैं ? मैंने तो आज तक ऐसा चमत्कार नहीं देखा साईं बाबा।"

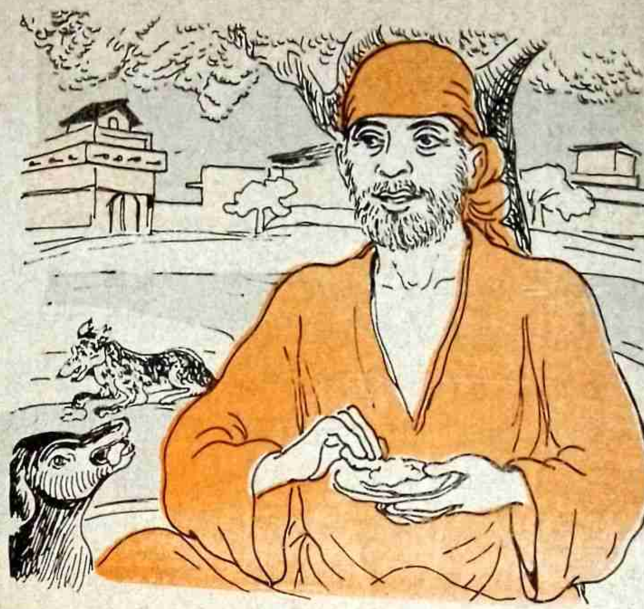
युवक बोला—"मैं खुद भी नहीं जानता कि कौन हूं। प्रभु का नाम लेता हूं और मांगकर रोटी खा लेता हूं।"

सारे गांव में यह बात फैल गई कि बहुत पहुंचा हुआ साधु आया है। उन दिनों शिरडी गांव में पांच सौ घर होंगे। उनमें हिंदू भी थे और मुसलमान भी। सभी जगह साईं के चमत्कार की चर्चा होने लगी। लोग साईं बाबा के दर्शनों को आने लगे। लेकिन बाबा को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। वह पास के किसी घर के दरवाजे पर जाते। वहां अलख जगाते। कहते—"रोटी मिलेगी माई ? तेरा भला होगा।"

जो भी दो-चार रोटियां मिलतीं, उन्हीं पर सब्जी रखवा लेते। नीम के पेड़ तले आ बैठते। कई कुत्ते उन्हें घेरकर बैठ जाते। बाबा एक टुकड़ा खुद खाते और एक-एक टुकड़ा कुत्तों को डालते। इसी तरह रोटियां खत्म हो जातीं। सामने कुएं पर किसी से पानी पिलाने को कहते। बस, फिर यों ही कहीं पुराने मंदिर में आराम करने लगते।

मंदिर में आरती हो रही होती, तो साईं बाबा वहां चले जाते। मस्जिद में अज़ान का समय होता, तो वहां पहुंच जाते। कुछ दिन बाद एक पुरानी, खंडहर हुई जगह को गांव के लोगों ने मिल-जुलकर ठीक-ठाक कर दिया। साईं बाबा वहीं धूनी रमाने लगे।

कई लोग खुसर-पुसर करते कि बाबा मस्जिद में क्यों जाते हैं ? क्या वह मुसलमान हैं ? दूसरे लोग कहते कि साधु ढोंगी है। मुसलमान होकर भी मंदिर की आरती में भाग लेता है। लेकिन बाबा के कुछ चेले भी बन गए थे। एक दिन उनके चेले दामोदर को नाग ने डस लिया। वह बेहोश हो गया। साईं बाबा को पता चला, तो वह उसके घर जा पहुंचे। देखते ही देखते उसका जहर उतार दिया। वह भला-चंगा हो



गया।

यह बात जिसने सुनी, वही हैरान रह गया। गांव में मंदिर के पुजारी थे विश्वनाथ। वह वैद्यक भी करते थे। कुछ टोना-टोटका भी कर लेते थे। गांव वाले अपने इलाज के लिए पंडित विश्वनाथ की शरण में ही जाते। किंतु जब से साईं बाबा गांव में आए, पंडित विश्वनाथ की पूछ कम हो गई। आमदनी भी घट गई। उन्होंने अपने कई चहेतों को एकत्र किया और साईं बाबा की निंदा करने लगे। विश्वनाथ बोले—"अरे, वह तो संपेरा है, सच्चा साधु नहीं है। सांप का विष तो संपेरे ही उतारते हैं।"

एक खुशामदी ने टोका—"पर पंडित जी, दामोदर को तो नया जीवन मिला है। सभी लोग सोच बैठे थे कि वह मर गया। बाबा ने उसके पांव का अंगूठा दबाया, तो बूंद-बूंद करके खून गिरने लगा। फिर कुछ ही देर में दामोदर यों उठ बैठा, मानो कुछ हुआ ही न था।"

तभी बाहर आवाज सुनाई दी। पंडित विश्वनाथ ने खिड़की से बाहर झांका। गांव के लोग झांझ-मृदंग बजा रहे थे। पालकी में साईं बाबा को बैठाकर, गांव के लोग उनकी सवारी निकाल रहे थे। उनका जय-जयकार कर रहे थे। उस टोली में स्कूल के मास्टर जी, डाक बाबू और कई दूसरे पढ़े-लिखे लोग भी थे। पंडित विश्वनाथ को तो जैसे बिजली का

झटका लगा। वह देर तक यह सब नहीं देख पाए। गुस्से से जल-भुन गए। पांव पटकते हुए कमरे में गए। दरवाजा बंद कर लिया, धम्म से बिस्तर पर जाकर लेट गए।

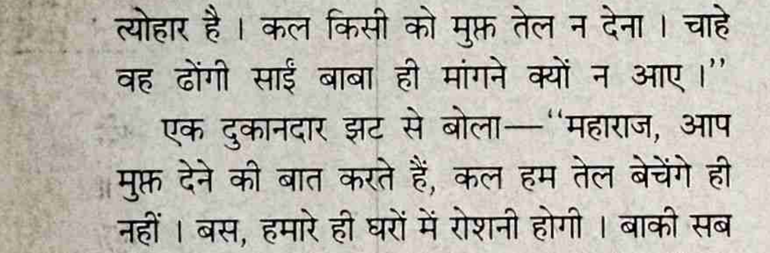
जो भी पंडित जी के पास आता, वही साईं बाबा के गुण गाने लगता। और पंडित विश्वनाथ के मन में कड़वाहट बढ़ती जाती। दूसरी ओर साईं बाबा के पास जो भी रोते-कराहते पहुंचता, वह एक चुटकी भभूत से ठीक हो जाता। हंसता-मुसकराता वहां से लौटता। बाबा किसी से कुछ लेते भी नहीं थे। शाम होती तो मिट्टी का करवा लेकर किसी दुकान पर बाबा चले जाते। थोड़ा-सा तेल मांग लाते। उसी से रात को चिराग जलाया करते।

मंदिर में आरती के समय कई दुकानदार और लाला आया करते थे। दीपावली से एक दिन पहले पंडित विश्वनाथ ने दुकानदारों को समझाया—"जिजमानो, कल दीवाली का बड़ा त्योहार है। कल किसी को मुफ़्त तेल न देना। चाहे वह ढोंगी साईं बाबा ही मांगने क्यों न आए।"

एक दुकानदार झट से बोला—"महाराज, आप मुफ़्त देने की बात करते हैं, कल हम तेल बेचेंगे ही नहीं। बस, हमारे ही घरों में रोशनी होगी। बाकी सब घरों में अंधेरा रहेगा। लक्ष्मी का आशीर्वाद हमें ही मिलेगा।"

एक-दो अन्य लोगों ने भी हां में हां मिलाई, तो तय हो गया कि कल कोई भी तेल नहीं बेचेगा, कोई कुछ भी कीमत क्यों न दे। पंडित विश्वनाथ यही तो चाहते थे।

दूसरे दिन साईं बाबा ने हांडी उठाई और एक दुकान पर पहुंचे। बोले—"भई, आज दीवाली है,



थोड़ा ज्यादा तेल दे देना।"

दुकानदार बोला—"बाबा, आज तो एक बूंद भी तेल नहीं है। सब कल ही खत्म हो गया। त्योहार के दिन ला भी नहीं सकता।"

बाबा कई दुकानों पर गए, पर सबने उन्हें टरका दिया। वह खाली हांडी लेकर लौट आए। वहां कितने ही भक्त बैठे थे। कोई टोकरी भर दीए दे गया था, पर बिना तेल रोशनी कैसे की जाए? वे तो बाबा के साथ दीवाली मनाना चाहते थे। खूब रोशनी करके पूजा-कीर्तन करना चाहते थे।

बाबा के दो-तीन शिष्य वहां से खिसक गए। उन्होंने सोचा कि वे खरीद कर तेल ले आएंगे। पर वे भी जहां-जहां गए, किसी दुकानदार से तेल नहीं मिल सका। उन्होंने बाबा से कहा—"आज तो दुकानदार कह रहे हैं कि उनके पास खुद जलाने को भी तेल नहीं है। अब क्या हो?"

साईं बाबा बोले—"वे ठीक ही कह रहे हैं लेकिन परेशान होने की जरूरत नहीं है।" उन्होंने एक घड़ा उठाया और रस्सी बांधकर कुएं में लटका दिया। फिर पानी भरकर ऊपर खींच लिया। भक्तों से बोले—"इसे मिट्टी के करवों में भर लो और दीयों में पूर दो।"

साईं बाबा ने एक करवा भर लिया और बड़े-बड़े दीयों में पूर दिया। फिर बोले—"जलाओ दीए।"

यह क्या! पूजन के उन दीयों में तो घी जल रहा था।

बाकी सभी दीयों में शिष्यों ने कुएं का जल पूर दिया। वे सब सरसों के तेल से भर गए। जगमग-जगमग ऐसी रोशनी हुई कि देखते ही बनती थी। भक्त तो खुशी से नाचने लगे।

बाबा बोले—"जो तेल बचा है, उन दुकानदारों को बांट आओ। उनके यहां भी रोशनी होनी चाहिए।"

सचमुच उनके घरों में तेल की एक बूंद न थी। बाबा ने तेल भेजा, तो उन्होंने अपने-अपने घर में रोशनी की। ●

साधु गायब

—अमरनाथ शुक्ल



आज से लगभग एक सौ पचास साल पहले, राजकोट जिले के एक गांव में जलाराम नाम का व्यापारी रहता था। वह खेती भी करता था। घर के काम से फुरसत मिलने पर वह साधु-संतों की सेवा करता था। जब साधु-संत जाने लगते, तो वह उन्हें थोड़ा-बहुत धन देकर विदा करता।

एक दिन एक बूढ़ा साधु पेड़ के नीचे बैठा था। उसने रास्ते में गुजरते हुए राहगीर से पूछा—"भाई, मैं थक गया हूं। अंधेरा होता आ रहा है। कहीं पास में धर्मशाला हो, तो बताइए। मैं रात में वहीं ठहर जाऊंगा।"

राहगीर बोला—"बाबा, धर्मशाला में जाने की क्या जरूरत? गांव में भगत जलाराम रहते हैं। साधु-संतों की वहां सेवा होती है। आप वहीं चले जाएं।"

साधु डंडा-झोला उठाए जलाराम के घर पहुंचा। जलाराम साधु के आने की खबर पाकर बाहर आया। साधु को अतिथि-गृह में ले गया। परात में पानी भरकर उसके पैर धोए। खाना खाकर साधु सो गया।

सवेरे साधु जाने लगा, तो जलाराम की पत्नी ने कहा—"बाबा! आप बहुत थके हुए हैं। दो-चार दिन यहां और आराम कर लें। हम लोग आपकी हर प्रकार से सेवा करेंगे।"

साधु बोला—"देवी, हम साधु तो रमते राम हैं। सुख के लिए हम एक जगह ज्यादा दिन नहीं ठहर सकते। हम चलते हैं, आगे भगवान जैसा चाहेंगे, वैसा होगा।"

जलाराम ने भी बहुत कहा। पर साधु रुकने के लिए तैयार न था। जलाराम बोला—"बाबा, मैं अपना कोई सेवक आपके साथ भेज देता हूं। आप जब तक चाहें, वह आपके साथ रहकर आपकी सेवा करेगा।"

साधु हंसा। बोला—"भगत! तुम्हारे पास कई नौकर-चाकर हैं, पर मेरी सेवा तुम दोनों ने ही क्यों की? फिर यदि तुम्हें मेरी सेवा का इतना ख्याल है, तो तुम अपनी पत्नी को मेरे साथ भेज दो। जब तक जरूरत होगी, वह मेरी सेवा करेगी।"

साधु का यह प्रस्ताव बड़ा ही अटपटा था। फिर भी जलाराम ने कहा—"महाराज! मेरी पत्नी अवश्य आपके साथ जाएगी।"

पत्नी ने आगा-पीछा कुछ न सोचा। आटा पीसने का एक छोटा जांता (चक्की) लेकर साधु के साथ चलने को तैयार हो गई।

साधु ने अपना डंडा-झोला उठाया। फिर जलाराम की पत्नी को साथ लेकर चला गया। गांव में जिसने भी यह सुना, जलाराम की बुद्धि पर तरस खाया। साधु का क्या है, उसे तो जाना ही था। आगे उस पर जो बीतती, वह जानता।

दिन बीता, रात बीती। जलाराम सवेरे उठा, तो देखा—उसकी पत्नी द्वार पर अकेली खड़ी है।

जलाराम ने आश्चर्य से पूछा—"तुम कैसे वापस आ गईं? साधु बाबा कहां गए?"

पत्नी बोली—"मैं साधु के बारे में कुछ नहीं जानती। कल यहां से मैं और साधु बाबा बीरपुर गए। बाबा थक गए थे। अंधेरा हो रहा था। किसी गृहस्थ के घर न ठहरकर, बाबा ने एक पेड़ के नीचे रात बिताने का निश्चय किया। मैंने चक्की से आटा पीसकर रोटियां बनाईं। बाबा ने बड़े प्रेम से खाया। बहुत खुश हुए। सोने से पहले वह बोले—'देवी! तुम अपने पति तथा घर-बार को छोड़कर मेरी सेवा के लिए आ गईं। मेरे पास कुछ भी नहीं, जो मैं तुम्हें दे सकूं। बस, भगवान से प्रार्थना करता हूं कि वह तुम्हारा भला करें। मैं अब सोऊंगा, तुम भी आराम करो।'

"मैं सो गई। सवेरे उठी, तो देखा साधु वहां नहीं थे। उनका डंडा-झोला वहां पड़ा था। मैंने काफी समय तक उनकी प्रतीक्षा की। जब वह नहीं आए, तो मैं यहां लौट आई।"

जलाराम यह सुनकर ठगा-सा रह गया। उसका माथा ठनका। सोचा—'वह पहुंचे हुए साधु थे। काफी वृद्ध थे। सेवा के लिए मेरी पत्नी को साथ लिया। फिर सवेरे अचानक अपना डंडा-झोला छोड़कर कहां चले गए?' उसका मन अशांत था।

जलाराम पत्नी को लेकर बीरपुर गया। पत्नी उसे वहां ले गई, जहां साधु रात में ठहरे थे। वहां पति-पत्नी ने देखा, साधु का डंडा-झोला वैसे ही पड़ा था। साधु का कहीं पता नहीं था।

जलाराम ने सोचा—'साक्षात भगवान ही मेरी परीक्षा लेने आए थे। साधु होकर सेवा के लिए मेरी पत्नी को मांग लिया और दूसरे दिन न जाने कहां चले गए!'

कुछ समय बाद जलाराम ने वहां एक मंदिर बनवाया। अपना सारा धन मंदिर में लगा दिया।

आज भी वहां रात-दिन लंगर चलता रहता है। बूढ़े-असहाय, अपंग और साधु-संतों के लिए तो वह आश्रम ही बन गया है। मंदिर में वह झोला और डंडा भी रखा है, जो साधु छोड़ गया था। ●

पटाखों का त्योहार

—डा. ओमप्रकाश सिंहल

सैकड़ों साल पुरानी बात है। चीन के एक गांव में तुंग जाति की एक लड़की रहती थी। बढ़िया खुशबूदार चाय बनाने में उसका कोई मुकाबला ही नहीं था। घमंड तो उसे छू तक नहीं गया था। दूसरों को मुसीबत में फंसा देखकर तुरंत सहायता के लिए तैयार हो जाती। मनुष्य की ही नहीं, पशु-पक्षियों, कीड़े-मकोड़े तक की सहायता करती।

एक दिन की बात है। वह अपने गांव के बहुत बड़े तालाब के किनारे बैठी थी। मछलियों का इधर-उधर भागना, उछलना-कूदना देख रही थी। अचानक उसने देखा कि सभी मछलियां एकदम पानी में नीचे चली गईं। एक छोटी-सी मछली ही ऊपर रह गई। एक पनिहा सांप उसे खाने के लिए लपक रहा था।

लड़की ने सूझ-बूझ से काम लिया। अपना जाल पानी में इस तरह फेंका कि सांप उसमें फंस गया। नन्ही-सी मछली उसकी पकड़ से बच गई।

नन्ही मछली ड्रेगनों के राजा की लाड़ली बेटी थी। उसे यह आभास हो गया था कि पनिहा सांप उसके प्राण लेने पर तुला है। वह यह सोच रही थी कि उससे कैसे बचा जाए। पर अब उस सांप को ही अपनी जान के लाले पड़े थे। तभी उसने देखा, तालाब के किनारे बैठी एक भोली-भाली लड़की उसकी ओर देख कर धीमे-धीमे मुसकरा रही थी।

मछली सोचने लगी कि अगर आज यह लड़की न होती, तो उसके प्राणों की खैर न थी। वह फुर्ती से पानी के भीतर गई। अपने महल में घुसी। एक से एक खूबसूरत हीरे-जवाहरातों से भरा था वह। उसने एक बेहद खूबसूरत रत्न उठाया। चमक इतनी कि घुप्प अंधेरे में भी रख दो, तो ऐसा लगे जैसे सौ दीपक एक साथ चमक रहे हैं। उस रत्न को लेकर वह तालाब के किनारे आई। अपना सिर झुकाकर उसने वह रत्न लड़की के पैरों के पास रख दिया।

रत्न देखकर लड़की अचरज से भर उठी। उसने तालाब की ओर देखा। नन्ही मछली अनुरोध कर रही थी कि उसकी तुच्छ भेंट स्वीकार कर ली जाए। बरसों से रोज मछलियों को उछलते-कूदते देखते रहने से लड़की उनकी भाषा अच्छी तरह समझने लगी थी। लड़की ने रत्न अपने हाथ में उठा लिया।

इस घटना के बाद लड़की और मछली पक्की सहेलियां बन गईं। तालाब के किनारे दोनों घंटों तक एक-दूसरे से न जाने किस भाषा में बतियाती रहतीं।

एक दिन ड्रेगनों के राजा को यह बात पता लग गई कि उसकी लाड़ली बेटी ने गांव की एक गरीब लड़की को अपनी सहेली बना रखा है। उसने बेटी को समझाया कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। यह उनकी कुल-परम्परा के विरुद्ध है। लेकिन राजकुमारी ने अपनी सहेली से मिलना बंद नहीं किया। राजा को बहुत गुस्सा आया। उसने राजकुमारी को महल में बंद कर दिया। वह बहुत रोई-धोई, पर राजा पर कोई असर नहीं हुआ।

सहेली से मुलाकात न होने पर लड़की भी गुमसुम रहने लगी। किसी भी काम में उसका मन न लगता। माता-पिता के बार-बार पूछने पर उसने अपनी उदासी का कारण बतला दिया। धीरे-धीरे गांव के सभी लोगों को यह बात पता लग गई कि उनके गांव की सबसे होशियार और दयालु लड़की उदास रहती है। उन्होंने उसकी सहेली को छुड़ाने का निश्चय कर लिया।

लोहे की तीन नलियां ले, उनमें बारूद भरा। छल्लों से उनका मुंह बंद कर दिया। फिर उन्हें तालाब के किनारे पर रख, एक-एक करके आग लगा दी। पटाखे इतनी जोर से फटे कि उनकी आवाज से ड्रेगनों के राजा का महल भी हिल गया। उसने सोचा कि जब तक वह राजकुमारी को न छोड़ेगा, तब तक गांव वाले इसी तरह से परेशानी पैदा करते रहेंगे। यह विचार आते ही उसने स्वयं राजकुमारी के कमरे का दरवाजा खोलते हुए कहा—"मेरी प्यारी बिटिया, मुझे बहुत दुःख है कि मैंने तुम्हें इतनी कड़ी सजा दी। आज से तुम बिल्कुल आजाद हो। कहीं भी घूम-फिर सकती हो। किसी को भी अपना मित्र बना सकती हो।"

राजकुमारी का चेहरा खुशी से खिल उठा। वह अपनी सहेली से मिलने तालाब के किनारे आई। वहां खड़े लोगों ने तालियां बजाकर उसका स्वागत किया। इस खुशी में एक-दूसरे को चावलों से बने व्यंजन खिलाए। गीत गाए। ढोलक बजाई। नाचे और घरों में खूब रोशनी की।

चीन की तुंग जाति के लोग आज तक यह उत्सव मनाते हैं। वे इसे पटाखों का त्योहार कहते हैं।

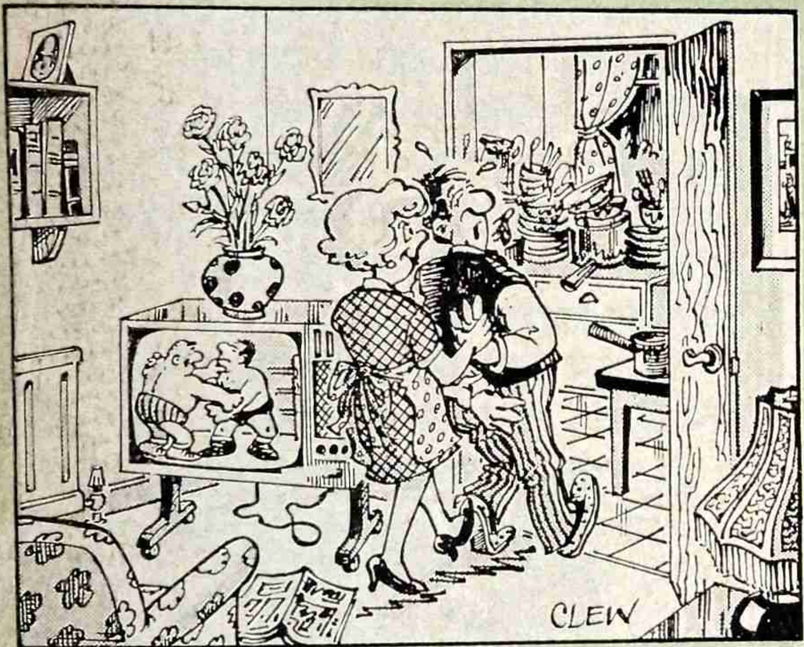




आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया । उसने कुछ गलतियां कर दीं । आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है । १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला :**बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित **समय : १५ मिनट ।**



चित्र पहेली : १२०

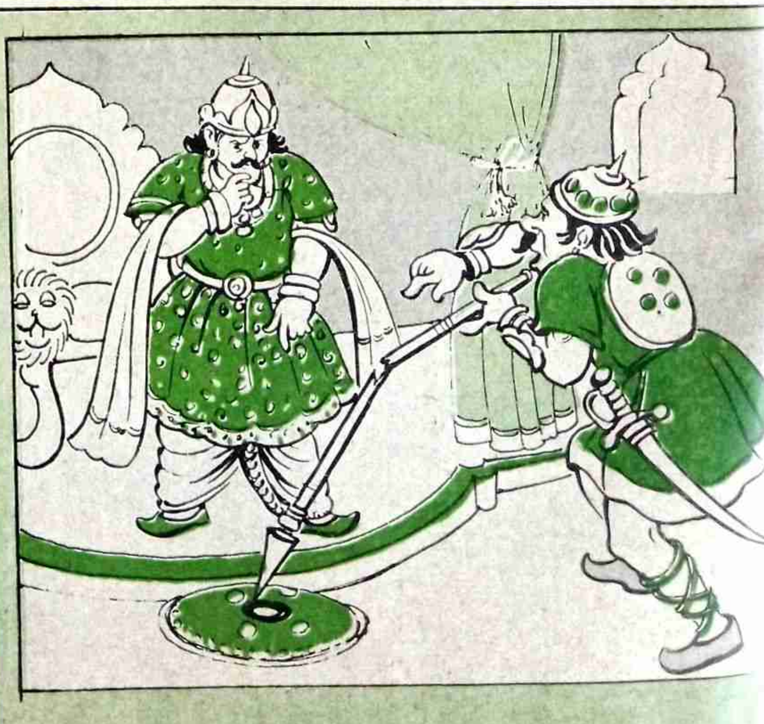
कभी-कभी ऐसी बात होती है, जब खूब हंसी आती है । तो इस बार का विषय है— **जब हम खूब हंसे ।** चित्र चटख रंगों से बनाइए । चित्र के पीछे अपना **नाम, आयु** और **पता** साफ-साफ लिखिए । १५ नवम्बर '९३ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए । चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा । पुरस्कार भी मिलेगा ।

परिणाम : फरवरी '९४ अंक

कहानी लिखो : १२०

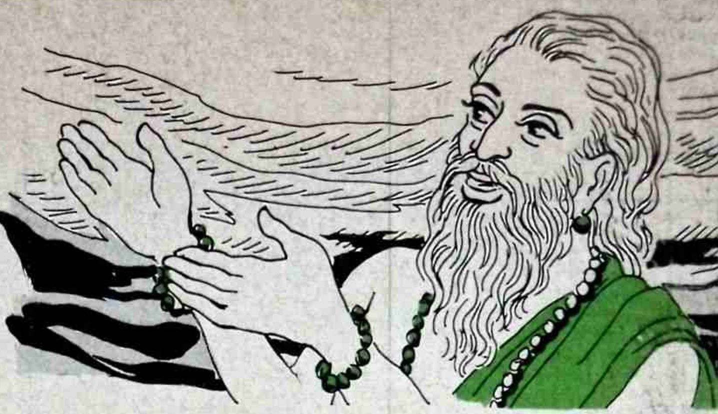
सामने बने चित्र के आधार पर कहानी लिखिए । उसे १५ नवम्बर तक **कहानी लिखो—१२०, नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए । चुनी हुई कहानी प्रकाशित की जाएगी । पुरस्कार भी मिलेगा ।

परिणाम : जनवरी '९४ अंक



नहीं चाहिए सोना

— विजय अग्रवाल



भरी दुपहरी थी। आसमान में बादल छाए हुए थे। मन करता कि पानी बरसे, तो गर्मी से कुछ राहत मिले।

लोगों ने देखा कि इतनी गर्मी में भी एक साधु अलमस्त होकर पूर्व दिशा की ओर चलता जा रहा है। उसके शरीर पर एक झीनी-सी चादर पड़ी हुई है। कंधे पर गेरुए रंग की एक झोली लटक रही है।

अचानक साधु ठिठककर रुक गया। लगा—मानो किसी विशाल अजगर ने उनके दोनों पैरों को जकड़ लिया हो। साधु का सारा शरीर धीरे-धीरे रोमांचित होने लगा। उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी।

कहीं दूर से भजन गाने की मीठी आवाज आ रही थी। साधु उसे ही ध्यान से सुनने लगा।

"लगता है कि यह तो रैदास की आवाज है।"— एक बुजुर्ग आवाज को पहचानने की कोशिश करते हुए बोले।

"इस भरी दुपहरी में भला और किसको गाना सूझेगा?"— दूसरे आदमी ने थोड़े व्यंग्य में कहा।

"यह तो नहीं कि ज्यादा-से-ज्यादा जूते बनाए और धन कमाए। इसके बजाए भजन गाने में लगा रहता है। यही हाल रहा, तो एक दिन भूखों मरेगा और पागल भी हो जाएगा।"— एक नौजवान थोड़े गुस्से में बोला।

"मैंने खुद उनसे जूते बनवाए। उन्होंने कुछ मांगा ही नहीं। जो दे दिया, वही ले लिया... बस। ऐसे भी कहीं काम चलता है। अब तो कुछ लोग साधु का झूठा वेश बनाकर, रैदास के पास चले जाते हैं। मुफ्त में जूते ले आते हैं।" — बुजुर्ग थोड़े से चिंतित होते हुए बोले।

"इसीलिए तो तंग आकर उसके पिता रघु ने घर से निकाल दिया। ठीक ही किया रघु ने।"— नवयुवक बोला।

गांव वालों की बातचीत से साधु को यह अंदाजा हो गया कि यह भजन रैदास गा रहा है, जो जूते बनाने का काम करता है।

साधु अचानक मुड़ा। तेज कदमों से उस दिशा की ओर चल दिया, जिधर से भजन की आवाज आ रही थी। गांव वालों ने उसे भी एक सनकी आदमी समझा।

साधु उस झोंपड़ी के सामने जाकर रुक गया और एक टक जूते बना रहे उस आदमी को निहारने लगा। रैदास जी थे कि अपने काम और भजन में खोए हुए थे। उन्हें इस बात की जानकारी ही नहीं थी कि कोई ग्राहक उनकी दुकान पर आया है। जब साधु काफी देर तक खड़ा रहा और उससे नहीं रहा गया, तब उसने जोर से आवाज लगाई—"सुनिए, सुनिए... सुनिए।"

आवाज सुनकर रैदास ने देखा कि उनके सामने एक साधु खड़े हैं। उनका मन यह सोचकर आत्मग्लानि से भर उठा कि साधु महाराज न जाने कितनी देर से इसी प्रकार खड़े होंगे।

"महाराज प्रणाम! क्षमा करेंगे। मैंने आपको देखा नहीं।"— रैदास ने अपराध बोध से ग्रस्त होते हुए साधु से कहा।

"क्या तुम ही 'प्रभु जी तुम चंदन हम पानी' वाला भजन गा रहे थे?"— साधु ने उत्सुकता से पूछा।

"जी महाराज, मैं ही गा रहा था। नहीं महाराज, गा नहीं रहा था। गुनगुना रहा था। मुझे तो गाना आता ही नहीं। गाते तो कबीर साहब हैं।"— रैदास ने सकुचाते हुए उत्तर दिया।

साधु को उसकी विनम्रता बहुत अच्छी लगी। उसे रैदास की आंखें ऐसी स्वच्छ और शीतल दिखाई दीं मानो गंगा का पानी संगमरमर की चट्टानों के बीच ठहरा हुआ हो। उनके चेहरे पर बाल सुलभ निश्छलता साफ-साफ झलक रही थी।

इतने में ही रैदास की पत्नी आसननुमा चटाई ले आई। उस पर बैठने के बाद साधु ने कहा— ''रैदास ! तुम तो भक्त मालूम पड़ते हो। फिर चमड़े का यह काम छोड़ क्यों नहीं देते ?''

साधु की बात सुनकर पत्नी निराश हो गई। सोचने लगी— 'यह निरा साधु है, ग्राहक नहीं।' वह अंदर जाकर अपने काम में लग गई।

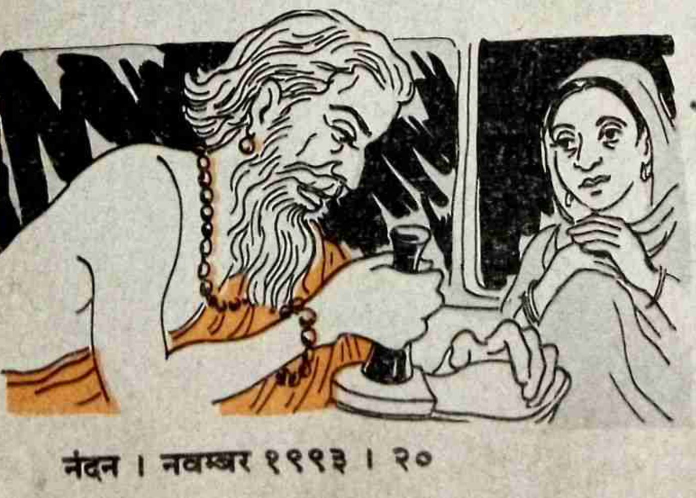
''महाराज, छोड़ कैसे दूं ? भक्ति से मेरी आत्मा की भूख मिटती है और जूते बनाने से मेरे पेट की भूख। इसलिए मेरे लिए तो दोनों ही जरूरी हैं।''— रैदास ने बिना सोचे-समझे तुरंत उत्तर दिया।

—''लेकिन क्या तुम यह नहीं समझते रैदास कि इससे तुम्हारी भक्ति में बाधा आती है।''

—''नहीं महाराज, मुझे तो ऐसा बिल्कुल भी नहीं लगता। मैं गले से भजन गाता हूं। हृदय में ठाकुरजी की मूर्ति को रखता हूं, और हाथ से जूते बनाता हूं। मुझे तो कोई भी अड़चन नहीं होती।''

साधु रैदास के इस उत्तर से प्रभावित हुआ।साधु ने पूछा— ''लेकिन यह खट-खट-खट की आवाज...''

''महाराज, मैं इसे अपने भजन का खड़ताल समझ लेता हूं। मुझे तो पता ही नहीं चलता कि बगल से कोई ऐसी आवाज भी आ रही है।''— रैदास ने कहा।



''अच्छा रैदास, एक बात बताओ। तुम जूते बनाने का काम अपना पेट पालने के लिए करते हो न !''— साधु ने पूछा।

''हां महाराज।''— रैदास ने छोटा-सा उत्तर दिया।

''मैं तुम्हें एक ऐसी चीज देता हूं, जिसे तुम यदि पत्थर से छुआ दोगे, तो वह सोना बन जाएगा। इस प्रकार तुम जितना धन चाहोगे, उतना तुम्हें मिल जाएगा।''— साधु ने कहा।

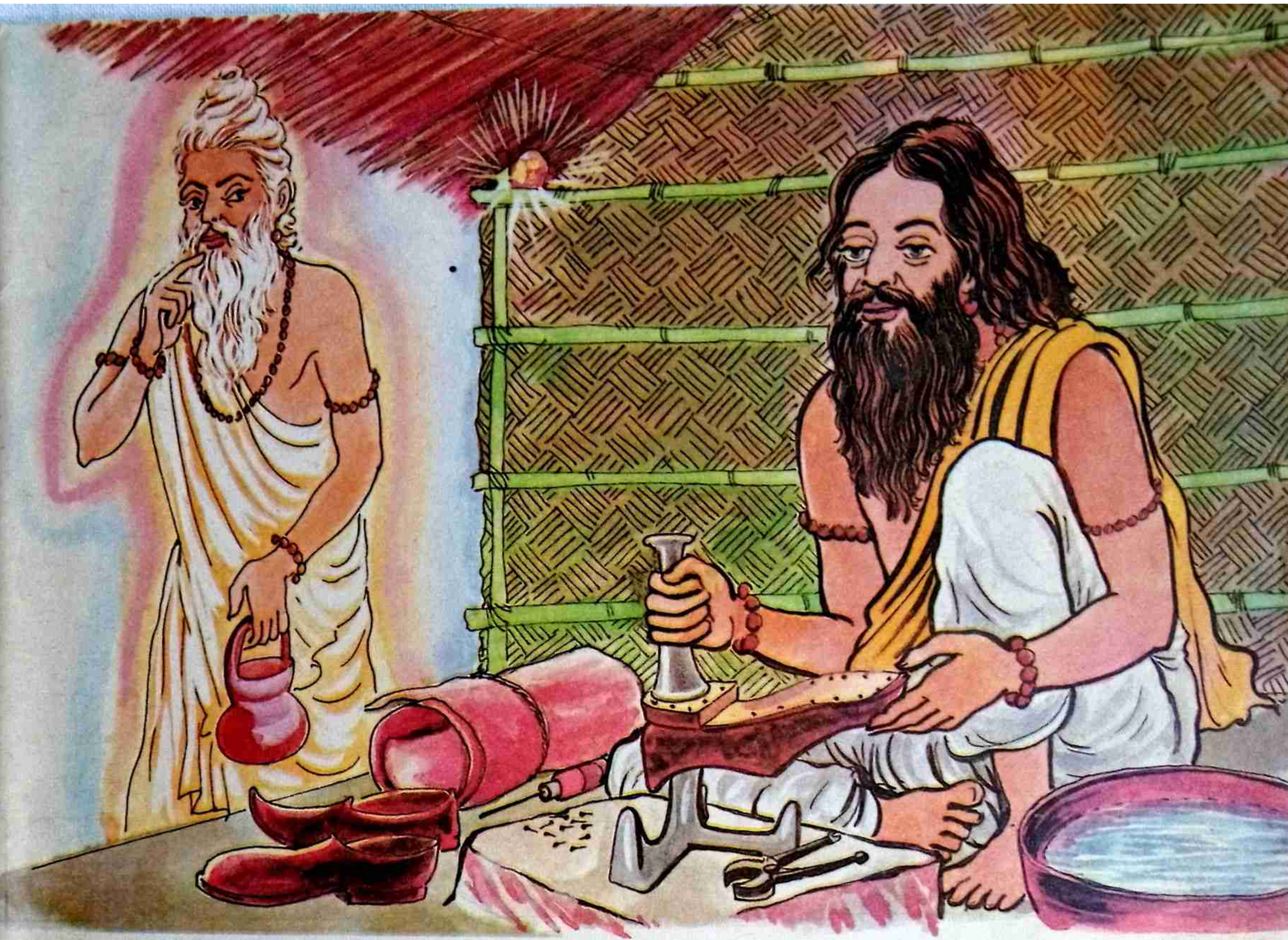
''लेकिन मैं तो धन चाहता ही नहीं महाराज।''— रैदास ने कहा।

''नहीं रैदास, मैं चाहता हूं कि तुम रोजी-रोटी के जंजाल से मुक्त होकर पूरी तरह प्रभु भक्ति में लगो।''— साधु ने कहा और बिना किसी उत्तर की प्रतीक्षा किए ही अपनी झोली से एक चमकता हुआ पत्थर निकाला। साधु ने रैदास के हाथ से लोहे का हथौड़ा ले लिया। उस पर पारस पत्थर को रख दिया। रैदास ने देखा कि देखते ही देखते लोहे का वह टुकड़ा पीले रंग का हो गया।

साधु इस दौरान रैदास को बड़े ध्यान से देख रहा था। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इस घटना से रैदास की आंखों में उदासी-सी छा गई। उसकी यह स्थिति देखकर साधु ने पूछा— ''रैदास, क्या इससे तुम्हें खुशी नहीं हुई ?''

''महाराज, इसमें खुशी की क्या बात है। बल्कि मुझे तो यह चिंता सताने लगी है कि मैं अब जूते किस हथौड़े से बनाऊंगा। यदि सोने के इस हथौड़े से बनाऊंगा, तो सोने का अपमान होगा। लोग भी हंसेंगे। फिर इसकी रखवाली करने की चिंता अलग। महाराज, इससे तो उलटे मेरी भक्ति में बाधा पड़ेगी।''— रैदास ने उदास आवाज में कहा।

लेकिन साधु भी मानने वाला नहीं था। उसे लगा कि पारस पत्थर पाने का सही अधिकारी रैदास ही है, क्योंकि वह उसका कभी भी दुरुपयोग नहीं करेगा। चमत्कारिक शक्ति उसी के पास होनी चाहिए, जो उसका गलत तरीके से इस्तेमाल न करे।



—"रैदास, मैं चाहता हूं कि यह पारस पत्थर तुम अपने पास रख लो। जब भी तुम्हें धन की जरूरत हो, तब तुम इसका प्रयोग कर लेना।"

रैदास समझ गया कि साधु महाराज बड़े हठी मालूम पड़ते हैं। फिर साधु के आदेश का उल्लंघन करके उनका जी दुखाने की बात भी मन में आई। इसलिए उन्होंने साधु की बात मान लेने का निश्चय करके कहा— "महाराज! आप ऐसा करें, यह पत्थर मेरे घर के छप्पर में खोंस दें।"

साधु ने खड़े होकर पत्थर वहीं खोंस दिया।

दिन पर दिन बीतते गए। जब करीब साल भर हो गया, तो साधु ने सोचा कि चलकर रैदास के हाल देखने चाहिएं। वह रैदास के पास पहुंचा। उसने देखा कि रैदास पहले की तरह ही जूते बनाने में मगन है और भजन गा रहा है।

साधु स्वयं भजन सुनने में खो गया। उसने धीरे-से आंखें खोलकर झोंपड़ी के कोने के छप्पर की ओर ताका। उसने देखा कि वह पारस पत्थर वहां ज्यों-का-त्यों रखा हुआ है। उस पर धूल जम गई है। साधु रैदास की ईमानदारी से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। रैदास के प्रति उसकी ममता जाग उठी। अचानक वह साधु प्रकाश के एक गोले में बदलने लगा। रैदास को लगा कि मानों चारों ओर स्वर्ण की-सी आभा बिखर गई है। उसकी आंखें इस स्वर्णिम प्रकाश से चौंधियाने लगीं। धीरे-धीरे वह प्रकाश शीतल कुहासे में बदलने लगा। अब इसमें ममता की मूर्ति दिखाई दी और अचानक गायब हो गई।

रैदास का मन इस घटना के अलौकिक आनंद से भर उठा। उसे लगा कि आज उसका जीवन सफल हो गया। उसे उस आनंदमयी मूर्ति के दर्शन हो गए हैं, जिसकी वह अभी तक प्रतीक्षा कर रहा था। रैदास फिर से गा उठा। □



श्रीलक्ष्मी



श्रीगणेश

बाल भवन

बच्चों की अलबेली दुनिया



इलेक्ट्रानिकी की ओर



गीत-संगीत

↓ चित्रकला भी : मूर्तिकला भी





बेकार चीजों से बना घोड़ा

दस्तकारी में मगन



मेंहदी रचाई

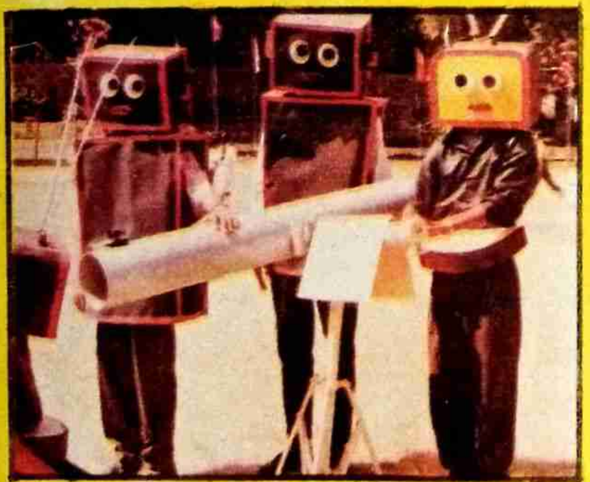




बच्चों की रेलगाड़ी में सैर



नृत्य की तैयारी



बच्चों ने बनाए रोबोट



फूलों की पंखुड़ियों के रंग भरे हैं इस चित्र में



नन्हे वैज्ञानिक

बंधेजी रंगाई : कार्यशाला



विशेष लेख पृष्ठ ६९ पर

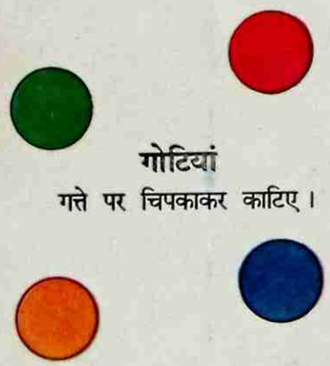
लाल बाग

चार रंग की ४ गोटियां—लाल, हरी, नीली, पीली। ९ रंग के १२० खाने—लाल, हरा, नीला, पीला, नारंगी, गुलाबी, बैंगनी, कत्थई और स्लेटी। ८ खाने बहुरंगी।

गोटी-घर से हर गोटी पासा फेंकने पर एक आए, तो निकलेगी। एक आने पर पासा फेंकने का एक अवसर और मिलेगा। पासे में आए अंकों के अनुसार आगे बढ़ती हर गोटी लालबाग तक जाएगी, मगर निम्न शर्तों के अनुसार—

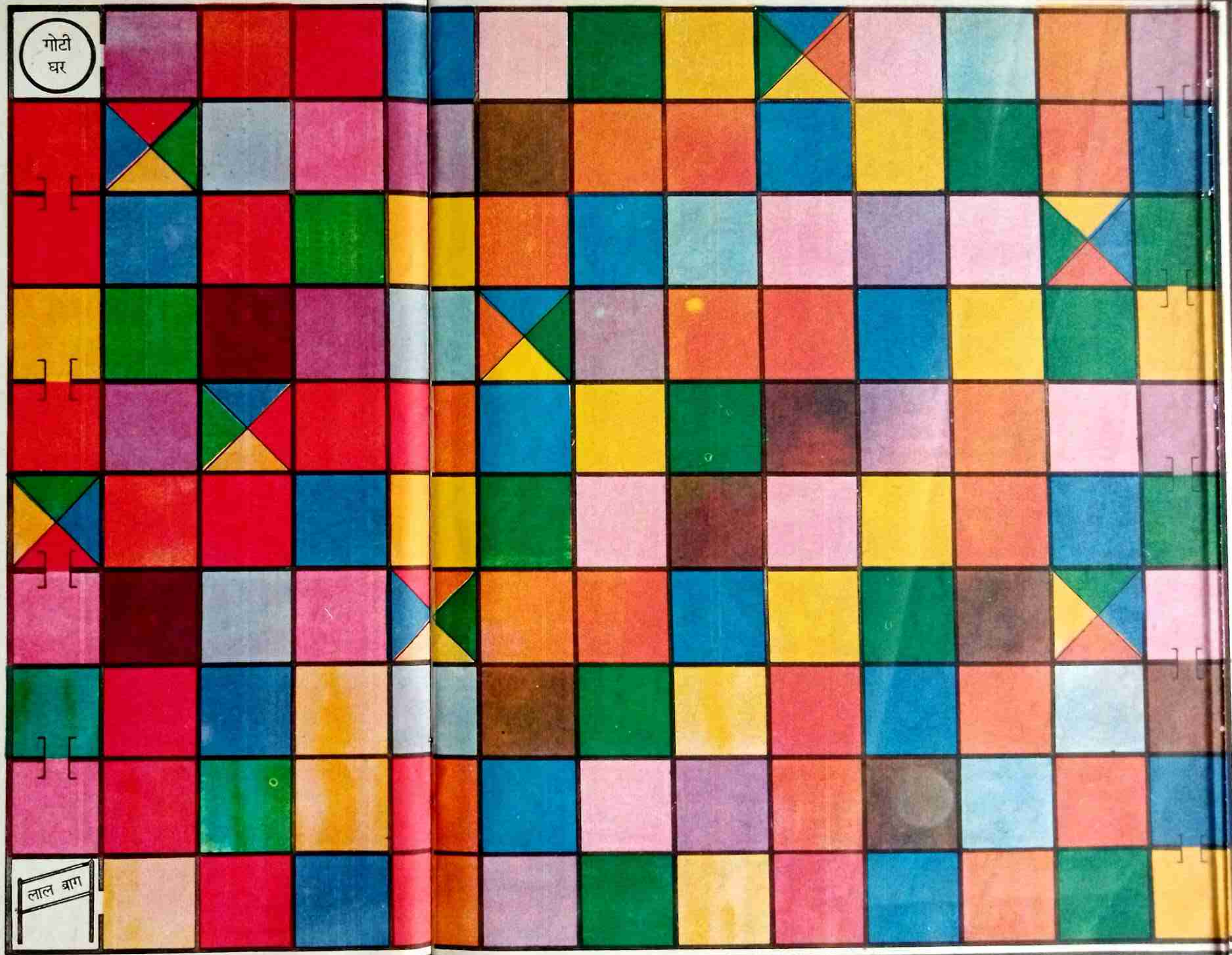
अ. अपने रंग के खाने में आ जाने पर गोटी केवल एक आने पर ही आगे बढ़ सकेगी।

ब. बहुरंगी खाने में आ जाने पर गोटी फिर से वापस गोटी-घर में चली जाएगी। याने चाल दोबारा से शुरू करनी होगी। जो गोटी सबसे पहले लाल बाग पहुंचेगी, प्रथम मानी जाएगी।



गोटियां

गत्ते पर चिपकाकर काटिए।



देश-देश के फूल



स्टाम्प बाजार, नई दिल्ली

कौन आया

—वैजयंती सावंत टोणपे

"**मां,** दीवाली के अवसर पर मैं अपने कुछ मित्रों को खाने पर बुलाना चाहती हूं। बुला लूं?" —मीना ने पूछा।

"हां, हां, क्यों नहीं, कितनी लड़कियां होंगी?" —मीना की मां सुनीता ने पूछा। वह गुझिया में मावा भर रही थीं। "कब बुलाना चाहोगी, धनतेरस की शाम को या छोटी दीवाली के दिन? लक्ष्मी पूजन के दिन तो तुम्हारी सहेलियां आएंगी नहीं। ऐसा करते हैं, छोटी दीवाली के दिन उन्हें चाय पर बुला लेते हैं।"

"ओह मां! अपनी ही कहे जाओगी या मेरी भी कुछ सुनोगी।" —मीना ने मुसकराते हुए कहा —"यह शाम की चाय पार्टी की बात नहीं है, दोपहर के भोजन का कार्यक्रम है। यही कोई दस-पंद्रह लड़के-लड़कियां। दाल-चावल, आलू की सब्जी और खीर-पूरी बना लेना।"

"ठीक है। पर ये दस-पंद्रह लड़के-लड़कियां हैं कौन? सरिता तो आएगी न?" —मां ने पूछा।

-"नहीं, सरिता नहीं आएगी। उसके घर भी कुछ दोस्त होंगे! अब तुम जल्दी से दिन तय करो।"

—"कहा न, छोटी दीवाली के दिन रख लो। खाना जो तुम कह रही हो, वही बन जाएगा। पर तेरे ये दोस्त हैं कौन? कुछ बता भी तो सही।"



"प्यारी मां, सब कुछ अभी जान लेना चाहती हो! क्या मुझ पर विश्वास नहीं है? मैं तो बस इतना कह सकती हूं कि उनसे मिलकर आप खुश हो जाओगी।" —मीना ने मां के गले में बांहें डालते हुए कहा। "तो मां, फिर यह प्रोग्राम पक्का रहा। मैं अपने दोस्तों से कह दूं न?"

—"हां, अब मुझे अपना काम करने दे।"

उस दिन मीना ड्राइंग रूम में जाकर खड़ी हो गई। सब कुछ कितना सुंदर दिख रहा था। वहां रखी मूर्तियां प्रकाश में चमक रही थीं।

"नहीं चलेगा।" —मीना ने जैसे अपने आप से कहा। फिर सोफों को खिसकाकर दीवार से सटा दिया। इसी तरह कुर्सियां भी खिसका दीं। पौधे, छोटी मेजें और बाकी सब चीजें बरामदे में तथा दूसरे कमरे में पहुंच गईं। खाली ड्राइंग रूम के फर्श पर बस, एक गलीचा नजर आ रहा था। फिर अपने कमरे में जाकर कैसेट प्लेयर और कुछ चुने हुए कैसेट उठा लाई। ड्राइंग रूम में खड़ी कुछ सोच ही रही थी कि मां की हड़बड़ाई आवाज कानों में आई —"मीना, यह क्या!" और उसके हाथों से कैसेट तथा प्लेयर नीचे गिर पड़े।

"मीना, यह क्या मजाक है? कितनी मेहनत से मैंने ड्राइंग रूम सजाया था, लेकिन तुमने यह क्या उलट-पलट दिया। दिमाग तो ठीक है न? बच्चों के आने का समय हो गया है। अब मेरी मदद करो। फटाफट ठीक कर देते हैं फिर से।" —मां ने कहा।

"ओफोह मां! क्यों परेशान हो रही हो? जानती हूं, तुमने बड़ी मेहनत से ड्राइंग रूम सजाया था। लेकिन मेरे मेहमानों के लिए यह ऐसे ही ठीक है।" मीना ने जमीन पर बिखरे कैसेट उठाते हुए कहा।

"मीना।" —मां की आवाज में धमकी झलक रही थी। "अब समझी कि यह सब सामान यहां से क्यों हटाया गया है। तुम लोगों का ब्रेक डांस, डिस्को और धूमधड़ाका यहां नहीं चलेगा। देखो, आज त्योहार का दिन है। मैंने तुम्हारी हर बात मान ली, लेकिन बाद में यह मत कहना कि मैंने पार्टी गड़बड़



कर दी ।''

''मां, अपनी ही कहे जाओगी या मेरी भी सुनोगी ।'' —मीना ने बीच में टोकते हुए कहा- ''विश्वास भी कुछ होता है न !''

''तुम्हारा मतलब है, मुझे तुम पर विश्वास नहीं है ! अरे, तू बारह साल की छोकरी, मुझसे यह कह रही है ? आने दे उन्हें शाम को । इतनी मेहनत से घर सजाया । सुबह से रसोई में लगी हूं । पंद्रह लोगों का भोजन क्या यूं ही बन जाता है ? और जब पूछो, तो जवाब मिलता है —मेरे दोस्त हैं । नाम जानकर क्या करोगी ?'' —मीना की मां बहुत गुस्से में थीं ।

मीना चुप खड़ी सुन रही थी ।

मां का गुस्सा ठंडा नहीं हुआ था —''तुम्हारी सबसे प्यारी सहेली सरिता नहीं आ रही है । तब कौन आ रहा है भला ?''

''मां !'' —मीना ने शांत और प्यार भरे स्वर में कहा —''मेरा मतलब यह नहीं था कि तुम नाराज हो जाओ । मैं तुम्हें पूरा विश्वास दिलाती हूं । यहां न ब्रेक डांस होगा और न डिस्को !''

''हूं ! जैसी तुम्हारी इच्छा ।'' —मां ने कहा —''मेरी समझ में नहीं आता, आजकल के बच्चों को अंदर छिपकर बैठना क्यों अच्छा लगता है । अरे, जब हम बच्चे थे, तो टोलियों में घूमते थे । दिन में किले बनाते थे, गुड्डे-गुड़ियां सजाते थे । और शाम को अंधेरा होते ही हमारी फुलझड़ियां दीपों की रोशनी को जैसे चार चांद लगा देती थीं । खैर भई, यह तुम्हारा जमाना है । कब आ रहे हैं तुम्हारे दोस्त ?''

—''आएंगे नहीं मां ! अभी पापा गाड़ी भेजेंगे, तो मैं उन्हें लेने जाऊंगी ।''

''क्या ! तो तुम्हारे पापा भी इसमें शामिल हैं !'' —मीना की मां ने आश्चर्य भरे स्वर में कहा ।

तभी बाहर गाड़ी का हार्न बज उठा । मीना ने मां के गले में बांहें डाल दीं और बोली —''मां, गाड़ी आ गई है । मैं अभी उन सबको लेकर लौटती हूं । आते ही पहले खाना खाएंगे, फिर कुछ गीत सुनेंगे । तुम पूरियां बनाना शुरू कर दो ।''

आधा घंटे बाद गाड़ी का हार्न दोबारा बजा, पर मीना की मां को बच्चों का शोरगुल नहीं सुनाई दिया । उन्हें कुछ आश्चर्य हुआ । तभी मीना दौड़ी-दौड़ी रसोई के अंदर आई । मां का हाथ खींचती हुई बोली —''मां, चलो न, मेरे दोस्त आ गए हैं । उनसे मिलो ।''

मीना की मां खामोश ड्राइंग रूम में पहुंचीं, तो दंग रह गईं । पंद्रह बच्चे चुपचाप सोफों पर बैठे हुए थे । किसी के हाथ में मोमबत्ती थी तो किसी के हाथ में कागज की कंदील ।

''मेरी मां !'' —मीना के यह कहते ही बच्चों के मुंह आवाज की दिशा में घूम गए । मीना की मां की आंखें भर आईं । तो ये थे मीना के स्पेशल दोस्त ! वे देख नहीं सकते थे ।

''नमस्ते आंटी !'' बच्चों ने एक साथ कहा और एक-एक करके उनकी तरफ बढ़ने लगे । मीना की मां ने उन्हें बीच में ही थाम लिया । बच्चों ने 'दीवाली की शुभकामनाएं' कहकर उन्हें मोमबत्तियां और कंदील थमा दिए ।

''कितने सुंदर हैं ये सब ! बच्चो, क्या इन्हें तुमने बनाया है ?'' —मीना की मां ने आश्चर्य भरे स्वर में पूछा ।

''हां, आंटी !'' —उनमें से एक दिनेश नाम का लड़का बोला —''हमें दिखाई तो नहीं देता, फिर भी हम हर दीवाली पर मोमबत्तियां और कंदील बनाकर दूसरों को भेंट देते हैं । औरों की दीवाली में प्रकाश भरकर हमें खुशी मिलती है ।''

''आंटी... आंटी... आप कितनी अच्छी हैं ।''

—एक छोटी लड़की ने उनकी साड़ी खींचते हुए कहा। —"मीना दीदी कह रही थीं कि आपने हमारे सर से कहकर हमें बुलवाया है। आपने उनसे कहा था कि अगर बच्चे दीवाली पर नहीं आएंगे, तो आप दीवाली नहीं मनाएंगी।"

"मैंने !" —मीना की मां ने प्रश्न किया और मीना की ओर देखा। वह सिर हिलाकर हां कहने का संकेत कर रही थी। मीना की मां समझ गईं। उन्होंने कहा —"आओ बच्चो, खाना ठंडा हो रहा है। पहले कुछ खा-पी लें, फिर बैठकर..."

"हां, हां, आंटी जी, हम पूरी तैयारी करके आए हैं।" —मीना जितनी उम्र की तनु ने कहा। —"आप न सिर्फ हमारे भजन सुनेंगी, उन्हें टेप भी करेंगी।"

—"हां, जरूर-जरूर..."—मीना की मां ने प्रसन्न स्वर में कहा —"हां, हम सारे भजन टेप करेंगे। आओ, अब खाना खाते हैं।"

शाम हो गई थी। सबके आंगन में दीपक टिमटिमा रहे थे। तभी मीना दौड़ी-दौड़ी अंदर आई —"सरिता और उसके मम्मी-पापा आए हैं।"

"हैप्पी दीवाली सुनीता।" —सरिता की मां कुसुम ने बधाई दी।

"अरे कुसुम ! इस बार तो मीना और सरिता ने दीवाली पर हमें बहुत बड़ा उपहार दिया है।" —कहकर मीना की मां ने कुसुम को गले से लगा लिया।

"पर यह बात इन्हें सूझी कैसे ?" —सरिता के पापा बोले।

—"यह मीना के पापा बता सकते हैं। उन्होंने ही इन बच्चों को लाने के लिए कार भेजी थी।"

"वह तो मीना ने कहा था इसलिए भेज दी। मुझे इसके प्लान का कुछ पता नहीं था।" —मीना के पापा ने कहा।

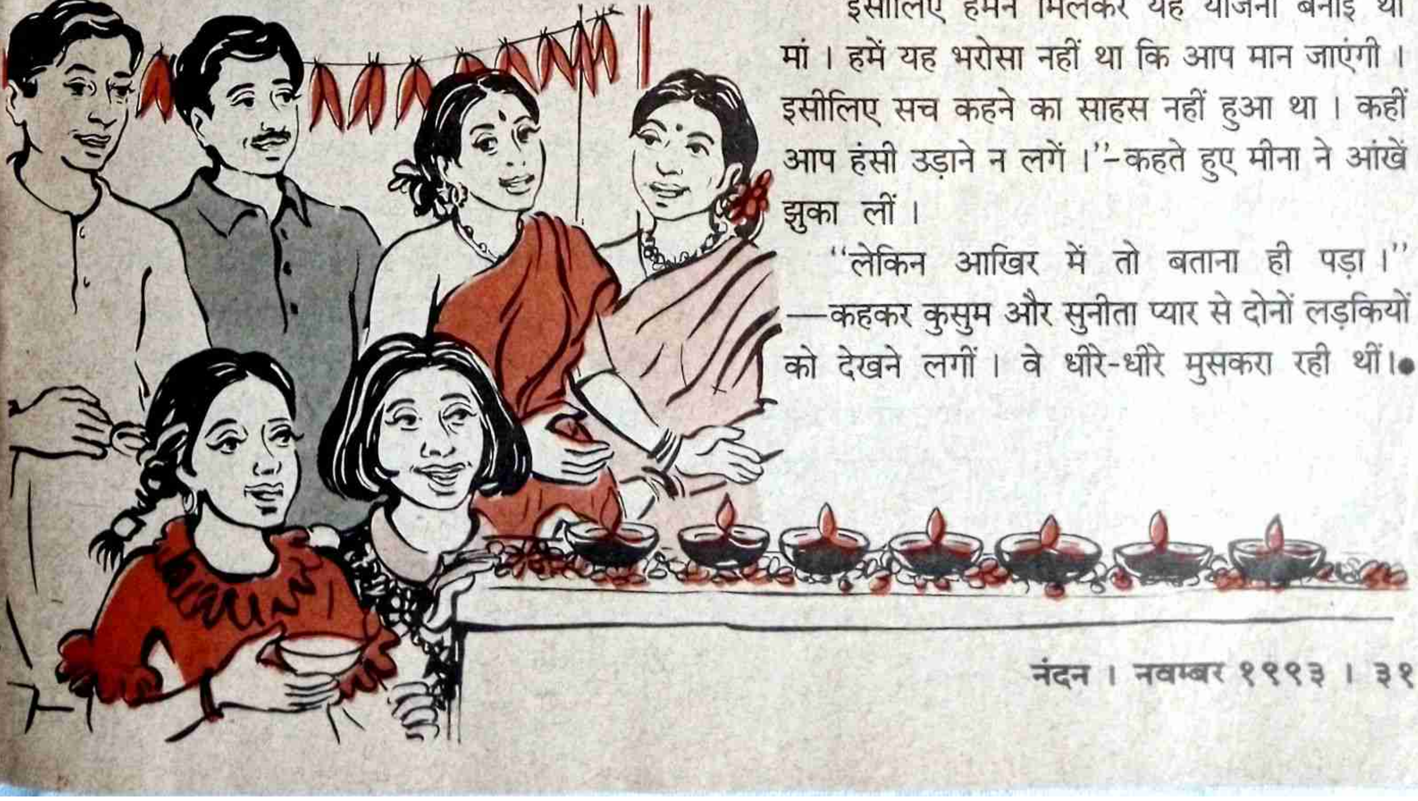
"हम दोनों ने मिलकर प्लान बनाया था अंकल !" —सरिता हंसकर बोली। जब हम छोटे थे, तो हर शुक्रवार को मां और सुनीता आंटी हमें ब्लाइंड स्कूल में ले जाया करती थीं। हम इन बच्चों से खूब घुल-मिल गए थे। ये दोनों ब्लाइंड स्कूल में सोशल वर्क करती थीं। मैं और मीना आंखों पर पट्टी बांधकर यह कल्पना करते थे कि इनकी अंधेरी दुनिया कैसी होगी ?"

"हां, एक बार मैंने सरिता से पूछा था कि भला इनकी होली-दीवाली कैसी होती होगी ?"—मीना बोली।

सरिता ने कहा —"यही बात मैंने तनु से पूछी, तो उसने कहा था — 'अंधेरी होती है।'

"इसीलिए हमने मिलकर यह योजना बनाई थी मां। हमें यह भरोसा नहीं था कि आप मान जाएंगी। इसीलिए सच कहने का साहस नहीं हुआ था। कहीं आप हंसी उड़ाने न लगें।"—कहते हुए मीना ने आंखें झुका लीं।

"लेकिन आखिर में तो बताना ही पड़ा।" —कहकर कुसुम और सुनीता प्यार से दोनों लड़कियों को देखने लगीं। वे धीरे-धीरे मुसकरा रही थीं।●



भगवान का सच



अटलबिहारी वाजपेयी

एक राजा था। वह प्रजा की अच्छी देखभाल करता था। उसका मंत्री बड़ा चतुर था। जब राज्य में कोई आपदा आ जाती, मंत्री यह कहकर राजा को संतोष दिलाता कि परमात्मा जो करता है, अच्छा करता है।

एक दिन दरबार में हथियारों का सौदागर आया। उसने राजा को तलवार दिखाई। राजा ने तलवार को म्यान से निकाला। उसकी धार को परखने के लिए उसने अपनी अंगुली लगाई। तलवार की धार तेज थी, उसकी अंगुली कट गई। खून बहने लगा। राजा ने मंत्री को देखा। मंत्री ने कहा— ''महाराज, भगवान जो करता है, अच्छा करता है।'' यह सुन, राजा नाराज हो गया। उसने मंत्री को जेल में डलवा दिया।

थोड़े दिन बाद राजा शिकार के लिए निकला, साथ में सिपाही भी थे। शिकार की तलाश में वह घने जंगल में चला गया और रास्ता भूल गया। उसके साथी बिछुड़ गए। वह अकेला रह गया। उसे बड़ी प्यास लगी। वह पानी की तलाश करने लगा। इतने में उसे दूर से आती हुई घंटियों की आवाज सुनाई पड़ी।

राजा ने घोड़ा उधर दौड़ा दिया। उसने देखा, वहां एक भव्य मंदिर है। किसी समारोह की तैयारियां हो रही हैं। राजा को देखकर मंदिर के पुजारी तथा और लोग बाहर निकल आए। उन्होंने राजा का स्वागत किया, पीने के लिए पानी दिया। पुजारी बोला— ''आप अच्छे वक्त पर आए हैं। यह देवी का मंदिर है। आज हमें देवी को प्रसन्न करने के लिए किसी स्वस्थ पुरुष की बलि देनी है।''

भक्तों ने राजा से स्नान के लिए कहा। राजा ने कपड़े उतारे। जब उसे स्नान के लिए ले जाया जाने लगा, तो पुजारी ने देखा कि राजा की एक अंगुली कटी हुई है। पुजारी ने लोगों से कहा— ''राजा का अंग भंग हो चुका है, देवी ऐसा बलिदान स्वीकार नहीं करेगी।'' उन्होंने राजा को सही-सलामत वापस भेज दिया।

राजा राजधानी लौटा। उसने जेल से मंत्री को बुलवाया। उससे कहा— ''तुम ठीक कहते थे। भगवान जो करता है, अच्छा करता है। मंत्री मुसकरा कर रह गया। फिर राजा ने मंत्री से कहा— ''यह बताओ कि मैंने तुम्हें जेल में डाला, इसमें क्या अच्छा हुआ ?''

मंत्री ने उत्तर दिया— ''महाराज, अगर आप मुझे जेल में न डालते, तो मैं भी आपके साथ शिकार पर जाता। आप तो बलि से बच गए, क्योंकि आपकी अंगुली कटी थी। मेरा शरीर तो कहीं से भी कटा हुआ नहीं है। पुजारी मेरी ही बलि चढ़ा देते। इसलिए मुझे जेल में डालना अच्छा हुआ। भगवान जो करता है अच्छा ही करता है।''

अटलबिहारी वाजपेयी

सिर न झुका



वसंत साठे

शिवाजी बचपन से ही होनहार थे। उनकी मां जीजाबाई ममतामयी, समझदार और स्वाभिमानी महिला थीं। मां जीजाबाई ने बचपन से ही शिवाजी को सिखाया—'बेटा, हमें किसी का गुलाम नहीं बनना है। किसी के आगे नहीं झुकना है।'

शिवाजी के बाल मन में यह बात गहरे बैठ गई।

शिवाजी के पिता शाहजी आदिलशाह के दरबार में

मुलाजिम थे। उस समय दरबार में राजा के सामने जाने का मतलब होता था कि आप झुककर सलाम करते हुए जाइए और उसी तरह सलाम करते हुए वापस आ जाइए।

जब शिवाजी सात साल के हुए, तो एक दिन शाहजी उन्हें अपने साथ दरबार में ले गए। शाहजी तो झुककर सलाम करते हुए अंदर गए, लेकिन शिवाजी उसी तरह सीधे चलकर अंदर गए। झुककर सलाम भी नहीं किया। आदिलशाह को बहुत बुरा लगा। उसने कहा—"शाहजी, आपने अपने बेटे को अच्छी शिक्षा नहीं दिलाई। इन्हें इतनी तमीज भी नहीं सिखाई कि दरबार में किस तरह हाजिर हुआ जाता है।"

शाहजी ने माफी मांगी और बेटे को लेकर घर आए। सारा गुस्सा पत्नी पर उतारते हुए बोले—"आज शिवाजी ने भरे दरबार में मेरी नाक कटवा दी।"

मां जीजाबाई बोलीं—"हुआ क्या ?

—"तुम्हारे लाड़ले को दरबार में हाजिर होने का तौर-तरीका ही नहीं आता। साहबजादे, सीधे अकड़कर खड़े रहे।"

जब शाहजी चले गए, तो मां जीजाबाई ने शिवाजी से कहा—"बेटे, तुमने ऐसा क्यों किया ? देखो, तुम्हारी वजह से आज तुम्हारे पिता जी कितने दुखी हुए। उनका कितना अपमान हुआ।"

शिवाजी बहुत ही शांत और विनम्र होकर बोले—"मां, तूने ही तो मुझे सिखाया कि ये पराए लोग, जो हम पर हुकूमत कर रहे हैं, हमें उनके खिलाफ आवाज उठानी है। लड़ना है। हमें किसी के सामने गर्दन नहीं झुकानी है। अब तू ही बता मां, मैं अपनी गर्दन वहां कैसे झुकाता ? मां, तू कह दे, तो तेरे कदमों में अपनी गर्दन काटकर रख दूं।"

मां जीजाबाई ने जब शिवाजी की बात सुनी, तो उनकी आंखें भर आईं। उन्होंने शिवाजी को अपने अंक में भर लिया।

वसंत साठे

उसे देना



अरुण गोविल

एक था व्यापारी। अपार धन था उसके पास। नौकर-चाकरों की भी कमी नहीं थी। व्यापारी का निजी सेवक था रामधन। सीधा-सादा और ईमानदार। वह व्यापारी के गांव का रहने वाला था। व्यापारी को उस पर विश्वास भी बहुत था। इसीलिए सब उसे सेठ का मुंहलगा कहते थे। रामधन अविवाहित था। सगा-संबंधी भी कोई नहीं था। व्यापारी उसे महीने में जो वेतन देता, उसमें से आधा वह गरीबों को दे देता था। व्यापारी उससे कहता—"रामधन, तू ठहरा गंवार का गंवार। अरे मूर्ख, कुछ जोड़कर अपने पास भी रख।"

रामधन हंसकर कह देता— "सेठ जी, अब आपकी सेवा में आधी उमर कट गई। आधी और कट जाएगी।"

मगर व्यापारी था परले सिरे का कंजूस। वह भोलेपन के लिए बात-बात में रामधन की हंसी उड़ाता रहता था।

एक दिन व्यापारी को रास्ते में एक टेढ़ा-मेढ़ा डंडा मिला। वह डंडे को उठा लाया। आकर रामधन से बोला— "रामधन, यह डंडा मैं तुझे देता हूं। अगर तुझे कोई अपने से बड़ा मूर्ख मिले, तो उसे यह डंडा दे देना।"कहकर व्यापारी हंसने लगा।

रामधान ने चुपचाप डंडा ले लिया। वह घर से बाहर जाता, तो डंडा साथ लेकर जाता। व्यापारी मजाक में उससे पूछता— "क्यों रामधन, क्या अभी तुम्हें अपने से बड़ा कोई मूर्ख नहीं मिला ?"

रामधन मुसकराकर कहता— "सेठ जी, अभी तो नहीं मिला, मगर मैं अपने से बड़े मूर्ख की तलाश में लगा हूं। कभी न कभी तो मिलेगा ही।"

एक बार व्यापारी बहुत बीमार पड़ा । हकीम-वैद्यों के इलाज से भी कुछ नहीं हुआ । व्यापारी को लगा— बस अंतिम समय आ गया । उसने रामधन को पास बुलाया । कहा— ''रामधन, अब मैं बचूंगा नहीं । मुझे यह संसार छोड़कर कुछ ही दिन में चल देना है ।''

रामधन ने भोलेपन से कहा— ''सेठ जी, मैं भी आपके साथ चलूंगा ।''

—''अरे मूरख, वहां कोई साथ नहीं जाता । अकेले ही जाना पड़ता है ।'' रामधन ने मासूम चेहरा बनाकर कहा— ''चलो, कोई बात नहीं । आप धन-संपत्ति, घोड़ा-गाड़ी तो साथ लेकर ही जाएं । इनकी जरूरत तो आपको वहां भी पड़ेगी ।'' व्यापारी ने फिर कहा— ''वहां तो खाली हाथ ही जाना पड़ता है । धन-दौलत, घोड़ा-गाड़ी, हवेली सभी कुछ यहीं रह जाएगा ।''

रामधन ने डंडा व्यापारी को देते हुए कहा— ''तब तो इस डंडे को आप ही रखिए । भला आपसे बड़ा मूर्ख कौन होगा, सारी उमर कमाते रहे । न दान किया, न पुण्य । जब कुछ साथ नहीं जाना है तो जोड़-जोड़कर रखने का क़्या लाभ ?'' व्यापारी ने शर्म से सिर झुका लिया ।

अरुण गोविल

उजाले में



उमा शर्मा

पम्पा के तट पर शंख नामक ब्राह्मण रहते थे—विद्वान और सदाचारी । एक बार यात्रा करते हुए वह निर्जन वन में चले जा रहे थे । तेज धूप से बचने के लिए शंख एक वृक्ष के नीचे जा बैठे । ईश्वर का नाम लेने लगे ।

उसी समय एक शिकारी वहां आया । उसके हाथ में धनुष था । वह पशु-पक्षियों का शिकार करने के इरादे से इधर-उधर देख रहा था । तभी उसकी दृष्टि शंख पर पड़ी । शंख को देखते ही उसके मन से शिकार का विचार दूर हो गया । शिकारी ने बढ़कर शंख के चरण छुए । बोला—''मैं हमेशा शिकार के बुरे कर्म में लगा रहता हूं । क्या इससे छुटकारे का कोई उपाय नहीं है ?''

शंख ने कहा—''अगर अंधेरे में पड़ा कोई व्यक्ति उजाले में आना चाहे, तो उसे कौन रोकेगा ? तुम आज से ही इस बुरे कर्म को छोड़ दो ।'' उन्होंने शिकारी से सरोवर में स्नान करने को कहा, फिर उसे सामने बैठाकर भगवान की महिमा का गुणगान करने लगे ।

थोड़ी देर बाद ही सामने खड़ा विशाल वट वृक्ष गिर पड़ा । उसमें से एक विकराल अजगर निकला । देखते-देखते वह एक दिव्य पुरुष के रूप में बदल गया । उसने हाथ जोड़कर कहा—''हे ब्राह्मण देवता, मैं अजगर के रूप में अपने पिछले बुरे कर्मों का फल भोग रहा था । आज आपके मुंह से भगवान की महिमा सुनी, तो सारे पाप कट गए । आपको धन्यवाद ।'' कहकर वह अदृश्य हो गया ।

शंख ने शिकारी को फिर उपदेश दिया । और अच्छे कर्म करने का उपदेश देकर वहां से चल दिए । शिकारी ने वन में रहकर पथिकों की सेवा करनी शुरू कर दी । अपना पूरा जीवन अच्छे कामों में लगा दिया ।

वही शिकारी अगले जन्म में मुनि वाल्मीकि बना और अमर राम-कथा की रचना की ।

उमा शर्मा

आया करो

—भीष्म साहनी

होटल के मुलाजिम ने जाते समय कहा भी था कि पिछले दरवाजे को बंद रखें। जब गुसलखाने में जाना हो तभी खोलें। बाद में फिर दरवाजा बंद कर दें। जहां तक मुझे याद पड़ता है, इस समय भी दरवाजा और कमरा दोनों ही बंद थे।

यह होटल भी अजीब था। जब पढ़ने को मन करता, तो बिजली गायब। जब मीठी नींद में हों, तो झट से कुमकुमा जलने लगता और नींद चौपट हो जाती। इस होटल के दस्तूर भी अपने ही ढंग के थे। बाहर से लौटो, तो सीढ़ियों के दरवाजे पर ताला लगा होता। चाय की तलब हो, तो दो मंजिलें उतरकर नीचे जाओ और किचन में जाकर कहो कि कमरे में चाय अभी तक नहीं पहुंची। यह सुन बैरा बोल उठता—"साहब ! चाय अभी पहुंचती है आपके पास।" थोड़ी देर बाद देखो कि एक बैरा, एक हाथ में एक खाली प्याला थामे और दूसरे हाथ में चायदानी की मूठ पकड़े सीढ़ियां चढ़ रहा है। टेलीफोन पर भी ताला चढ़ा रहता था। टेलीफोन करना हो, तो पहले मैनेजर को ढूंढ़ो। वह आए, ताला खोले, तब टेलीफोन करो। हर एक फोन के बाद वह एक रुपया झाड़ लेता। जब कभी उसे बाजार जाना होता, तो वह उस पर ताला लगाकर जाता।

एक रात मैं सहसा परेशान हो गया। मैं धीरे से उठा। दबे पांव अंधेरे में बिजली के बटन को दबाया, पर बिजली गायब थी। किसी तरह मैं पिछले दरवाजे की ओर, दोनों हाथ आगे की ओर बढ़ाए बढ़ता गया। दोनों हाथ दरवाजे से जा लगे, नीचे टटोल कर देखा, तो चिटखनी लगी थीं।

मैंने सोचा— जरूर मुझे वहम हुआ है। रात को इडली-डोसा खाओ, तो शायद ऐसे ही सपने आते होंगे कि कोई कमरे में घुस आया है।

यह सोचकर कि यह मेरा भ्रम ही रहा होगा, मैं फिर लेट गया। जब दोनों दरवाजे बंद हैं और मैनेजर इतना सतर्क है, तो कमरे में कौन घुस सकता था ?



अभी मेरी आंख लगी ही थी कि मुझे लगा, जैसे किसी ने हल्के से मेरे सिर के बालों को सहलाया और खींचा है।

मैं असमंजस में पड़ गया कि कहीं इस कमरे में परियां न उतरती हों। पर परी होती, तो वह नजर भी आती, अठखेलियां करती हुई। चोर होता, तो मेरे बाल क्यों सहलाता ? वह तो सीधा मुझे कुछ सुंघाता और मेरी मुश्कें बांध देता। मगर क्या मालूम कोई आधुनिक किस्म का चोर हो। पर यह चोर नहीं हो सकता। परी ! हां, परी हो सकती है।

परी से मुझे डर नहीं लगा, बल्कि यही इच्छा हुई कि वह फिर आए और मेरे बाल सहलाए। मैं फिर सो गया।

अब की बार परी ने बाल तो नहीं सहलाए, लेकिन कमरे के एक सिरे पर, तिपाई पर रखी मेरी चिट्ठियां खोलने लगी। मुझे लगा—जैसे उसके हाथ कागज खोल रहे हैं। वे मुकद्दमे के कागज थे, जो मैं वकील को दिखाने के लिए लाया था।

फिर इस ख्याल से कि यह है तो परी ही, मुझे नुकसान नहीं पहुंचाएगी, मैं फिर से कम्बल के नीचे दुबककर पसर गया।

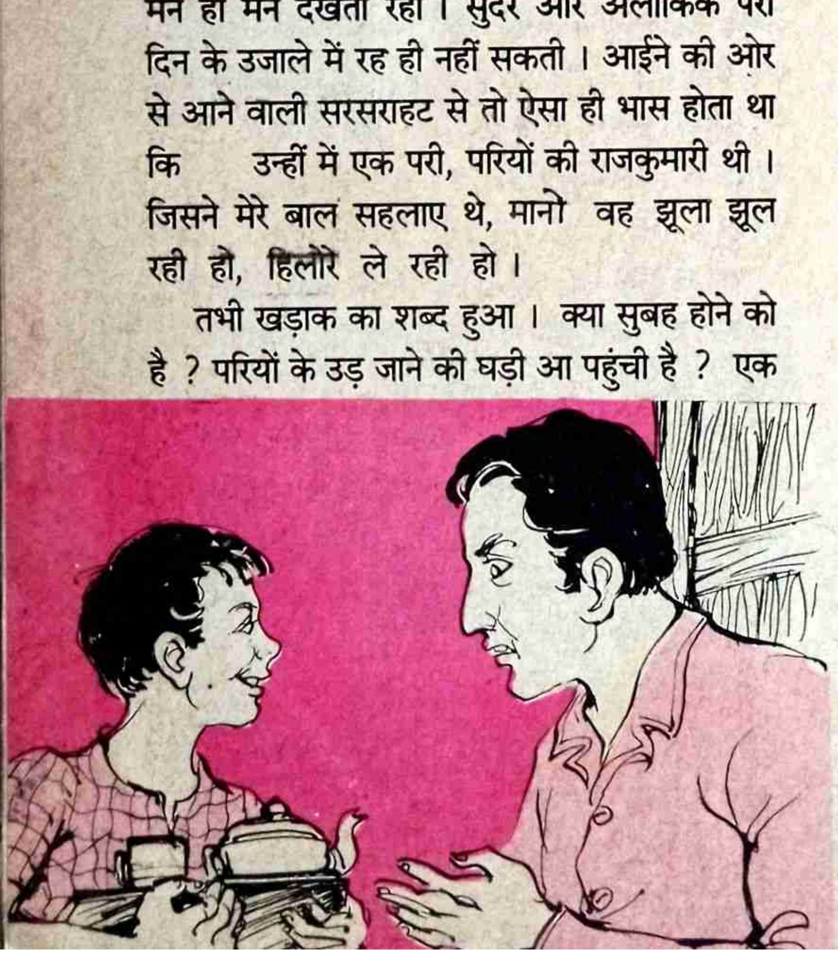
पर थोड़ी ही देर बाद मुझे परी के झीने वस्त्रों की सरसराहट सुनाई दी। कभी सुना था कि परियां आईने के सामने अपना रूप निहारने के साथ-साथ नाचती भी हैं।

यह होटल मुझे शुरू में ही अनोखा लगा था। होटल के नौकर का व्यवहार भी अजब ढंग का था। मैंने उससे नाम पूछा, तब उसने झट से कहा था—अजीज। लेकिन घंटे भर बाद जब वह कमरे का बिछावन बदलने के लिए आया, मैंने दोबारा उसका नाम पूछा। तब उसने अपना नाम हुसैन बताया।

मुझे वह लड़का सुंदर किंतु नटखट लगा था। जिस समय शाम को वह चाय की केतली उठाकर लाया था, तो चाय का प्याला तिपाई पर रखा। फिर उसने हाथ फैलाकर कहा—"साहब, बख्शीश !" इस पर मैंने उसे रुखाई से झिड़क दिया था—"आज ही मैं होटल में आया हूं और तुम बख्शीश मांगने लगे हो। जब मैं होटल छोड़कर जाऊंगा, तब बख्शीश मांगना।"

मैं दम साधे लेटा रहा और परी को झूला झूलते मन ही मन देखता रहा। सुंदर और अलौकिक परी दिन के उजाले में रह ही नहीं सकती। आईने की ओर से आने वाली सरसराहट से तो ऐसा ही भास होता था कि उन्हीं में एक परी, परियों की राजकुमारी थी। जिसने मेरे बाल सहलाए थे, मानो वह झूला झूल रही हो, हिलोरें ले रही हो।

तभी खड़ाक का शब्द हुआ। क्या सुबह होने को है ? परियों के उड़ जाने की घड़ी आ पहुंची है ? एक बार फिर खड़ाक का शब्द हुआ। सचमुच इनके जाने का वक्त आ गया है। खिड़की के बाहर पौ फटने का आभास होने लगा था। बिजली होती, तो मैं परियों की एक झलक देख तो लेता।



कमरे में बिजली तो नहीं थी, पर मेरे पास माचिस थी। मैंने हौले से झोले को टटोला। माचिस निकाली। माचिस जलाऊंगा तो और नहीं, कम से कम लोप होती परियों की झलक तो मिल ही जाएगी। किसी से कह तो सकूंगा कि मैंने परियां देखी हैं। यह सोचकर मन को तसल्ली मिली।

मैं बिस्तर से उठा। आईने की ओर मुंह करके दियासलाई जलाई। मैंने आंखें फाड़-फाड़कर आईने की ओर देखा।

मैं देखते ही सिहर उठा। मैंने देखा—आईने की चौखट पर से दो आंखें मुझे घूर रही हैं, छोटी-छोटी पर पैनी आंखें ! एक बड़ा-सा, भयावह दिखने वाला दुमदार चूहा, आईने की चौखट पर बैठा था। वह मुझे घूरे ही जा रहा था।

क्या परियों की राजकुमारी सहसा चूहा बन गई है ? इस होटल में कुछ भी हो सकता है। यही चूहा रहा होगा, जिसने मेरे बाल सहलाए थे।

मैं झल्लाकर उठ बैठा। यह चूहा कब और कैसे कमरे में घुस आया था ? मैंने फिर माचिस जलाई। चप्पल उठाकर आईने पर बैठे चूहे को मैं निशाना बना ही रहा था कि चूहा गायब।

खिड़की के बाहर रोशनी नजर आने लगी थी। जब चूहा नजर नहीं आया, तो मैंने उठकर गुसलखाने का दरवाजा खोल दिया।

तभी बरामदे की ओर खुलने वाले दरवाजे पर दस्तक हुई। हुसैन दरवाजा खटखटा रहा था। सुबह की चाय लेकर आया था। मेरा हुलिया देखकर खिलखिला कर हंसने लगा। बोला—"बहुत देर तक सोए साहब ! रात को पीछे का दरवाजा बंद कर दिया था न ? नाली में से चूहा आता है।"

शरारत से उसकी आंखें चमक रही थीं और मैं अपलक नटखट हुसैन को निहार रहा था। ●

अंधा चोर

—कविराज ओमप्रकाश

सौ साल पहले की बात है, रामभज और हीरालाल दो भाई थे। हीरालाल बड़ा था। मिला-जुला काम था। बड़े बाजार में किराने की दुकान थी। सारा दिन ग्राहकों की भीड़ लगी रहती थी।

एक दिन हीरालाल दुकान खोलने गया, तो देखा एक आदमी बंद दरवाजे के बाहर बैठा है। ''हटो, दुकान खोलने दो।''—हीरालाल ने कहा। वह आदमी खड़ा हुआ, तो हीरालाल ने देखा, वह नेत्रहीन था।

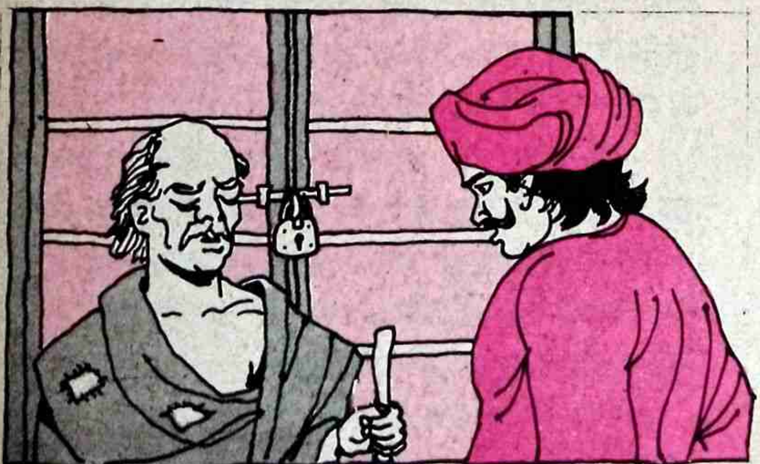
उस व्यक्ति ने कहा—"ईश्वर करे आज आपकी खूब बिक्री हो। कुछ दान दीजिए।''

अब हीरालाल समझ गया कि उसके सामने एक अंधा भिखारी खड़ा है। उसने चिड़चिड़े स्वर में कहा—''यह भला क्या तरीका है भीख मांगने का ?''

–''हां, बाबू, मैं तो ऐसा ही भिखारी हूं। जो दे उसका भला, जो न दे, उसका भी भला।''

हीरालाल को क्रोध आ गया। सुबह-सुबह की उलझन से दिमाग गरम हो गया। चिल्लाकर बोला—''अभी कुछ नहीं मिलेगा। सामने से हट जा वरना...''

भिखारी बड़बड़ाता हुआ जाने लगा। बोला—''तुम नहीं दे सकते तो न सही, लो, मैं देता



हूं।'' कहकर उसने एक सिक्का हवा में उछाल दिया, फिर वहां से चला गया।

एक रोज हीरालाल को व्यापार के सिलसिले में पास के शहर में जाना था। यात्रा पर निकलने से थोड़ी देर पहले ही उसकी तबीयत खराब हो गई। यात्रा की तैयारी हो चुकी थी, इसलिए उसके बदले रामभज चला गया।

उन दिनों सड़कों पर बिजली नहीं जलती थी। ऐसे मकान भी कम थे, जिनमें बिजली की सुविधा थी। जिस व्यापारी के पास रामभज गया था, उसने कहा कि रात में लौटना ठीक नहीं। पर रामभज नहीं माना।

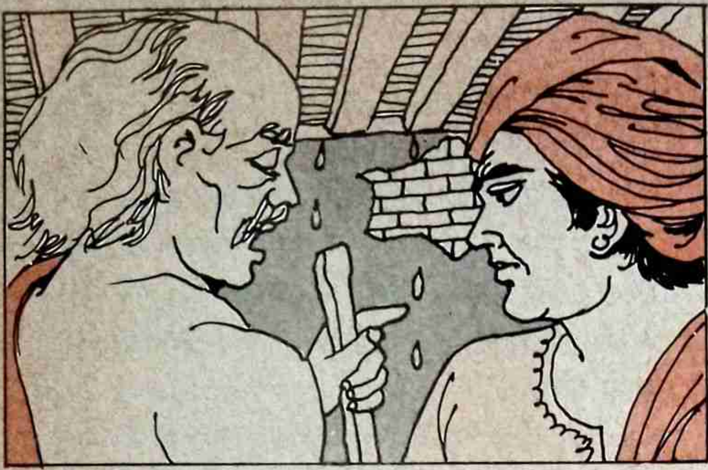
एक घोड़ागाड़ी रामभज के शहर विष्णुपुर की ओर जा रही थी। उसी में बैठने की जगह मिल गई। अभी थोड़ा ही सफर तय हुआ था कि बादल घिर आए, बिजली कड़कने लगी। फिर बारिश शुरू हो गई। पहले धीमी फिर तेज। एक तो अंधेरा, ऊपर से तेज बरसात।

एकाएक जोर का झटका लगा। रामभज ने बहुत मुश्किल से अपने को गिरने से बचाया। घोड़ागाड़ी एक तरफ को झुक गई। रामभज जैसे-तैसे बाहर निकला। सब तरफ पानी ही पानी भरा था। गाड़ीवान ने बताया—''पहियां गड्ढे में फंस गया है। अकेले से नहीं निकलेगा। अब गाड़ी आगे नहीं जाएगी।''

रामभज बढ़कर इधर-उधर देखने लगा कि शायद कहीं कोई जगह सिर छिपाने के लिए नजर आ जाए। तभी एक तरफ उसे झोंपड़ियां दिखाई दीं। वह धीरे-धीरे उस तरफ बढ़ चला, भीगता हुआ। एक झोंपड़ी का दरवाजा खुला था। रामभज ने पुकारा—''कोई है ?''

''कौन है ?''—अंदर से आवाज आई और एक आदमी बाहर निकल आया। झोंपड़ी में अंधेरा था।

रामभज ने जल्दी-जल्दी उसे सारी बात बताई और रात बिताने के लिए जगह मांगी। उस आदमी ने कहा—''माफ करना भाई। मेरी आंखें नहीं हैं। अंदर



आ जाओ । ठहरो, तुम्हारे लिए रोशनी करता हूं ।''

रोशनी हुई, तो रामभज झोंपड़ी में चला गया । अंदर भी पानी टपक रहा था, पर फिर भी पानी से कुछ बचाव तो जरूर हो गया था । तभी उस व्यक्ति ने कहा—''बाबू जी, मैं ठहरा गरीब आदमी। आपको ओढ़ने-बिछाने को भी नहीं दे सकता । बस, जैसे तैसे भीख मांगकर पेट भरता हूं ।''

रामभज ने कहा—''कोई बात नहीं । मुझे लगता है, दिन निकलने में अब अधिक देर नहीं है । बारिश धीमी होते ही मैं चला जाऊंगा ।'' न जाने कब रामभज की आंख लग गई । आंख खुलीं तो दिन निकल आया था । बारिश बंद हो चुकी थी ।

रामभज झोंपड़ी से बाहर आ गया । आसपास कोई नजर नहीं आया । तभी एक बैलगाड़ी सड़क पर जाती दिखाई दी । रामभज ने पूछा, गाड़ी वाला विष्णुपुर ही जा रहा था । वह बैलगाड़ी में बैठ गया । बैलगाड़ी बढ़ चली । रामभज के मन में एक ही बात थी—'उस आदमी को धन्यवाद भी नहीं दे सका । अगर रात में वह ठहरने की जगह ने देता तो...'

एक घंटे बाद बैलगाड़ी ने रामभज को विष्णुपुर पहुंचा दिया । वह थका-मांदा घर पहुंचा । अपना झोला देखा,तो सन्न रह गया । उसमें रुपयों की थैली नहीं थी । उसमें चांदी के तीन सौ रुपए थे । रामभज ने बहुत सोचा, पर कुछ समझ में नआया कि थैली कहां गिरी होगी । सोचते-सोचते याद आया कि झोंपड़ी में घुसने से पहले उसने थैली टटोलकर देखी थी । इसका मतलब यही था कि झोंपड़ी में जाने के बाद रुपए चोरी हुए ।

वह जितना सोचता, उतना विश्वास होता जाता कि रुपए जरूर झोंपड़ी वाले अंधे आदमी ने चुराए हैं । नहा-धोकर रामभज फिर लौट पड़ा । और उस झोंपड़ी पर जा पहुंचा । रामभज ने जाते ही उस व्यक्ति से कहा—''मेरी रुपयों की थैली रात में यहां रह गई थी । सुबह जब मैं गया, तो तुम मुझे मिले नहीं थे । लाओ, थैली वापस करो ।''

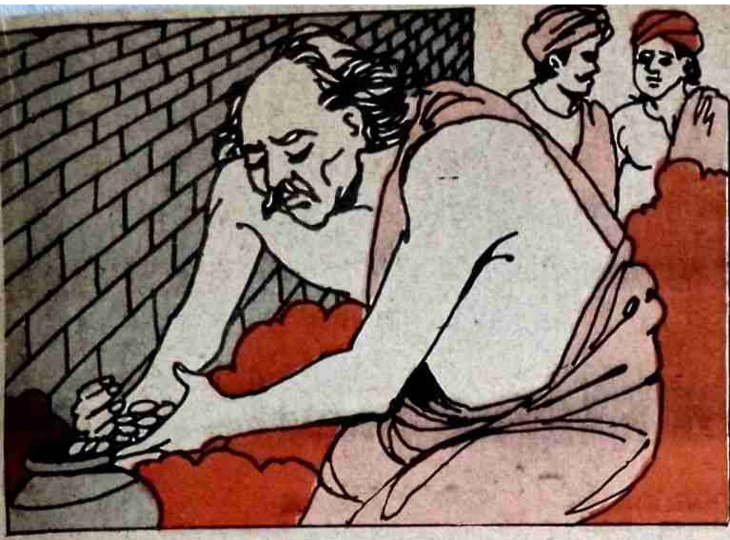
यह सुनते ही वह आदमी बिफर उठा—''क्या बकते हो? मैं अंधा हूं तो क्या चोर भी हो गया । अरे, रात में सिर छिपाने की जगह दी और तुम मुझे ही चोर बताने लगे । जाओ, भाग जाओ ।'' 'शोर-गुल सुनकर वहां कई लोग आ गए ।वे भी रामभज को ही बुरा-भला कहने लगे ।

रामभज को अपना-सा मुंह लेकर वापस आना पड़ा । कोई प्रमाण नहीं था कि रुपए उस अंधे व्यक्ति ने चुराए थे । घर लौटकर रामभज ने सारी बात हीरालाल को बताई । हीरालाल ने कहा—'' मैं देखता हूं कौन है, जो इस तरह हमारे रुपए हड़प लेना चाहता है ।'' दोनों घोड़ागाड़ी में बैठ, घटनास्थल पर जा पहुंचे । रामभज ने दूर से ही दिखा दिया ।

अंधे व्यक्ति को देखते ही हीरालाल चौंक उठा । उसके होंठों से निकल गया—''अरे, यह तो वही है—बाजार में रोज आने वाला अंधा भिखारी !'' उसे पिछली घटना याद आ गई । उसने रामभज से कहा—''रुपए जरूर इसी ने चुराए होंगे । मैं वसूल करके ही चलूंगा ।'' फिर उसने रामभज को समझा दिया कि कैसे क्या करना है ।

दोनों थोड़ी दूर पर पेड़ों के पीछे छिपकर बैठ गए । थोड़ी देर बाद अंधा भिखारी लाठी टेकता हुआ झोंपड़ी से बाहर आया और एक तरफ को चल दिया । वह एक खंडहर की तरफ जा रहा था । दोनों भाई भी कदम दबाते हुए पीछे-पीछे चले ।

एक दीवार की जड़ में टटोलकर भिखारी ने पत्थर हटाया । फिर हाथ डालकर एक हंडिया निकाल



ली । चांदी के रुपए जेबों से निकाल कर हंडिया में डालने लगा ।

अब साफ पता चल गया था कि रात को रामभज के रुपए उसी ने चुराए थे । हीरालाल ने रामभज से कहा—"इस हंडिया में और भी रुपए हैं । इसे जाने दो, मैं हंडिया निकाल लूंगा । हमारे रुपए वसूल हो जाएं गे । यह अपना धन यहीं छिपाकर रखता है ।"

अंधे भिखारी ने हंडिया को फिर पत्थर से ढंक दिया और लौट चला । एक-दो कदम बढ़ा होगा कि गिर पड़ा । जोर-जोर से पुकारने लगा—"अरे, कोई है, मुझे उठाओ ।" असल में भिखारी इस तरह यह जानना चाहता था कि आसपास कोई है तो नहीं । गिरने का नाटक उसने यह जानने के लिए किया था कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है । रामभज और हीरालाल चुप्पी साधे खड़े रहे । उन्होंने योजना पहले ही बना ली थी । भिखारी उठा और लाठी टेकता हुआ चल दिया । एकाएक हीरालाल ने उस तरफ देखा, तो चौंक गया । एक काला सांप झाड़ी से निकलकर अंधे भिखारी की तरफ रेंग रहा था, लेकिन भिखारी को कुछ पता नहीं था । वह लाठी ठकठकाता चला जा रहा था ।

रामभज धीरे-से फुसफुसाया—"मरने दो दुष्ट को । अपने किए की सजा पाएगा ।"

"नहीं, ऐसा कहना ठीक नहीं है । हमें उसे बचाना चाहिए ।"—कहता हुआ हीरालाल उस तरफ लपका और भिखारी का हाथ पकड़कर दूर खींच लिया ।

"क...कौन...क्या है ?"—अंधे भिखारी ने हड़बड़ाकर कहा । वह गिर गया था । उसकी समझ में कुछ नहीं आया था । इस तरह खींचे जाने से वह काफी घबरा गया था ।

"तुम्हारी किस्मत अच्छी थी, जो बच गए । अगर मैंने तुम्हें खींच न लिया होता, तो सांप काट लेता ।"—हीरालाल ने कहा । सांप का नाम सुनते ही भिखारी बेहोश हो गया ।

रामभज ने कहा—"अब छोड़ो इसे । हंडिया निकाल लो और घर चलो । होश में आने पर अपने आप उठकर चला जाएगा ।"

—"वाह, क्या खूब ! चोर को पकड़ने आए और खुद चोर बन गए ! मैं इसे यहां नहीं पड़ा रहने दूंगा । सांप फिर आ सकता है । आओ, इसे झोंपड़ी में पहुंचा दें । इसकी बेहोशी टूटने के बाद ही हम चल सकते हैं ।"

दोनों अंधे भिखारी को उठाकर उसकी झोंपड़ी में ले गए । कुछ देर बाद भिखारी को होश आ गया । तब हीरालाल ने उसे पूरी बात बता दी । सुनकर भिखारी रोने लगा । उसने दोनों भाइयों के पैर पकड़ लिए । बोला—"आपने मुझे सांप से क्यों बचाया ? मैं तो आपका चोर हूं । हां, रात में रुपयों की थैली मैंने ही इनके सो जाने के बाद निकाल ली थी । मैंने आपके रुपए चुराए और आपने मेरी जान बचाई । कितना बुरा हूं मैं ।"

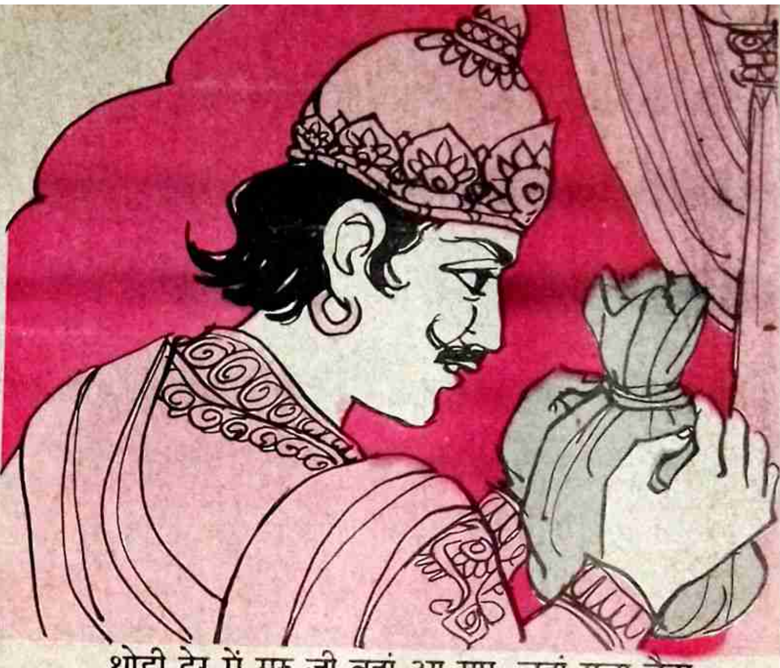
हीरालाल ने कहा—"हम सिर्फ इतना चाहते हैं, तुम हमारे रुपए लौटा दो ।"

भिखारी बोला—"मैं आपको पूरी रकम सौंपता हूं—आप उसका चाहे जो करें । जाइए, हंडिया को पत्थर के नीचे से निकाल लीजिए ।"

हीरालाल और रामभज जाकर हंडिया निकाल लाए । लौटे तो झोंपड़ी खाली थी । जब वह बहुत देर तक नहीं आया, तो दोनों रुपयों की हंडिया घर ले आए । रामभज ने उसमें से अपने ३०० रुपए निकाल लिए और बाकी एक मंदिर के दानपात्र में डाल दिए । उसके बाद दोनों भाई कई बार अंधे भिखारी की झोंपड़ी पर गए, पर वह जाने कहां चला गया था।●

मेहनत का फल

— गिरीश चतुर्वेदी



एक राजा था। नाम था देवकांति। उसका बहुत बड़ा राज्य था। प्रजा सुखी थी, क्योंकि राजा हर समय अपनी प्रजा की भलाई के कामों में लगा रहता था। देवकांति बचपन से ही उदार प्रकृति का था। उसे बचपन में एक गुरु जी शिक्षा देने आते थे। गुरु जी देवकांति को सुंदर कहानियां सुनाते। देवकांति के मन में अच्छी-अच्छी बातों का ज्ञान भर गया था। जब वह बड़ा हुआ और राज-काज संभालने लगा, तब उसने बचपन में सीखी अच्छी बातों का पालन किया। राज्य की अच्छी आमदनी थी, परंतु राजा उस आमदनी से कुछ भी अपने लिए नहीं लेता था। वह हाथ से बांस की टोकरियां बनाता था। उन्हें बेचकर जो भी पैसा आता, उससे अपना गुजारा करता था।

राजा के गुरु अपने गांव में रहते थे। बूढ़े हो चले थे। खेतीबाड़ी ही उनकी आमदनी का जरिया थी। एक बार की बात है, उस साल पानी बरसा नहीं और खेत बंजर पड़ा हुआ था। रोटी मुश्किल से मिल रही थी। गुरु जी ने सोचा—'चलूं अपने शिष्य राजा के पास। शायद वह मेरी कुछ आर्थिक सहायता कर दे।'

गुरु जी पैदल चलते-चलते राजधानी में पहुंच गए। जिस समय गुरु जी राजधानी पहुंचे, वह राजा का निजी समय था। उस समय वह किसी से भी नहीं मिलता था। गुरु जी महल के दरवाजे पर पहुंचे। द्वारपाल से कहा कि राजा को सूचना दे कि गांव से उनके गुरु जी आए हुए हैं। गुरु जी से द्वारपाल ने कहा— "आप कल आएं, क्योंकि इस समय महाराज किसी से भी नहीं मिलते।" गुरु जी के जोर देने पर द्वारपाल राजा के पास जाकर बोला— "महाराज, आपके गुरु जी गांव से आए हैं। यदि आज्ञा हो, तो आने दूं।"

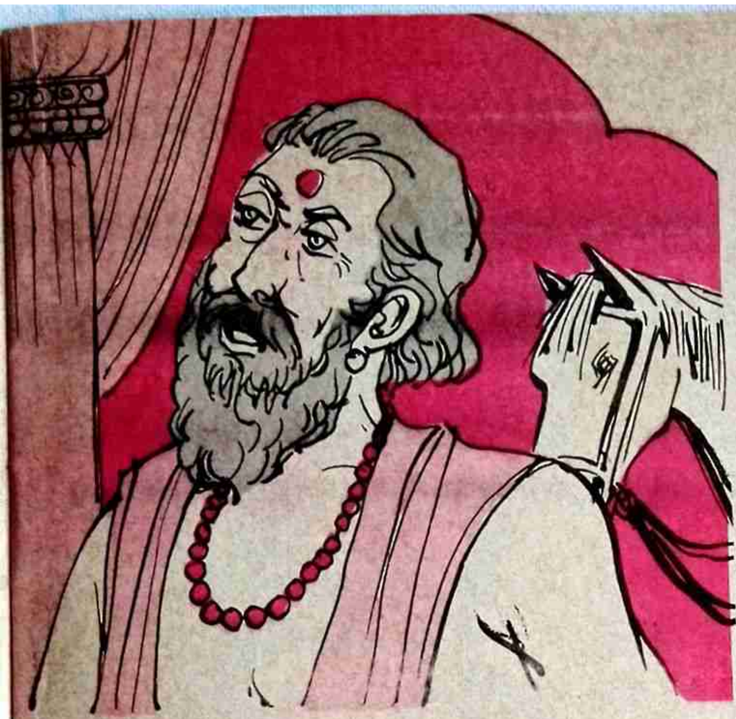
राजा ने तुरंत कहा— "गुरु जी को आदर सहित ले आओ।" द्वारपाल सिर झुकाकर चला गया।

थोड़ी देर में गुरु जी वहां आ गए, जहां राजा बैठा था। उस समय राजा बांस की कंडी बना रहा था। गुरु जी जैसे ही आए, राजा ने उनके पैर छुए और फिर दोनों बातें करने लगे। जब भोजन का समय हुआ, तो राजा ने गुरु जी से पूछा— "गुरु जी, आप शाही भोजनशाला में भोजन करेंगे या मेरे साथ? देखिए, मैं केवल दाल, साग-रोटी ही खाता हूं। भोजनशाला में औरों के लिए तरह-तरह के व्यंजन बनते हैं।"

गुरु जी ने हंसते हुए कहा— "हम भोजन आपके साथ ही करेंगे।"

दिन बीता, रात हुई तो गुरु जी अपने कमरे में जाकर सो गए। सुबह से शाम तक राजा राजकाज में लगा रहता था और गुरु जी इधर-उधर घूमते रहते। इस तरह गुरु जी को वहां रहते बहुत दिन हो गए। एक दिन उन्होंने राजा से कहा— "अब मैं अपने गांव वापस जाऊंगा।"

राजा ने गुरु जी को जाने के लिए एक घोड़ा दिया। फिर गुरु जी को अपने कमरे में बुलाया और कहा— "मैं आपको विदाई में कुछ देना चाहता हूं।" मन ही मन गुरु जी बड़े खुश हुए। राजा ने एक संदूक उठाया। संदूक खोला और एक बड़ी-सी पोटली निकाली। फिर राजा पोटली में से पोटली, पोटली में से पोटली निकालता रहा। अंत में एक छोटी-सी पोटली निकाली और उसमें रखी चांदी की एक चवन्नी निकालकर गुरु जी को भेंट में दी।



गुरु जी मन ही मन सोचने लगे— 'इतना बड़ा राजा और दे रहा है एक चवन्नी।' खैर, गुरु जी ने चुपचाप वह चवन्नी ले ली। राजा के दिए घोड़े पर बैठकर अपने गांव चले गए। गांव में पत्नी उन्हें देखकर खुश हुई। पूछा— "राजा ने क्या दिया ?" गुरु जी ने चवन्नी निकालकर पत्नी को दिखला दी। चवन्नी देखकर पत्नी सुस्त हो गई। दिन जैसे कट रहे थे, कटते रहे।

उस साल वर्षा बहुत अच्छी हुई। गुरु जी ने अपना खेत जोता और उस चवन्नी के बीज लाकर खेत में बो दिए। कुछ ही दिनों में फसल खूब अच्छी लहलहाने लगी। गुरु जी ने अच्छे दामों पर कपास बेची और खूब धन कमाया। उसी पैसे से दूसरा व्यापार किया, तो उनके घर में जैसे धन की वर्षा होने लगी। दिन आराम से कटने लगे।

एक दिन गुरु जी ने सोचा— 'राजा की दी हुई चवन्नी का ही यह कमाल है। चलकर कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए।' गुरु जी घोड़े पर बैठकर फिर राजधानी पहुंचे। खबर करवाई और राजा के पास पहुंच गए। शाम हुई और जब राजा गुरु जी के पास बैठे, तो उन्होंने राजा से पूछा— "राजन, एक बात पूछना चाहता हूं।"

"पूछिए।"— राजा ने उत्तर दिया।

—"वह जो आपने चांदी की चवन्नी दी थी, उसने तो हमारे दिन ही फेर दिए हैं। उसी चवन्नी के कारण अब हम धनवान बन गए हैं। कृपया हमें बताइए कि उसमें क्या करामात थी ?" सुनकर राजा ने एक सेवक को बुलाकर कहा— "सेठ गिरधारीलाल को तुरंत उसके पिछले साल के बही-खातों सहित बुलाकर लाओ।" नौकर गया और सेठ जी को राजा की आज्ञा सुनाई। सेठ अपने बही-खातों को लेकर राजा के पास पहुंचा। राजा ने पूछा— "पिछले साल सावन माह के अपने बही-खाते देखकर बताओ कि तुमने क्या-क्या खर्च किया ?"

सेठ बही-खाते पलटकर सब खर्चे बतलाता रहा। फिर बोला— "एक चवन्नी एक मजदूर को दी।" राजा ने कहा— "बस, यह बतलाओ कि वह चवन्नी मजदूर को क्यों दी थी ?" सेठ बोला— "राजन, बरसाती रात थी। बड़ा ही तेज पानी बरस रहा था। कपड़े की गांठें ऊपर चौबारे में रखी हुई थीं। पानी इतना तेज था कि छत से पानी नीचे कमरे में रखी गांठों को भिगो रहा था। मैं और मेरा बेटा गांठें उठा-उठाकर नीचे लाने लगे। इतना बोझ नहीं उठा सके, बहुत थक गए। सुबह के करीब तीन बजे थे। हमने सड़क पर खड़े एक मजदूर को देखा। उसे काम बताया, तो वह राजी हो गया। उसने सारा माल अकेले नीचे उतारकर रख दिया। तभी दूर से मंदिरों के घंटे बजने की आवाज आने लगी। वह मजदूर हड़बड़ाकर बोला— 'अब मैं जाऊंगा।' उस दिन मेरी जेब में केवल एक ही चांदी की चवन्नी थी। वह मैंने उस मजदूर को देते हुए कहा— 'बाकी पैसे फिर ले लेना।' चवन्नी लेकर वह चला गया और और बाकी पैसे लेने दुकान पर नहीं आया।"

राजा सुनकर बोला— "गुरु जी, वह मजदूर मैं ही था और वह मेरी कड़ी मेहनत की कमाई थी।" सुनकर गुरु जी ने कहा—"धन्य हैं राजन। अगर मनुष्य ईमानदारी और मेहनत से धन कमाए, तो वह धन बहुत अच्छा होता है। यही कारण है कि आपकी मेहनत से कमाई चवन्नी ने हमारे दिन फेर दिए।"

●

राजकुमारी की जिद

—मीनाक्षी स्वामी

एक थी राजकुमारी— सुकेशिनी। जैसा उसका नाम था, वैसी ही सुकेशिनी थी वह। उसके बाल घने, काले और बहुत ही लम्बे थे। इतने लम्बे कि तीन दासियां राजकुमारी के पीछे उसके बाल उठाकर चलती थीं। बाल धोने और संवारने के लिए कई दासियों की जरूरत पड़ती थी। राजकुमारी के बालों की खासियत यह थी कि चाहे जितने काठ दें, दूसरे दिन फिर उतने के उतने हो जाते थे। राजकुमारी सुंदर भी बहुत थी।

इसी कारण जो भी युवक राजकुमारी के पास शादी के लिए आते, वह उनसे कहती— "मैं अपने लम्बे बालों से बहुत परेशान हूं। यदि तुम इन लम्बे बालों से मुक्ति दिलवा दोगे, तो मैं तुमसे विवाह कर लूंगी।"

एक दिन एक युवक आया। उसने राजकुमारी से कहा— "देवी, मेरे पास आपके बालों की लम्बाई कम करने की अनोखी तरकीब है।"

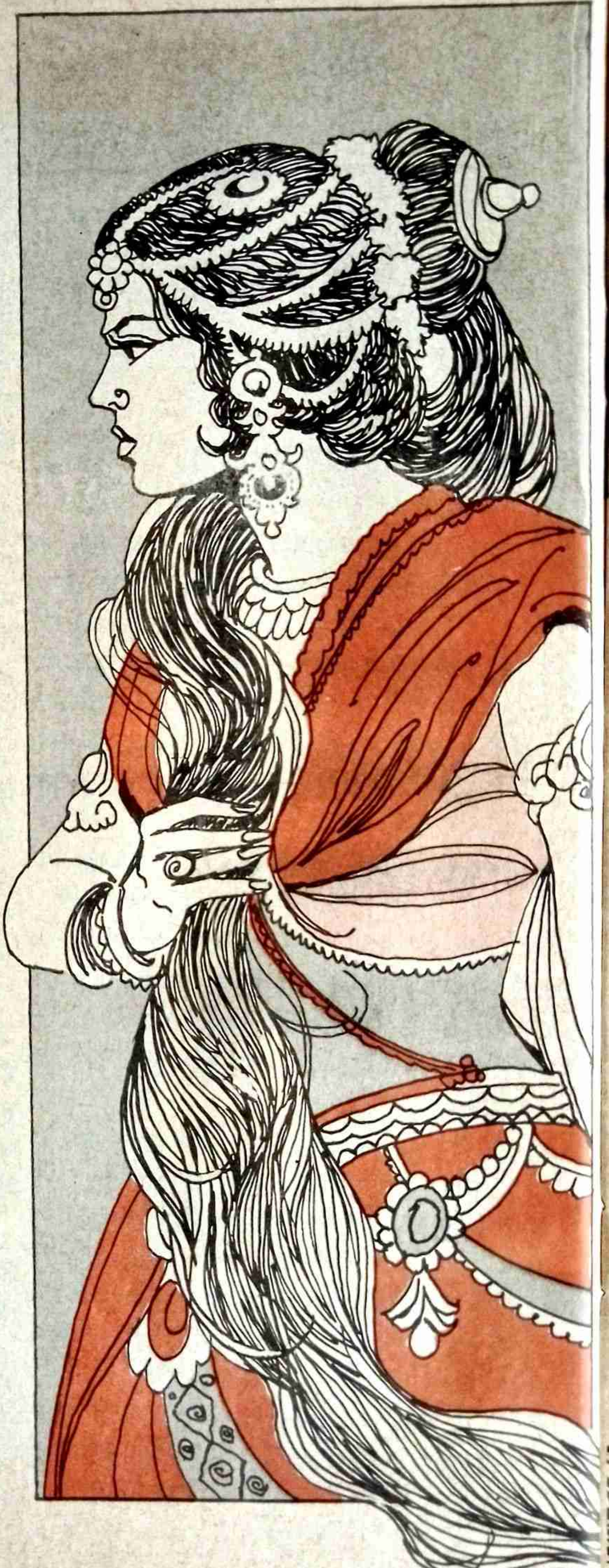
राजकुमारी ने कहा— "ठीक है, आजमाकर देख लो।"

युवक ने अपने झोले से एक मोटी रस्सी निकाली। उससे राजकुमारी के बाल बांध दिए। शेष बालों को जला दिया। फिर बड़े विश्वास से राजकुमारी से बोला— "देवी, अब तुम्हारे बाल छोटे हो गए हैं। कृपया मुझसे शीघ्र विवाह करो।"

युवक का जोश और तरकीब देखकर राजकुमारी मन ही मन मुसकरा रही थी। दासियां भी नीचे मुंह करके हंस रही थीं। राजकुमारी ने कहा— "आप कल आइएगा।"

दूसरे दिन युवक आया, पर राजकुमारी के बाल फिर पहले जितने लम्बे देखकर चकित रह गया।

इस तरह कितने ही युवक जोश में भरकर आते और निराश होकर चले जाते। समय बीतता जा रहा था। इसके साथ ही राजा की चिंता भी बढ़ती जा रही थी। एक दिन राजा ने सुकेशिनी को समझाया—



"बेटी, कहीं इस जिद से तुम कुंआरी न रह जाओ ।"

पर राजकुमारी ने जवाब दिया— "पिता जी, जिससे मन न मिले, उसे पति बनाने से तो कुंआरी रहना अच्छा है ।"

राजकुमारी के तर्क के आगे राजा निरुत्तर हो गए ।

नगर में गोवर्धन नाम का एक ब्राह्मण रहता था । उसके तीन पुत्र थे— केशव, राघव और माधव । वे तीनों बुद्धिमान और साहसी थे । उनमें कुछ कर गुजरने की चाह थी ।

केशव ने सोचा, क्यों न राजकुमारी से शादी करने के लिए भाग्य आजमाया जाए ! उसे राजकुमारी की शर्त पता थी । वह सीधा जंगल में रहने वाली बूढ़ी जादूगरनी के पास गया । बूढ़ी जादूगरनी ने केशव को बताया— "घने जंगल में एक गुफा है । गुफा के दरवाजे पर सांप पहरा देते हैं । गुफा के भीतर घना अंधेरा है । वहां ढूंढ़ने पर चार फल वाली एक कैंची मिलेगी । उस कैंची से यदि राजकुमारी के बाल काट दिए जाएं, तो फिर उतने ही रहेंगे । दोबारा लम्बे नहीं होंगे । पर सावधान, यदि तुमने गुफा की दीवार को छू दिया, तो तुम पत्थर हो जाओगे ।"

बुढ़िया की बात सुनकर केशव वापस नगर में गया । उसने एक अच्छा घोड़ा, एक तलवार और एक चिराग लिया । घोड़े पर बैठकर गुफा की ओर चल दिया । गुफा के बाहर सांप ही सांप थे । केशव तलवार से सांपों को मारने लगा । पर सांपों से लड़ते हुए केशव को एक सांप ने डस लिया । केशव वहीं गिर पड़ा ।

जब कई दिनों तक केशव घर न आया, तो राघव उसकी तलाश में चल दिया । वह भी जादूगरनी बुढ़िया के पास पहुंचा । बुढ़िया राघव की बात सुनकर हंसी । उसने राघव को भी वही सब बताया, जो केशव को बताया था ।

राघव भी तैयारी करके गुफा की तरफ चल दिया । जब राघव ने गुफा के दरवाजे पर अपने भाई को मरा हुआ देखा, तो वह बहुत दुखी हुआ । वह वापस अपने नगर में गया । राघव ने एक बीन और एक बड़ा टोकरा लिया । गुफा के दरवाजे पर जाकर राघव ने बीन बजाना शुरू किया । एक-एक करके सारे सांप टोकरे में आ गए । राघव ने टोकरे का ढक्कन बंद किया और उस पर एक बड़ा पत्थर रख दिया । फिर चिराग जलाया और गुफा के भीतर प्रवेश किया । गुफा बहुत बड़ी थी— टेढ़ी-मेढ़ी, कहीं संकरी, कहीं चौड़ी । गुफा की छत कहीं बहुत ऊंची थी, तो कहीं बहुत नीची । सावधानी से गुफा में घूमते हुए राघव कैंची तलाश करने लगा । उसे पूरा ध्यान था कि दीवार से



दूर रहना है । तभी अचानक राघव का पैर किसी कठोर चीज पर पड़ा । उसने नीचे देखा, तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । उसके पैरों से चार फल वाली वही कैंची टकराई थी । राघव जैसे ही कैंची उठाने के लिए झुका, उसका सिर गुफा की दीवार से टकरा गया । वह तुरंत पत्थर का हो गया ।

जब राघव भी बहुत दिनों तक वापस नहीं लौटा, तो माधव को चिंता हुई । माधव भी बुढ़िया के पास गया । बुढ़िया ने माधव की बातें सुनीं, फिर जादू के बल से उसे उसके दोनों भाइयों का हाल बताया । अपने भाइयों का हाल सुनकर माधव नगर में आया, पर वह लौटकर घने जंगल वाली गुफा में नहीं गया ।

माधव राजकुमारी के महल की ओर चल दिया । वह राजकुमारी को समझाना चाहता था कि उसकी जिद से कितने नवयुवक निराश होकर तबाह हो चुके हैं । अपने दोनों भाइयों का हाल भी बताना चाहता था । वह राजकुमारी से प्रार्थना करना चाहता था कि अपनी जिद छोड़ दे ।

यही सब सोचते-सोचते माधव राजकुमारी के पास

पहुंचा ।.पर जैसे ही उसने राजकुमारी को देखा, उसका सौंदर्य देखकर माधव की आंखें चौंधिया गईं । माधव के मन में भी राजकुमारी से विवाह करने की चाह पैदा हो गई । माधव जो कहना चाहता था, सब भूल गया । उसने भी औरों की तरह राजकुमारी से शादी करने की इच्छा प्रकट की ।

राजकुमारी ने अपनी वही शर्त माधव के सामने रख दी ।

इस पर माधव ने कहा— "राजकुमारी जी, ये लम्बे केश तो आपके सौंदर्य में चार चांद लगाते हैं । ऐसे अनूठे केश तो संसार भर में किसी के न होंगे । इन्हें छोटा करवाना ठीक नहीं है ।"

माधव का इतना कहना था कि राजकुमारी मुसकराई । उसने कहा— "तुम ही वह व्यक्ति हो, जिसकी मुझे तलाश थी । मैं तुम्हीं से शादी करूंगी ।"

राजा तक यह बात पहुंची । वह बहुत प्रसन्न हुए, पर उन्होंने राजकुमारी से पूछा— "बेटी, फिर तुम्हारी बालों वाली शर्त ?"

राजकुमारी ने कहा— "पिता जी, मुझे खुद भी अपने बालों से बहुत प्यार है । मैं इन्हें छोटे नहीं करवाना चाहती थी । पर किसी भी युवक ने मुझसे यह नहीं कहा । बस, वे तो मेरी कही शर्त का पालन करने को बेचैन थे । उसके पीछे छिपे रहस्य को कोई नहीं समझा । पर माधव यह बात समझ गया । उसे सुंदरता की पहचान है । उसके मन में संतोष है । जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण अच्छा है ।"

राजा ने धूमधाम से राजकुमारी और माधव का विवाह कर दिया गया । विवाह के समय जैसे ही राजकुमारी ने माधव के गले में वरमाला डाली, केशव जीवित हो गया । राघव भी पत्थर से मनुष्य हो गया ।●

नाच रहे



आओ चलें गांव की ओर ।
चारों ओर जहां हरियाली,
फूली-फली पेड़ की डाली,
खेल-कूद में ढलतीं शामें—
शीतल-सी मुसकाती भोर ।
आओ चलें गांव की ओर ।

शुद्ध दूध, औ' निर्मल पानी,
पेट भरे मीठी गुड़धानी,
कोयल कूके ऋतु वसंत में—
नाच रहे वर्षा में मोर ।
आओ चलें गांव की ओर ।

लिपे-पुते सारे घर कच्चे,
सीधे-सादे सब जन सच्चे,
धुंआ नहीं मोटर गाड़ी का—
जहां न शहरों जैसा शोर ।
आओ चलें गांव की ओर ।

— मधुर शास्त्री



मेले में

जाएंगे हम भी मेले में
मम्मी जरा सजा दो ना,
रंग-बिरंगे
कपड़े बिल्कुल
तितली-से पहना दो ना !

लेने हमको
खेल-खिलौने
रुपए कुछ दिलवा दो ना,
देखेंगे हम
खेल-तमाशे
पापा को बतला दो ना !

भैया डांटें
नहीं राह में
खूब उन्हें समझा दो ना,
लग जाए ना
नजर किसी की
काजल जरा लगा दो ना !

खूब लुभाता
है झूला भी
उस पर जरा बिठा दो ना,
और साथ में
सर्कस मम्मी
चलकर स्वयं दिखा दो ना !

—रमेशचंद्र पंत

शिव का वरदान


चंद्रावतीपुरी का राजा था दैत्य शकुनि ।उसने घोर तप किया । शिव से अमर होने का मांगा । .
अमर कोई नहीं । हां, इस तोते की मृत्यु के बाद ही तुम मर सकोगे ।
इसके बाद भी मरुं, तो भूमि का स्पर्श पाते ही जीवित हो जाऊं । आकाश में भी दो घड़ी मर न सकूं !
तथास्तु !
श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न ने शकुनि के भाइयों को मार डाला था । उसने बदला लेने की ठानी । श्रीकृष्ण को पता चला, तो गरुड़ को बुलाया...
तोते के रहते शकुनि अजेय है । तुम उस तोते को मार डालो...
जो आज्ञा !
गरुड़ चंद्रावतीपुरी पहुंचे । तोते को ढूंढ़ते रहे । न मिला, तो शकुनि के महल में पहुंचे । वहां...
मेरी मानो । युद्ध रोक दो । संधि कर लो ।
घबराओ मत । जब तक चंद्रद्वीप के पतंग पर्वत की गुफा में वह तोता है, मुझे कुछ नहीं होगा ।
तोते का पता सुन वह चंद्रद्वीप की खोज में उड़ चले । भूख लगी, तो पांचजन्य सागर के तट पर उतरे । मगर वहां...
हे प्रभु !


लगातार प्रहार से मगरमच्छ मर गया । उसके शरीर से...
आप कौन !
हेमकुंडल विद्याधर । शापवश मगरमच्छ बना । आपका मनोरथ सफल हो ।
चंद्रद्वीप का मार्ग बताकर विद्याधर स्वर्ग चला गया । अनेक द्वीपों को पार करते गरुड़ पतंग पर्वत पर पहुंचे...
इतना विशाल मायावी पर्वत...
गरुड़ ने अपना आकार बढ़ाया । जल दुर्ग को उठाकर अग्नि दुर्ग पर डाल दिया । ऐसा करते ही...
समाप्त कर दो ।
पकड़ो
मारो !
दैत्य गरुड़ से हार चंद्रावतीपुरी की ओर भागे । गरुड़ पर्वत की गुफा में जा घुसे । वहां...
शंखचूड़ नाग !!

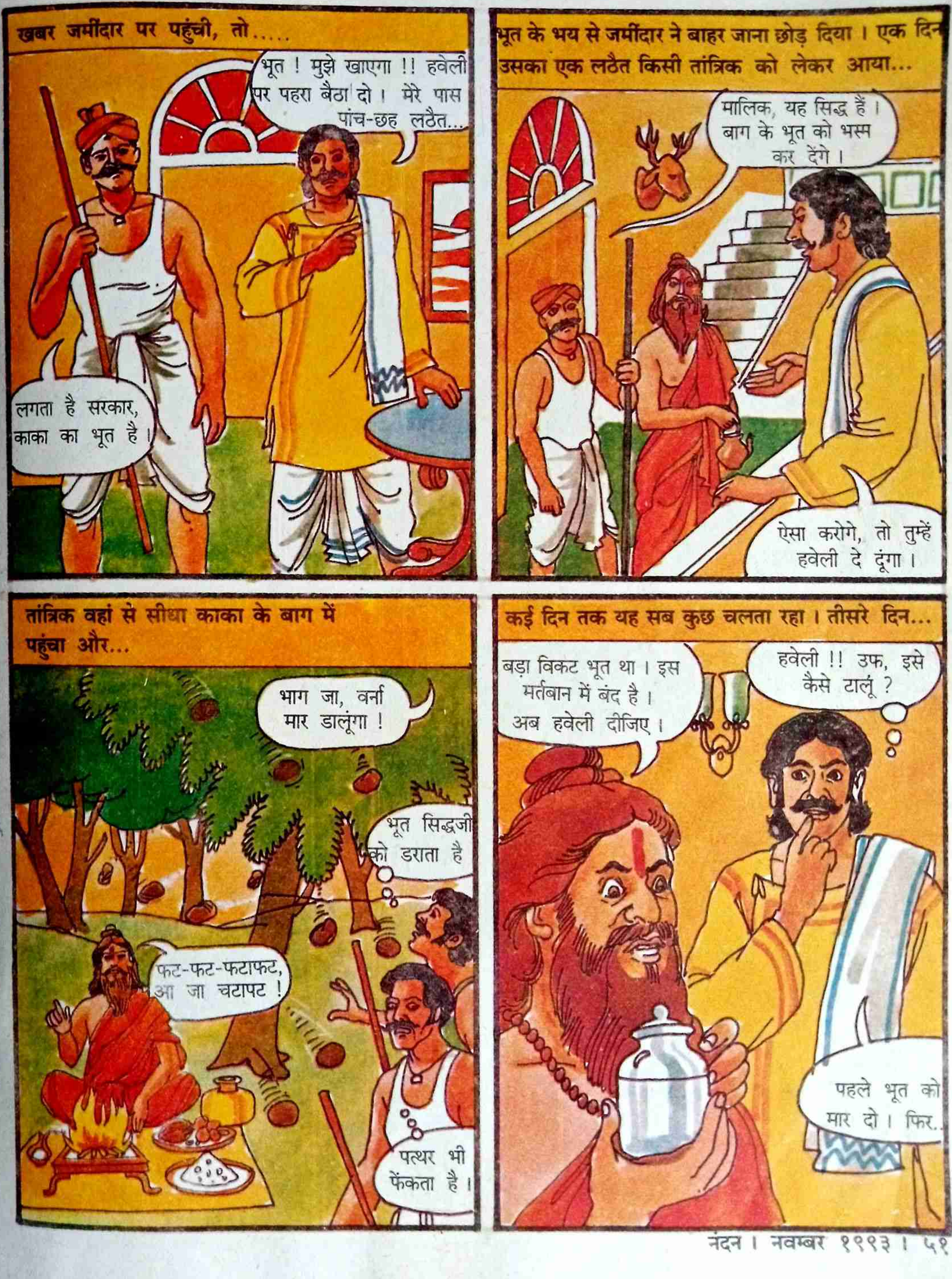

गरुड़ ने शंखचूड़ के फन पर प्रहार किया। वह पिंजरे को फेंक वहां से भागा।
दुष्ट !
गरुड़ पिंजरे को उठा तुरंत चंद्रावतीपुरी की ओर उड़ चले। मार्ग में...
जाने न पाए !
यह ले !
मार डालो !
शकुनि ने उन्हें आकाश में ही दबोचना चाहा। गरुड़ ने सुमेरु पर्वत के सबसे ऊंचे शिखर पर जा, पिंजरा नीचे फेंक दिया।
उफ !!
शकुनि लपका, मगर तोते को बचा न सका। नीचे गिरते ही तोते ने दम तोड़ दिया। और फिर...
संभलो शकुनि ! तोता मर गया।



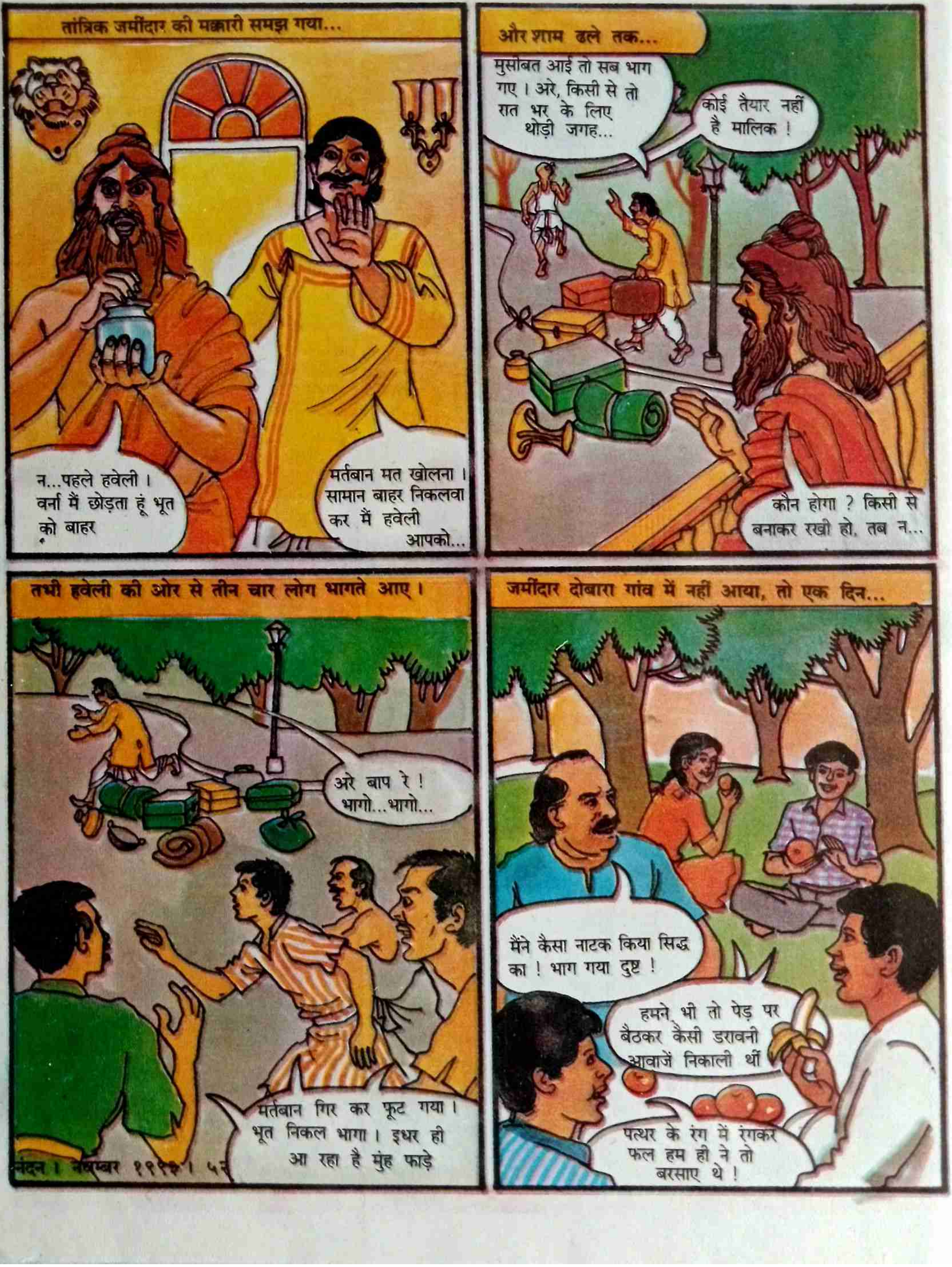
किंतु शकुनि अब भी अजेय था । धरती छूते ही जीवित हो जाता था । हार कर सबने श्रीकृष्ण को पुकारा—
मैं सुदर्शन चलाता हूं । तुम बाणों से इसे दो घड़ी आकाश ही में रखो...
भूमि पर दो घड़ी बाद ही गिरेगा !
सुदर्शन चक्र से बचने के लिए शकुनि आकाश में जा पहुंचा ।
हा...हा...हा...
प्रद्युम्न, साम्ब और अर्जुन के बाणों ने उसे आकाश में ही लटकाए रखा । दो घड़ी बीतने पर...
इसके दोनों वरदान भी प्रभावी नहीं रहे । नीचे आने दो...
वरदान पाकर भी शकुनि बच न सका । उसके पापों का फल उसे मिलकर ही रहा ।
वर कैसा भी मिले । पाप का अंत यही होता है ।
— श्रीगर्ग संहिता


भागा जमींदार
काका का बाग दूर-दूर तक प्रसिद्ध था । काका भी बड़े अच्छे थे । अक्सर पप्पू, मोहन, राधा और किशन वहां जाया करते थे...
स्वादिष्ट !!
एकदम ताजे !
इतने मीठे !
मुफ़्त भी !
एक दिन चारों बच्चे बाग में पहुंचे तो...
इसे अंधे कुएं में फेंक दो । हमें खट्टे फल खिलाता है ।
काका को बचाना है ।
जमींदार !
बड़ा दुष्ट !
मगर कैसे ?
बच्चों ने काका को बचाने की सोची । राधा के पिता मछेरे थे और पप्पू के बढ़ई । वे भागे भागे घर गए और...
चारों सिरों पर रस्सियां बांध इन खूंटों से...
मछलियां पकड़ने का जाल । इसे कुएं में लटका दें ।
अंधे कुएं पर जाकर बच्चों ने जाल उसमें लटका दिया । चारों कोनों पर खूंटे गाड़ रस्सियां उनसे बांध दीं ।
जल्दी करो । वे आ रहे हैं ।


रस्सियां बांध बच्चे छिप गए। लठैत आए। काका को कुएं में फेंक कर चले गए। उनके जाते ही...
कुछ ही देर में...
मैं तो समझा था, आखिरी वक्त आ गया। तुम बच्चों ने बचा तो लिया, मगर...
मगर क्या काका ?
काका ने बताया–'मेरे जीवित बचने की खबर मिलते ही जमींदार और बौखला जाएगा। पता नहीं, क्या कर बैठे।'
काका ठीक कहते हैं।
जमींदार को सबक सिखाना होगा।
मगर कैसे ?
एक उपाय है।
काका ने योजना बताई, तो बच्चे उछल पड़े। तुरंत गांव में अफवाह फैला दी...
काका के बाग में कोई भूत आ गया है। कहता है, जमींदार को खाऊंगा।



खबर जमींदार पर पहुंची, तो.....
भूत ! मुझे खाएगा !! हवेली पर पहरा बैठा दो । मेरे पास पांच-छह लठैत...
लगता है सरकार, काका का भूत है ।
भूत के भय से जमींदार ने बाहर जाना छोड़ दिया । एक दिन उसका एक लठैत किसी तांत्रिक को लेकर आया...
मालिक, यह सिद्ध हैं । बाग के भूत को भस्म कर देंगे ।
ऐसा करोगे, तो तुम्हें हवेली दे दूंगा ।
तांत्रिक वहां से सीधा काका के बाग में पहुंचा और...
भाग जा, वर्ना मार डालूंगा !
भूत सिद्धजी को डराता है
फट-फट-फटाफट, आ जा चटापट !
पत्थर भी फेंकता है ।
कई दिन तक यह सब कुछ चलता रहा । तीसरे दिन...
बड़ा विकट भूत था । इस मर्तबान में बंद है । अब हवेली दीजिए ।
हवेली !! उफ, इसे कैसे टालूं ?
पहले भूत को मार दो । फिर..

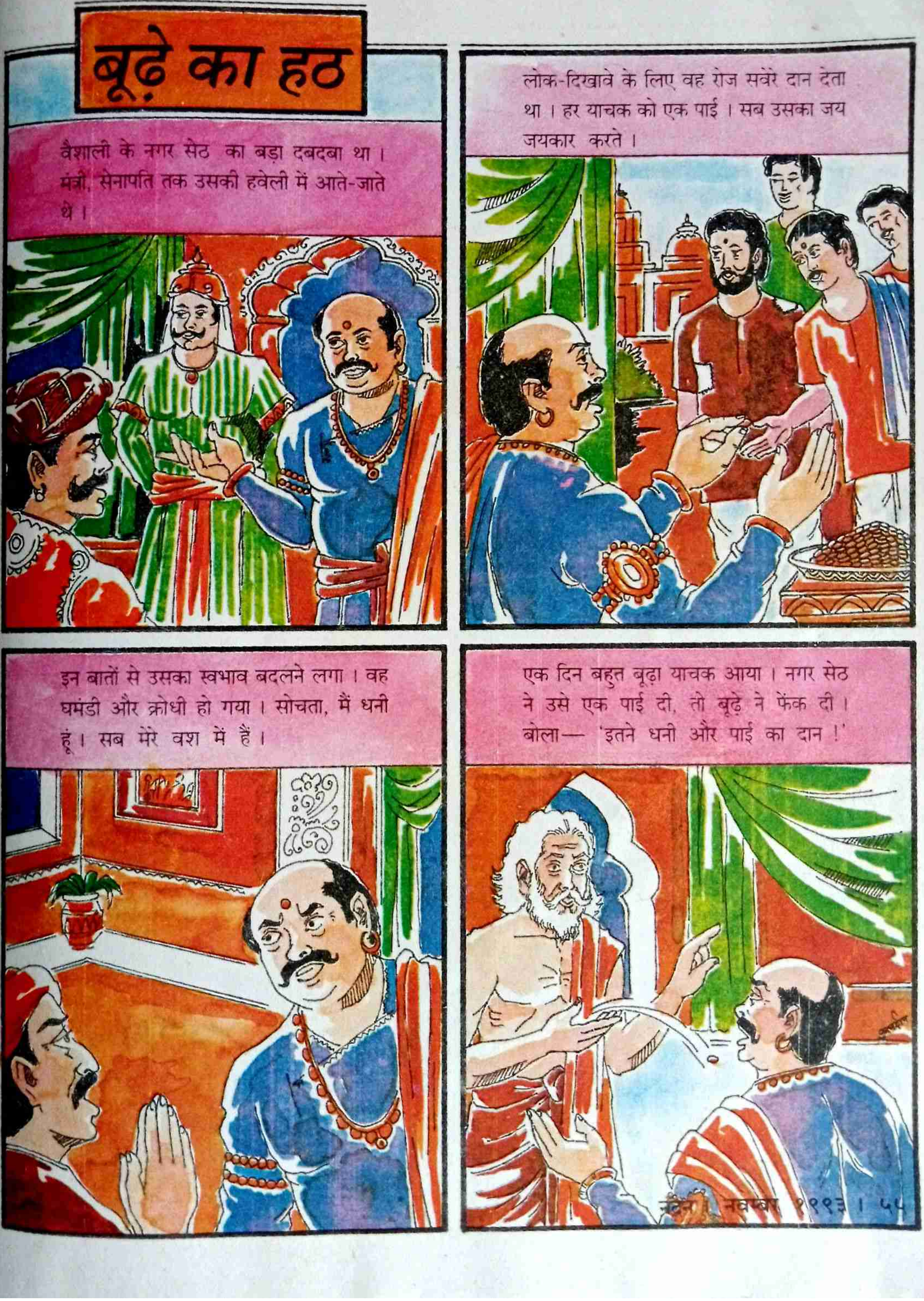


तांत्रिक जमींदार की मक्कारी समझ गया...
मर्तबान मत खोलना। सामान बाहर निकलवा कर मैं हवेली आपको...
न...पहले हवेली। वर्ना मैं छोड़ता हूं भूत को बाहर
और शाम ढले तक...
मुसीबत आई तो सब भाग गए। अरे, किसी से तो रात भर के लिए थोड़ी जगह...
कोई तैयार नहीं है मालिक!
कौन होगा? किसी से बनाकर रखी हो, तब न...
तभी हवेली की ओर से तीन चार लोग भागते आए।
अरे बाप रे! भागो...भागो...
मर्तबान गिर कर फूट गया। भूत निकल भागा। इधर ही आ रहा है मुंह फाड़े
जमींदार दोबारा गांव में नहीं आया, तो एक दिन...
मैंने कैसा नाटक किया सिद्ध का! भाग गया दुष्ट!
हमने भी तो पेड़ पर बैठकर कैसी डरावनी आवाजें निकाली थीं
पत्थर के रंग में रंगकर फल हम ही ने तो बरसाए थे!

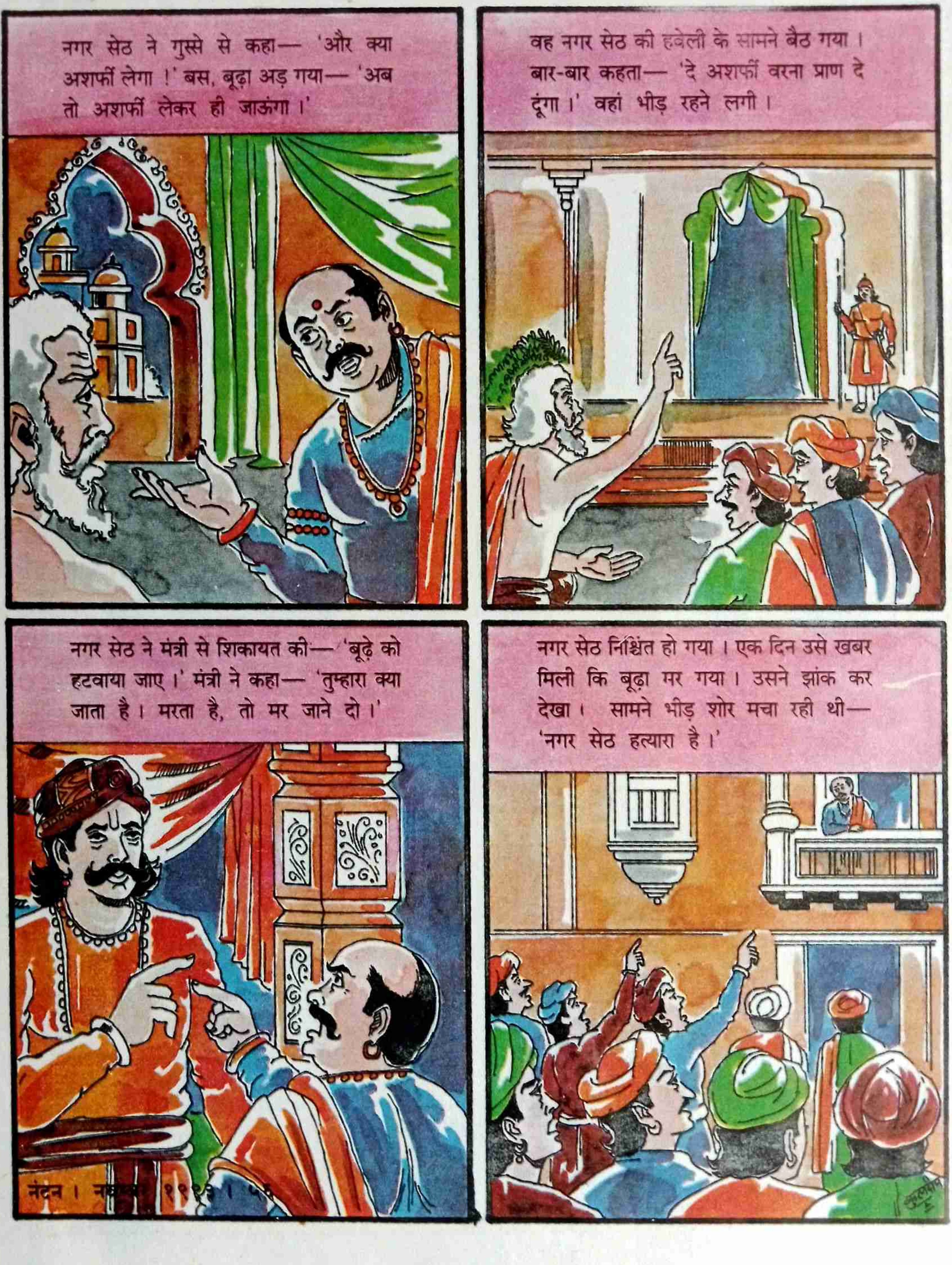
पांच हीरे


गर्मी के दिन थे। दो व्यापारी सामान बेचकर घर लौट रहे थे। रास्ते में पड़ी नदी। दोनों उसमें नहाने लगे। अचानक...
चोर !!
अरे, हमारा सामान...
चुप रहो, वर्ना...
सारा धन उसी में है। हे भगवान !
पिस्तौल देख व्यापारी घबरा गए। तभी उन्हें एक तरकीब सूझी—
ठहरो, सामान ले जाना है, ले जाओ !
हीरा ! कैसा फैसला !!
मगर हमारा फैसला करते जाओ। तुम भी एक हीरा ले लेना
रास्ते में हमें एक थैली मिली। उसमें पांच हीरे थे। थैली मैंने उठाई। इसलिए तीन हीरे खुद रखकर दो इसे देने चाहे...
हम दोनों साथ थे। हीरे बराबर बंटने चाहिएं। आप फैसला करें।
हीरों की बात सुन चोर पत्थर पर बैठ गया।
कहां है वह थैली ?
मैंने नदी में फेंक दी। कहा, जो पहले ढूंढ़े, सारे हीरे उसके...
वही हम ढूंढ़ रहे थे।


चोर की आंखें चमक उठीं। उसने व्यापारियों को धमकाकर वहां से भगा दिया। फिर...
सामान यहां और मैं नदी में। हीरे हाथ लग गए तो पौ बारह !
व्यापारी दूर छिपे यह सब देख रहे थे। इधर चोर ने नदी में डुबकी मारी, उधर व्यापारी उसकी पोटली उतार...
जल्दी चलो। उसे पता चल गया तो...
इतने बदहवास क्यों हो ?
क्या कर लेगा ? उसकी पिस्तौल तो पोटली में है।
मिलने वाला मुखिया था। व्यापारियों ने उसे सारी बात बता दी। कुछ ही देर बाद
बाहर निकलो !
हे भगवान, ये यहां कैसे ?
अपने को हमारे हवाले कर दो।
चोर पकड़ा गया।
तुमने मुझे धोखा दिया। मैं भी लालच में फंस गया...
सांप को ऐसे ही मारते हैं।
हर बुराई का अंत होता है।



बूढ़े का हठ
वैशाली के नगर सेठ का बड़ा दबदबा था। मंत्री, सेनापति तक उसकी हवेली में आते-जाते थे।
लोक-दिखावे के लिए वह रोज सवेरे दान देता था। हर याचक को एक पाई। सब उसका जय जयकार करते।
इन बातों से उसका स्वभाव बदलने लगा। वह घमंडी और क्रोधी हो गया। सोचता, मैं धनी हूं। सब मेरे वश में हैं।
एक दिन बहुत बूढ़ा याचक आया। नगर सेठ ने उसे एक पाई दी, तो बूढ़े ने फेंक दी। बोला— 'इतने धनी और पाई का दान !'



नगर सेठ ने गुस्से से कहा— 'और क्या अशर्फी लेगा !' बस, बूढ़ा अड़ गया— 'अब तो अशर्फी लेकर ही जाऊंगा ।'
वह नगर सेठ की हवेली के सामने बैठ गया । बार-बार कहता— 'दे अशर्फी वरना प्राण दे दूंगा ।' वहां भीड़ रहने लगी ।
नगर सेठ ने मंत्री से शिकायत की— 'बूढ़े को हटवाया जाए ।' मंत्री ने कहा— 'तुम्हारा क्या जाता है । मरता है, तो मर जाने दो ।'
नगर सेठ निश्चिंत हो गया । एक दिन उसे खबर मिली कि बूढ़ा मर गया । उसने झांक कर देखा । सामने भीड़ शोर मचा रही थी— 'नगर सेठ हत्यारा है ।'


नगर सेठ तुरंत मंत्री के पास गया । सारी बात बताई । मंत्री बोला— 'बहुत बुरा हुआ । अब तो मामला राजा के सामने रखना ही पड़ेगा ।'
नगर सेठ को काटो खून नहीं । उसने धन देकर मामले को रफा-दफा कराना चाहा । मंत्री ने कहा— 'सब जान गए हैं, बूढ़ा तुम्हारे कारण मरा । मैं क्या कर सकता हूं ।'
परेशान नगर सेठ हवेली लौटा । देखा, बूढ़ा तो जीता जागता बैठा है । वह तुरंत उसके पास गया । बोला— 'आखिर तुम चाहते क्या हो ?'
'जो चाहता था, मिल गया ।' —बूढ़े ने उत्तर दिया— 'अब तुम समझ गए, धन और शक्ति पर घमंड करना बेकार होता है ।' नगर सेठ का मस्तक झुक गया । वह बदल गया ।

जाने-पहचाने अनजाने

दीमक

को सफेद चींटी भी कहते हैं । मगर चींटी से इसका कोई रिश्ता नहीं । चींटी बर्र और मधुमक्खियों के वर्ग की है । दीमक तिलचट्टा-वर्ग की ।



जरा सा टिड्डा

मगर ऊंची छलांग ! अपने शरीर के अनुपात में इतनी ऊंची, इतनी ऊंची कि वैसे ही अगर मनुष्य उछल पाए तो ८० मंजिली इमारत की छत पर जाकर ठहरे ।



केंचुए

का मुंह इतना छोटा कि दिखाई न दे । एक वर्ष में वह उसी से इतनी मिट्टी खाकर बाहर निकालता है कि चार हाथी एक तरफ, वह मिट्टी दूसरी तरफ !



मोर

की लंबाई सवा दो मीटर । इसमें से डेढ़ मीटर की तो अकेली पूंछ ही होती है । पूंछ पर सुंदर पंख । भला कितने ? लगभग १५० ।



टीम्पू

गिलहरी जैसा बंदर । बंदर-परिवार में सिर्फ यही अपने बच्चों के लिए घोंसला बनाता है ।



पहाड़ी बकरी

मगर कमाल सरकस जैसे । चट्टानी रास्ता, चौड़ाई सिर्फ दो से.मी. । दोनों ओर गहरे खड्ड । फिर भी मस्ती से उसे पार कर जाएगी ।

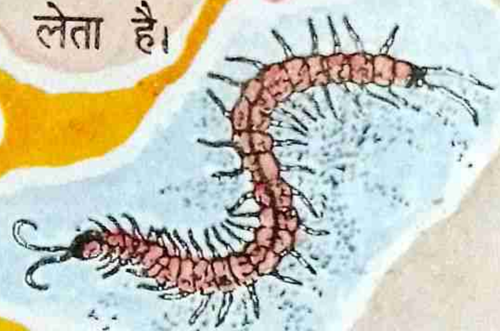


बाज



का तेज नजर के मामले में कोई जवाब नहीं । ८० मीटर की ऊंचाई से धरती पर बैठी अंगुली बराबर टिड्डी को भी देख लेता है।

कनखजूरा



लंबाई ५ से लेकर ३० सेंटीमीटर तक । और टांगें ? १५ जोड़ी से लेकर १७७ जोड़ी तक ।

फलावेला

अर्जेन्टाइना में पाया जाने वाला, दुनिया का सबसे छोटा घोड़ा । ऊंचाई ४० से.मी. से ७५ से.मी. । कुत्ते जितना ऊंचा ।



घोंघे



के मुंह में कितने दांत ?— एक, दो नहीं, पूरे पच्चीस हजार ।

तिलचट्टा

याने काकरोच । कुछ न मिले तो एक महीने तक, पानी मिलता रहे तो दो महीने तक जीवित रहता है । रूखा-सूखा खाने को मिलता रहे, तो पांच महीने बिना पानी के रह सकता है ।



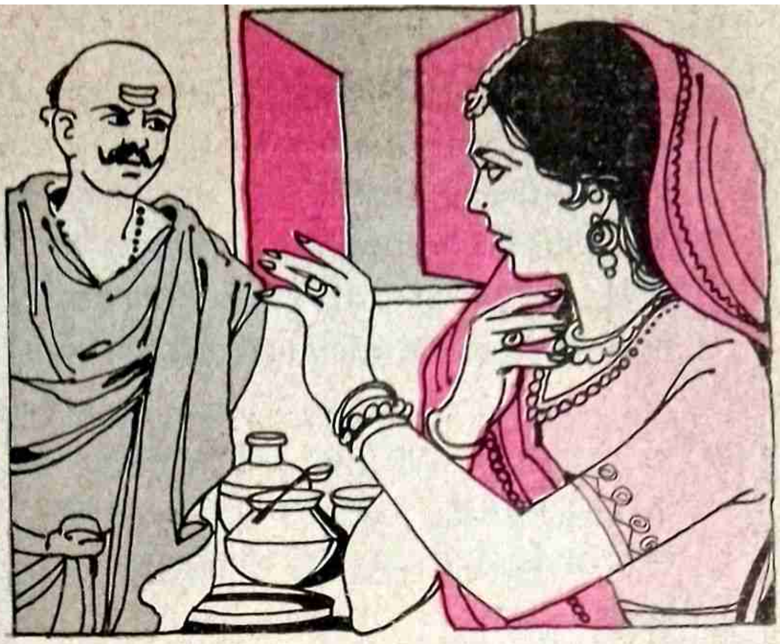
प्रस्तुति : रवि लायटू



मेरा अमूल चॉकलेट चिड़ियाघर
Amul
MILK CHOCOLATE
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
FLAVOURED
Amul
MILK CHOCOLATE
Amul
ORANGE
Amul
MILK CHOCOLATE
CRUNCH
MILK CHOCOLATE
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
Amul
Badambar
अमूल चॉकलेट
प्यार की मीठी भेंट
वितरक–
गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क
मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड
आणंद ३८८ ००१.
DEUS GCMMF/AMC 737 9 93 HIN

बदला-बदला

—यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र'



गोपीचंद था तो पंडित, पर सदा धनवान बनने के सपने देखता था। उसकी खुराक भी बहुत थी। लोग उसे भोजन भट्ट कहते थे।

पंडित को यजमानी से जो धन मिलता, उससे गुजारा मुश्किल से होता था। पंडित के एक बेटा और एक बेटी थी। पत्नी समझदार थी। जब बच्चे खा लेते तो बचा भोजन पंडित के आगे रख देती। पंडित उसे झट खा जाता था।

पंडित आशापुरा का भक्त था। वह रोज आशापुरा मैया की पूजा करके प्रार्थना करता था— 'हे मैया! मुझे अपार धन दे, जिससे मैं सदा आराम से रहूं।'

पंडित को जिस दिन न्योता मिलता, उस दिन वह जल्दी तैयार होता। फिर यजमान के घर पहुंचता। कई बार वह तीन-चार आदमियों का खाना खा जाता था। पतीला भर खीर तो वह बातों ही बातों में उड़ा जाता था।

एक बार सेठ के घर न्योता था। सेठानी ने कहा—"महाराज! तीन पंडितों की रसोई रखी हुई है। मैं मंदिर जा रही हूं। आप स्वयं भोजन परोसकर खा लीजिएगा। मैं आपसे क्षमा मांगती हूं। यदि मैंने भगवान के दर्शन नहीं किए, तो मुझे दिन भर भूखी रहना पड़ेगा।"

पंडित को मुंहमांगी मुराद मिल गई। उत्साह से बोला—"सेठानी जी, आप जाइए। मैं खाना खा लूंगा।"

जाते-जाते सेठानी ने कहा—"हां, यदि दूसरे पंडित आ जाएं, तो उन्हें भी परोस दीजिएगा।"

"बिलकुल परोस दूंगा।"—पंडित तपाक से बोला।

सेठानी के जाते ही पंडित ने सारा भोजन खा लिया। खाली बर्तनों को थालियों से ढक दिया।

थोड़ी देर बाद सेठानी आई। पंडित दक्षिणा लेकर चलता बना।

जब दूसरे पंडित आए, तो सेठानी ने बर्तन देखे। बर्तन तो खाली थे। उसने अपना सिर पीट लिया। फिर किसी तरह दुबारा रसोई तैयार की। पंडितों को खिला-पिलाकर विदा किया।

धीरे-धीरे यह बात चारों ओर फैल गई कि गोपीचंद भोजन भट्ट है। वह तीन-चार आदमियों के बराबर खाना खाता है। लोगों ने उसे न्योता देना ही बंद कर दिया।

पंडित की स्थिति बहुत ही खराब हो गई। वह मिठाई के लिए तरसने लगा। अब वह आशापुरा के सामने घंटों बैठकर पूजा करने लगा। एक दिन आशापुरा मां ने पंडित पर कृपा कर दी। एक बार पंडित के घर एक आदमी आया। उसने पूछा—"पंडित भोजन भट्ट का यही मकान है?"

"जी, हां।"—पंडित ने कहा।

—"आपको सेठ मदनलाल जी ने खाने पर बुलाया है।"

"सच!"—जैसे पंडित को विश्वास नहीं हुआ। उसकी आंखें फैल गईं।

मदनलाल का व्यापार खूब बढ़ा-चढ़ा था, पर वह सनकी स्वभाव का था।

ठीक समय पर पंडित मदनलाल के घर पहुंचा। वहां खूब सारी रबड़ी थी। उस पर केसर और मेवा था। भोजन भट्ट के मुंह में पानी आ गया।

भोजन भट्ट जल्दी से पांव धुलाकर खाना खाने बैठ गया। उसे खाता हुआ देखकर मदनलाल ने सोचा—'यह भाग्य की बात है। मेरे पास सब कुछ है। पर रोगों ने मुझे घेर रखा है। मैं पकवान छू तक नहीं सकता। एक यह भोजन भट्ट है कि खाकर डकार भी नहीं लेता। इस धन ने तो मेरे सारे सुख छीन लिए हैं।'

जब पंडित जाने लगा, तो मदनलाल ने कहा—''पंडित जी! आप बड़े सुखी हैं, आपका जीवन बड़ा अच्छा है। आज मुझे लगा कि मेरा जीवन बेकार है।''

पंडित ने तुरंत जवाब दिया—''सेठ जी! मेरा जीवन नरक है। आप जैसा वैभव हमारे भाग्य में कहां! आपका वैभव मिल जाए, तो मैं सब कुछ छोड़ दूं।''

मदनलाल ने कहा—''मेरी इच्छा है कि आप यह वैभव ले लें और अपना छोटा-सा घर मुझे दे दें।''

''क्या!''—भोजन भट्ट की आंखें फट गईं।

—''मैं सच कह रहा हूं। आप मेरी सारी जमीन-जायदाद ले लीजिए।''

भोजन भट्ट को फिर भी विश्वास नहीं हुआ। जब बार-बार सेठ ने कहा, तो पंडित मान गया। उसे पहली बार महसूस हुआ कि देवी उस पर प्रसन्न है।

निश्चित दिन भोजन भट्ट मदनलाल की हवेली में आ गया। वह धीरे-धीरे भोग-विलास के सागर में डूब गया।

इधर मदनलाल ब्राह्मण के घर आ गया। वहां कुछ भी नहीं था। मदनलाल की पत्नी ने कहा—''मुझे लग रहा है कि हम यहां नहीं रह सकते।''

—''हमें यहां किस चीज की जरूरत है? संतान हमारे है नहीं। धन का हम उपयोग नहीं कर सकते।''

पत्नी को सेठ की बात समझ में आ गई।

अब मदनलाल सुबह उठकर जंगल में जाता। वहां वह अपने गुजारे के लिए एक बगीचे में मजूरी पर



फल तोड़ता था। मेहनत-मजदूरी करने से स्वस्थ हो गया।

एक दिन अचानक मदनलाल को पंडित की याद आई। उसने पत्नी से कहा—''सेठानी! जरा चलकर अपने पंडित को तो देखें।''

वे दोनों पंडित के पास गए। मदनलाल ने पंडित को नमस्कार करके उसकी राजी-खुशी पूछी।

पंडित झुंझलाकर बोला—''सेठ जी! आप अपना वैभव संभालिए। आपके धन ने मेरा खाना-पीना हराम कर दिया है।'' सेठ मुसकराकर रह गया।

पंडित ने पत्नी और बच्चों से कहा—''चलो, अपने घर चलते हैं। इस हवेली के मालिक आ गए हैं।''

इतना कहकर पंडित सपरिवार वहां से चलने लगा, तो सेठ ने पंडित को गुजर-बसर के लिए धन दे दिया।

यह देख, सेठानी हैरान थी। सेठ ने सेठानी को समझाते हुए कहा—''धन उतना ही कमाना चाहिए, जिससे गुजर-बसर हो सके और समय-समय पर गरीब-बेसहारा लोगों की मदद की जा सके। वह धन किस काम का, जिसका उपयोग न हो सके।''

यह सुन, सेठानी ने सिर हिलाया और हवेली में घुस गई। ●

दीवाली की मिठाई

गीता ने सबको बुलवाया,
और उन्हें फिर यह समझाया—
आज हमें है ऐसा करना,
हर घर को खुशियों से भरना।
चुन्नू-मुन्नू तुम भी आओ,
घर-घर यही देखते जाओ।
कोई ऐसा रह ना जाए,
दीप जहां पर जल ना पाए।
दीवाली हो सबकी भाई,
तभी रुचेगी हमें मिठाई।
उछल-उछलकर हम फिर गाएं,
दीवाली के मजे उड़ाएं।

—डा. गिरिजाशंकर त्रिवेदी

रोशनी के फूल

अनगिन छोटे-छोटे सूरज
घर-आंगन, द्वारों पर छाए,
जगर-मगर है नगर-नगर में
फूल रोशनी के उग आए।

सोने की आभा-सी उजली
धरती लगती कितनी सुंदर,
देख रहा सौ-सौ आंखों से
अंधकार में डूबा अम्बर।

नाचो-गाओ, खेलो-कूदो
आज बहुत खुश बूढ़ी ताई,
टूटा बक्सा खोल-खोलकर
बच्चों को दे रही मिठाई।

गरमी-वर्षा विदा हो गए
अब आगे जाड़े आएंगे,
बर्फीले देशों के पंछी
नए-नए गाने गाएंगे।

—रमेश कौशिक



धूम-धमाका

अहा, अनोखी हैं फुलझड़ियां,
नई रोशनी की हैं लड़ियां।
छूट रहे क्या मस्त पटाखे,
सभी ओर हो रहे धमाके।
नभ में जाती दूर हवाई,
इसने अपनी धाक जमाई।
बच्चों को अनार भाते हैं,
ज्यों प्रकाश कण मुसकाते हैं।
जलते हैं ये दीप सलोने,
रोशन करते कोने-कोने।
नाच रही है चक्कर-घिन्नी,
तक-तक घिन्नी, तक-तक घिन्नी।
टिकिया से बन सांप रहे हैं,
अरे, कांप क्यों आप रहे हैं?
चलो छुड़ाएं आतिशबाजी,
दूर करें मन की नाराजी।
आई दीपावली सुहानी,
नाच उठी दीपों की रानी।

— डा. रोहिताश्व अस्थाना

दीप जले

रंग-बिरंगे बल्ब सजे हैं
बल्बों का है बंदनवार,
आंख-मिचौनी सी करते हैं
जलते-बुझते बारम्बार।
फुलझड़ियों की छटा निराली
ठां-ठां करें पटाखे शोर,
जगमग-जगमग ज्योति झलकती
दीप जल उठे चारों ओर।
सभी रास्ते सजे हुए हैं
सजी हुई हैं सभी दुकान,
हंसते-गाते मौज मनाते
बच्चे, बूढ़े और जवान।
पूजन करने बैठ गए सब
रखी बीच में है थाली,
'जय गणेश', 'जय लक्ष्मी' कहकर
मना रहे हैं दीवाली।
मेहमानों को सभी खिलाते
मेवा, फल, मीठे पकवान,
हंस-हंसकर उनको देते हैं
सौंफ, सुपारी, मिश्री, पान।

— डा. वीरेन्द्र शर्मा

मोनिया

बचपन में गांधी जी को घर के लोग 'मोनिया' कहकर पुकारते थे। मोनिया को पेड़ पर चढ़ने में मजा आता था। उसके घर के पास अमरूद का एक पेड़ था। जब भी समय मिलता, वह पेड़ पर चढ़ जाता। उसके बड़े भाई ने जब यह देखा, तो उसे पेड़ पर चढ़ने से रोका। कहा कि देख, अमरूद की शाख बड़ी जल्दी टूट जाती है। किसी दिन टूट गई, तो बहुत चोट आएगी।

लेकिन मोनिया को तो आदत पड़ी हुई थी। एक दिन ज्यों ही पेड़ पर चढ़ा कि भाई पीछे से आ गए। उन्होंने मोनिया का पैर पकड़कर नीचे उतारा और कहना न मानने पर दो-तीन चांटे कसकर जमा दिए।

मोनिया रोता हुआ घर आया। सीधा मां के पास जाकर बोला— "मां, भाई ने मुझे मारा है।"

मां ने मोनिया की बात सुनकर हंसते हुए कहा— "भाई ने तुझे मारा, तो तू उसे मार।"

मां का इतना कहना था कि मोनिया गम्भीर हो गया। बोला— "मां, तू कैसी है! वह मेरे बड़े भाई हैं और तू मुझे उनको मारने के लिए कहती है! नहीं-नहीं, यह मुझसे नहीं होगा। मैं उन पर हाथ नहीं उठा सकता।"

मां ने तो यों ही सहज भाव से मारने की बात कह दी थी। जब उसने मोनिया के मुंह से यह सुना, तो उसकी आंखें छलछला आईं। मोनिया को सीने से लगाकर बोली— "मोनिया, तू एक दिन बहुत बड़ा आदमी बनेगा।"

मां की भविष्यवाणी सच निकली।



काम छोटे बड़े



किसी नगर में एक व्यापारी रहता था। उसके पास सब कुछ था। बड़ी हवेली थी। धन-सम्पत्ति थी। नौकर-चाकर थे। भरा-पूरा परिवार था। बस दुःख था तो एक। उसे रात में नींद नहीं आती थी। आंख लगती, तो भयंकर सपने आते। बहुतेरा इलाज किया, लेकिन रोग दूर नहीं हुआ।

एक दिन एक साधु आए। बहुत पहुंचे हुए थे। लोगों का दुःख-दर्द दूर कर देते थे।

व्यापारी जाकर उनसे मिला। उन्हें अपनी विपदा सुनाई। विनती की— "महाराज, जैसे भी हो, मेरा कष्ट दूर कीजिए।"

साधु ने कहा— "तुम्हारे रोग का कारण एक है। तुम अपंग हो।"

व्यापारी ने विस्मय से कहा— "स्वामी जी, यह आप क्या कह रहे हैं! मेरे तो हाथ-पैर सब ठीक हैं।"

साधु हंसकर बोले— "जिसके हाथ-पैर नहीं होते, वह तो अपंग होता ही है, लेकिन असली अपंग वह है, जो हाथ-पैर होते हुए भी उनका इस्तेमाल नहीं करता। बोलो, तुम हाथ-पैरों से कितना काम लेते हो?"

व्यापारी क्या जवाब देता! वह तो हर छोटे-बड़े काम के लिए नौकरों पर निर्भर रहता था।

साधु ने कहा— "अगर तुम अपने रोग से छुटकारा पाना चाहते हो, तो हाथ-पैरों से इतनी मेहनत करो कि थककर चूर हो जाओ। तुम्हारी बीमारी दो दिन में दूर हो जाएगी।"

व्यापारी ने यही किया। अगले दिन ही उसे इतनी गहरी नींद आई कि वह चकित रह गया।

शिकायत

सूफी संतों में एक बड़ी ऊंची संत हुई हैं। उनका नाम था राबिया। वह बड़ी सादगी से रहती थीं और सबसे प्रेम करती थीं।

एक दिन एक लड़का उनके पास आया। उसके सिर पर पट्टी बंधी थी। बहुत परेशान था।

राबिया ने पूछा— "क्या बात है?"

लड़का बोला— "क्या बताऊं! मारे दर्द के सिर फटा जा रहा है। इतना दर्द तो आज तक कभी हुआ नहीं।"

राबिया ने पूछा— "तुम कितने साल के हो?"

उसने जवाब दिया— "अठारह साल का।"

राबिया ने कहा— "तुम कैसे हो भाई। ईश्वर ने अठारह साल तक कभी इतना दर्द नहीं दिया। इसके लिए तुमने कभी धन्यवाद की पट्टी नहीं बांधी। आज दर्द हो गया, तो शिकायत की पट्टी बांध ली!"

युवक शर्मिंदा होकर चला गया।



नादान भाई



एक किसान था। वह बड़ा भला और मेहनती था। उसके खेतों में अच्छी फसल उगती और घर के लोग चैन से रहते। वह पड़ोसियों की बराबर मदद करता।

किसान के दो लड़के थे। बड़ा बहुत चतुर था। छोटा सीधा-सादा था। किसान उनसे कहा करता था— "याद रखो, जैसा बोओगे, वैसा ही काटोगे।"

किसान बूढ़ा हुआ, तो उसने अपना सारा पैसा दोनों लड़कों को दे दिया। कुछ दिन बाद वह मर गया।

बाप के मर जाने पर बड़े लड़के ने अपने पैसे से बढ़िया बीज खरीदे और खेत में बो दिए। ऐसी फसल उगी कि वह मालामाल हो गया।

छोटे भाई को याद आया कि पिता ने कहा था— 'जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।' इसलिए उसने अपने सारे रुपए खेत में बो दिए। उम्मीद करने लगा कि रुपयों की फसल उगेगी। लेकिन काफी समय बीत जाने पर भी उसकी आशा पूरी नहीं हुई। वह बहुत परेशान रहने लगा।

बड़े भाई ने उसकी परेशानी देखी, तो कारण पूछा। मालूम होने पर वह अपने भाई की नादानी पर खूब हंसा। उसने कहा— "मेरे भोले भाई, कहीं रुपयों की भी खेती होती है।"

वह छोटे भाई को खेत पर लेकर गया। सारे रुपए खेत में से इकट्ठे कराए। अच्छे बीज खरीदवाए, उन्हें बो दिया। समय आने पर अच्छी फसल हुई। उसने भी अच्छा पैसा कमाया।

अब छोटे भाई ने समझा कि आदमी को अक्ल से काम लेना चाहिए। पिता ने जो कहा था, उसका मतलब था कि दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करोगे तो तुम्हें अच्छाई मिलेगी। बुरा व्यवहार करोगे, तो बुराई मिलेगी। ●

दो में एक

—डा. रंजना अग्रवाल

एक था राजा । नाम था संग्रामसिंह । उसके तीन बेटे थे —दयासिंह, वीरसिंह और सुजानसिंह । वे तीनों अपने पिता का बहुत आदर करते थे ।

एक दिन दर्पण देखते हुए राजा को अपने कुछ सफेद बाल दिखाई पड़े । राजा चौंक गया —'ओह, मैं बूढ़ा होने लगा हूं । फिर बुढ़ापे के बाद मौत...' यह सोचकर ही उसका दिल बैठने लगा । अब तो हर समय सोते-जागते उसे यही चिंता रहती थी कि वह बूढ़ा हो रहा है और एक दिन मर जाएगा । मंत्री ने राजा से उदासी का कारण पूछा, पर वह चुप रहा. । बेटों ने उसकी उदासी का कारण जानना चाहा, परंतु उन्हें भी उत्तर में मौन ही मिला । राजा आखिर कहे भी तो क्या ?

एक रात राजा ने स्वप्न देखा कि वह एक सुरंग में है । अद्‌भुत सुरंग थी वह । उसकी दीवारों पर दोनों ओर दर्पण लगे थे । उसने एक दर्पण में अपना चेहरा देखा । उसे फिर अपने सफेद बाल दिख गए । राजा उदास हो गया । आगे बढ़ा । दूसरे दर्पण में देखा —'अरे, मेरे चेहरे पर झुर्रियां !' अगले दर्पण में झांका । यह क्या ! अजीब जादुई दर्पण थे वे । हर दर्पण में देखने के साथ ही उसके बालों की सफेदी बढ़ जाती । झुर्रियां कुछ और गहरी हो जातीं ।

वह घबरा गया । घबराकर लौटने ही वाला था कि उसकी नजर सुरंग के अंत में लगे दर्पण पर पड़ गई । उस दर्पण में देखते ही उसके बालों की सफेदी मिट गई । झुर्रियां गायब हो गईं । वह फिर से जवान हो गया था । इसके साथ ही उसकी आंख खुल गई । शेष रात उसने करवट बदलते ही काट दी ।

प्रातःकाल उसने अपने बेटों को बुलाया । स्वप्न के बारे में बताया और कहा —"अवश्य ही ऐसा कोई जादुई दर्पण होगा, जो बुढ़ापा दूर कर दे । मैं मरना नहीं चाहता । मैं बूढ़ा भी नहीं होना चाहता । तुम मेरे लिए वह दर्पण खोजकर लाओ ।"



बेटों ने उसे बहुत समझाया कि ऐसा कोई दर्पण कहीं नहीं होता । यह केवल उसका भ्रम है, पर सब व्यर्थ । राजा किसी की कोई बात सुनने को तैयार न था । उसकी तो बस एक ही रट थी —'मुझे वह दर्पण चाहिए । मैं मरना नहीं चाहता । मैं बूढ़ा नहीं होना चाहता ।'

आखिर बेटे चल दिए दर्पण की खोज में । परंतु ऐसा दर्पण भला कहां मिलता ! वे बेचारे भटकते रहे । एक नगर से दूसरे नगर । एक गांव से दूसरे गांव । दिन बीते, सप्ताह और फिर महीने भी । उनकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें ?

इसी प्रकार भटकते-भटकते वे एक साधु की कुटी पर जा पहुंचे । साधु बाबा कुटी के बाहर ही ध्यान मग्न थे । तीनों उन्हें प्रणाम करके वहीं बैठ गए । थोड़ी देर बाद साधु बाबा का ध्यान टूटा । तीनों ने उन्हें फिर प्रणाम किया । साधु बाबा ने उन्हें आशीर्वाद दिया और पूछा —"तुम लोग कौन हो ? कुछ चिंतित से लगते हो । क्या बात है ?"

तीनों ने अपना परिचय दिया । सारी बात साधु को बता दी और कहा —"हम समझते हैं बाबा कि ऐसा कोई दर्पण नहीं होता । समय के साथ सब पर बुढ़ापा आता है । मगर पिता जी को यह समझाए कौन ? वह तो किसी की कोई बात सुनना ही नहीं चाहते ।"

"तुम्हारे पिता जी सच कहते हैं । उनका यौवन

वापस आ सकता है।'' —साधु ने कहा।

''सच !'' —तीनों के चेहरे खिल गए। ''क्या उपाय है ? क्या आप हमें बता सकते हैं ?''

''मैं तुम्हारे पिता जीका यौवन वापस ला सकता हूं। परंतु क्या तुम उसका मूल्य चुका सकोगे ?'' —साधु ने पूछा।

''हम अपने पिता जी की प्रसन्नता के लिए अपने प्राण भी दे सकते हैं।'' —दयासिंह व सुजानसिंह ने कहा।

''प्राण नहीं, मुझे तुम्हारा यौवन चाहिए। मेरे पास एक दर्पण है। मैं तुम्हारे यौवन से औषधि बनाऊंगा। उसे खाकर उस दर्पण में देखने से तुम्हारे पिताजी का यौवन वापस आ जाएगा। क्या तुम लोग अपने यौवन का त्याग कर सकोगे ?'' —साधु ने कहा।

''हम तैयार हैं।'' —तीनों ने एक स्वर से कहा।

''तो ठीक है, आओ मेरे साथ।'' —कहकर साधु उन तीनों को कुटी के अंदर ले गया और उनके चेहरों पर एक लेप लगा दिया। देखते-देखते वह लेप सूखने लगा और लेप के सूखते ही उनके चेहरों पर झुर्रियां उभर आईं।

फिर साधु ने राजा के पास संदेश भेजा —'बुढ़ापा दूर करने वाला दर्पण मिल गया है। आप आकर ले जाएं।' राजा यह सुनकर फूला न समाया। तुरंत साधु की कुटी पर जा पहुंचा। साधु बाबा कुटी के बाहर ही बैठे थे। राजा ने साधु को प्रणाम किया।

''चिरायु हो !'' —साधु ने आशीर्वाद दिया। फिर कहा —''मैं आपका यौवन वापस ला सकता हूं, परंतु उसके लिए आपको कुछ त्याग करना पड़ेगा।''

राजा तो यौवन पाने की प्रसन्नता में अंधा हो रहा था। उसने यह भी पूछने की आवश्यकता नहीं समझी कि क्या त्याग करना है ? तुरंत उत्तर दिया —''हां-हां, क्यों नहीं, मैं बुढ़ापे से बचने के लिए कुछ भी त्याग कर सकता हूं।''

''तो ठीक है। मेरे पास एक दर्पण है। मैं आपके लिए एक औषधि बनाता हूं। उसे खाकर आप उस दर्पण में देखेंगे, तो आपका यौवन वापस आ जाएगा। तब तक आप अपने बेटों से बातें कीजिए।'' —कहकर साधु ने तीनों बेटों को बुलाया। उन्हें देखकर तो राजा अवाक् रह गया।

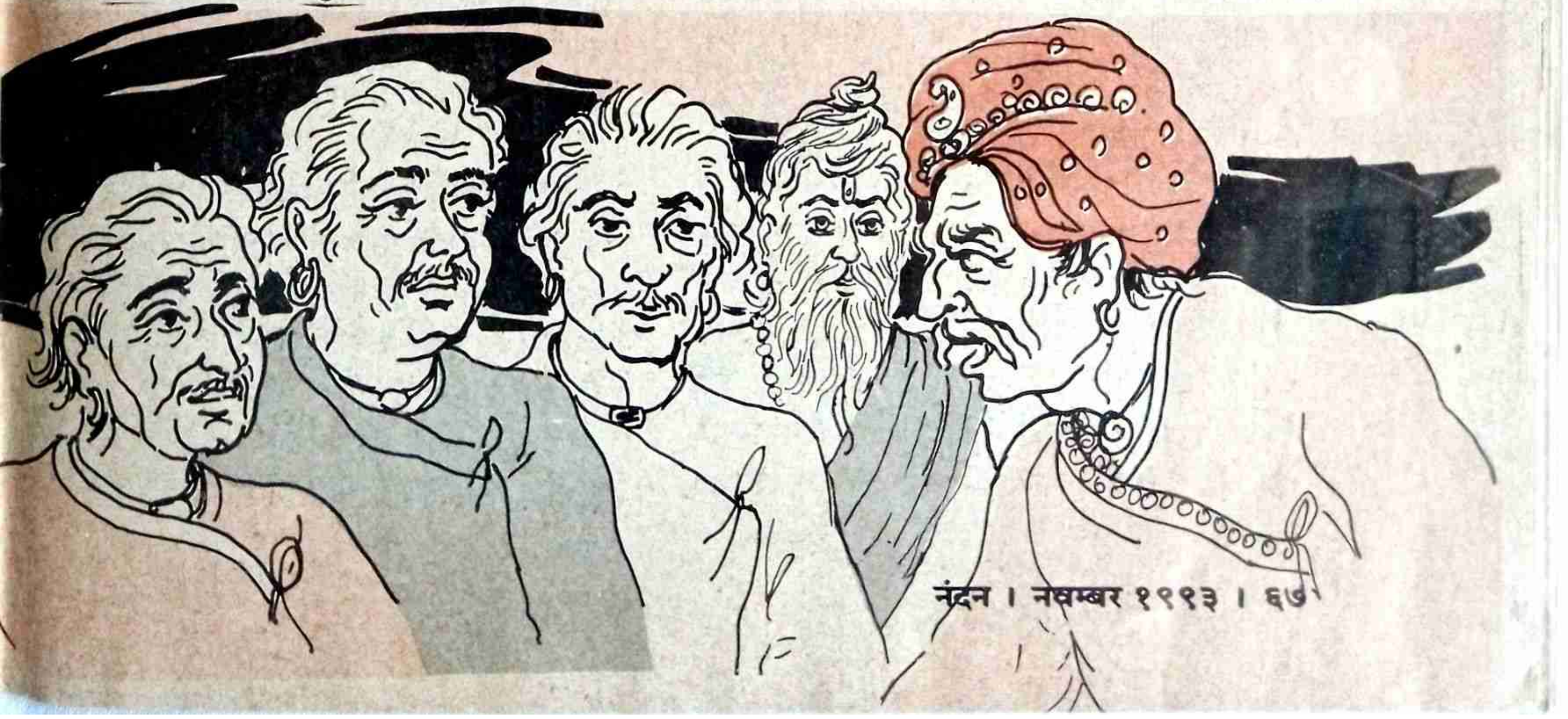
''इन्हें क्या हो गया है साधु महाराज ?'' —राजा ने परेशान होकर पूछा।

''इन्होंने आपके लिए अपने यौवन का त्याग कर दिया है। उससे मैं आपके लिए औषधि बनाऊंगा।'' —साधु ने कहा।

राजा को काटो तो खून नहीं।

''नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। इनका यौवन लेकर मैं अपना यौवन वापस नहीं ले सकता।'' —राजा बोला।

''मगर इन्होंने तो अपनी इच्छा से अपना यौवन दान किया है। फिर आपने भी कहा था कि यौवन पाने





के लिए आप कुछ भी त्याग कर सकते हैं ।'' —साधु ने कहा ।

राजा को अब जैसे होश आया । बोला —''नहीं साधु महाराज, इनकी कीमत पर मुझे यौवन नहीं चाहिए ।''

—''परंतु अन्य कोई उपाय नहीं है आपका यौवन वापस लाने का ।''

''न सही, मुझे कुछ नहीं चाहिए । मैं अपना राजपाट, धन-वैभव सब-कुछ आपको देने के लिए तैयार हूं । आप इन्हें पहले जैसा बना दें ।'' —राजा ने कहा ।

साधु हंस पड़ा —''अधीर न हों राजन । इन्हें मैं पहले जैसा बना दूंगा । मुझे राजपाट, धन-दौलत कुछ भी नहीं चाहिए । चाहिए तो सिर्फ आपकी यौवन पाने की इच्छा का त्याग । कहिए, आप इस इच्छा का त्याग कर सकेंगे ?'' —साधु ने पूछा ।

''हां ।'' —राजा अधीर हो रहा था ।

साधु बेटों को कुटी में ले गया । उनके मुंह धुलवाए । वे पुनः पहले जैसे हो गए थे । उन्हें लेकर साधु बाहर आया । बेटों को देखकर राजा की जान में जान आई ।

''हमें दुःख है पिता जी, हम आपकी इच्छा पूरी न कर सके ।'' —बेटों ने कहा ।

राजा मुसकराए —''दुखी न हो । तुमने मेरी इच्छा पूरी कर दी है । मुझे मेरा यौवन वापस मिल गया है । वह तुम्हीं तो हो ।''

बेटों के चेहरों पर भी मुसकराहट आ गई । ●

धनवान मछुआ

—रवींद्र भारतीय

एक बार एक मछुआ नदी में जाल डालकर मछली पकड़ रहा था । तभी उसे पूरब की ओर कुछ दूरी पर धूल उड़ती दिखाई दी ।

मछुए ने एक टीले पर चढ़कर देखा—कोई राजा अपनी सेना लिए चला आ रहा है । मछुआ समझ गया कि अवश्य ही यह हमारे राज्य पर चढ़ाई करने आ रहा है ।

वह अपनी जान बचाने का उपाय सोचने लगा । सहसा उसके मन में एक विचार आया । उसने जल्दी से अपने जाल को एक झाड़ी में छिपा दिया । नदी से मिट्टी निकाल कर सारे शरीर में लपेट ली । आसन लगाया और आंखें बंदकर, पेड़ के नीचे बैठ गया ।

थोड़ी देर बाद राजा अपनी सेना सहित वहां से निकला । राजा ने उसे देखकर सोचा कि कोई पहुंचे हुए महात्मा तपस्या कर रहे हैं । अतः राजा हाथी से उतरा । महात्मा के पास जाकर हाथ जोड़कर प्रणाम किया । कुछ सोने के सिक्के अर्पित कर, वापस आकर हाथी पर बैठ गया ।

राजा को ऐसा करते देख, उसकी समस्त सेना ने भी ठीक वैसा ही किया । सभी ने दो-दो, चार-चार चांदी-सोने के सिक्के भी चढ़ाए । इस तरह उसके सामने धन का ढेर लग गया । जल्दी ही राजा की सेना काफी दूर निकल गई । तब उस साधु वेशधारी मछुए ने आंखें खोलीं । ढेर सारा धन देखकर, वह चकित रह गया ।

वह सोचने लगा—'आज तक मैं व्यर्थ में ही पाप करता रहा । मात्र ईश्वर की भक्ति का स्वांग करने पर ईश्वर की मुझ पर इतनी कृपा हुई है, यदि मैं वास्तव में भगवान के भजन में लग जाऊं तब तो मेरा उद्धार ही हो जाएगा ।'

यही सोचकर उसने अपना जाल निकाला और तोड़कर फेंक दिया । उसी दिन से ईश्वर-भक्ति में जुट गया । ●

बाल भवन की सैर

—डा. मधु पंत

एक थी शैतानों की टोली । इस टोली के असली दिग्गज थे अजय, बंटी, प्रकाश, विशाल, अनु, प्रिया, सोनिका और मीरा । क्लास में रोज नई-नई खुराफातें और शैतानियां सोचना और करना इनका काम था । क्लास ही नहीं, मुहल्ले में भी इनके मारे नाकों दम था । आठों की जोड़ी इतनी मशहूर हो गई थी कि लोगों ने इनका नाम ही 'अष्ट ग्रह' रख दिया था ।

इन आठों के माता-पिता बड़े चिंतित थे कि कैसे इन सबको सही राह पर लाया जाए, पर उन्हें कोई उपाय नहीं सूझता था ।तब सबने मिलकर सोचा कि क्यों न इन आठों को बुलाकर उनसे ही बात की जाए । तो भई हो गया एक मीटिंग का आयोजन । आठों मित्र बड़े चक्कर में थे कि आखिर इस मीटिंग का प्रयोजन क्या है ? अभिभावकों ने अपनी बातें रखीं ।

बातें सुनकर प्रकाश ने कहा—''हमें पढ़ना तो अच्छा लगता है, पर स्कूली पढ़ाई बड़ी ऊबाऊ लगती है । उसमें मजा नहीं आता ।''

विशाल बोला—''कभी हमारा खेलने का मन करता है, कभी कुछ नए प्रयोग करने का मन करता है, पर किताबी बातें नहीं रुचतीं ।''

अजय बोला—''नाटक, गीत, संगीत कुछ भी तो नहीं है स्कूल में ।''

अनु ने कहा—''नृत्य का आनंद, ताल में थिरकते पैर . . . ये सब स्कूल में कहां ?''

मीरा बोली—''मुझे अपने मन से सब काम करने अच्छे लगते हैं । जब मन करे चित्र बनाऊं,जब मन करे नाचूं-गाऊं ।''

बंटी, जो खाने का शौकीन था, बोला—''मेरा तो मन करता है-कोई मुझे खाना बनाना सिखाए ।''

सोनिका ने कहा—''मेरा तो ऊंची उड़ान भरने, विज्ञान के मॉडल बनाने, सैर-सपाटा करने का मन करता है ।''

''और मुझे ये रटे-रटाए प्रश्न, बंधे-बंधाए उत्तर लिखने भी अच्छे नहीं लगते । कोई नयापन नहीं । न कोई हास्य, न कोई व्यंग्य । सब कुछ बेमजा ।''—प्रिया ने कहा ।

यह सुन अजय ने कहा—''असल में हम भी पढ़ना चाहते हैं । नम्बर भी अच्छे लाना चाहते हैं, पर कुछ समय तो ऐसा हमें मिले, जब हमें कुछ भी करने की खुली छूट हो ।''

''हां, किसी काम को करने की मनाही नहीं, कोई होम वर्क नहीं, बस्ता नहीं, कोई स्कूली किताब नहीं ।''—अनु बोली ।

तो भई बातें चलती रहीं, पर कोई हल नहीं निकला । इत्तफाक से उस मीटिंग में मैं भी बैठी थी । मैंने कहा—''अगर तुम्हें ऐसी जगह मिले, जहां तुम अपने मन से सब काम जब चाहे कर सको, तो ऐसी जगह का पता मैं दे सकती हूं ।''

''फिर तो हम पढ़ाई भी करेंगे । होम-वर्क भी करेंगे । परीक्षा भी देंगे और बहाने भी नहीं बनाएंगे ।'' —आठों ने कहा ।

मैंने उन्हें बताया—''वह जगह है बाल भवन—यानी तुम्हारी अलबेली दुनिया । हर बच्चे की जगह । जहां जो भी बच्चा चाहे आ सकता है और अपने मन का काम कर सकता है ।''

''बाल भवन में बच्चों की तुलना नहीं होती । वहां यह माना जाता है कि हर बच्चे में कुछ न कुछ प्रतिभा होती है । कोई बच्चा खेल सकता है । कोई गा सकता है । कोई अभिनय कर सकता है ।''

सभी भौंचक्के होकर मुझे देख रहे थे ।

–''जानते हो, बाल भवन किसका सपना था जो आज सच्चाई है ? यह सपना था बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू का । बाल भवन की यह क्यारी उन्हीं की लगाई क्यारी है और तुम्हारी तरह के रंग-बिरंगे खुशबू देने वाले फूल इसे महकाते हैं . . .सुंदर बनाते हैं ।''

उन आठों ने बाल भवन की सैर की . . . सैर ही नहीं, वहां के सब कामों में भाग भी लिया । उन सभी के साथ तुम भी बाल भवन की सैर करो । ●

खोट पर चोट

—ईश्वरलाल प. वैश्य

वह अजमेरी गेट से कृष्णा नगर तक अपनी टैक्सी जीप चलाता था। दस-बारह सवारियों को एक साथ ले जाता। उनसे एक रुपया किराया लेता था।

एक दिन जीप कृष्णा नगर के स्टैंड पर पहुंचने ही वाली थी कि कंडक्टर ने पीछे से अगली सीट पर बैठे यात्रियों से किराया मांगा। तीनों यात्रियों से तीन रुपए उसके हाथ में आ पड़े। थैली में रखने के पहले उसने रुपयों को देखा। उनमें एक रुपया खोटा था। कंडक्टर ने दो रुपए थैली में रखते हुए खोटे रुपए को उन यात्रियों की ओर बढ़ाया। उसने कहा—"यह रुपया खोटा है। कृपया इसे बदल दें।"

लेकिन तीनों यात्रियों में से एक भी उस रुपए को वापस लेने को तैयार नहीं हुआ। तीनों एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। जब कंडक्टर ने जोर देकर दुबारा कहा, तब तीनों ने फिर खोटा रुपया लेने से मना कर दिया और बस से उतर गए।

ड्राइवर बोला—"रहने दो, एक रुपए के लिए बाबू जी झूठ थोड़े ही बोलेंगे।"

शाम को गोपाल ने अपनी पत्नी को यह घटना सुनाते हुए कहा—"आज गजब हो गया। तीन रुपयों में एक रुपया खोटा था, लेकिन किसी ने कबूल नहीं किया कि यह रुपया मेरा है।"

"वह रुपया तुम्हारा तो नहीं था?"—पत्नी ने पूछा।

—"मेरा नहीं था। होता भी तो मैं कबूलने वाला नहीं था। क्योंकि दूसरा रुपया मेरे पास था भी नहीं। फिर तुमने यह कैसे मान लिया कि वह खोटा रुपया मेरा ही था?"

"हो सकता है, आपका न हो। लेकिन यदि आपका ही हुआ तो? आप उसको दूसरा रुपया दे आना।"—पत्नी बोली।

—"अच्छा, कल सबेरे दे आऊंगा।"

"कंडक्टर मुझे ऐसे देख रहा था, मानो खोटा रुपया मैंने ही उसे दिया हो। लेकिन मैं निर्दोष था।"—राकेश ने अपने मित्र से कहा।

"नहीं, सचाई वह होती है, जो दुनिया जानती है। तुमने चोरी नहीं की, लेकिन यदि चोरी का माल तुम्हारे घर में हो, तो लोग तुम्हें चोर मानेंगे ही।"—मित्र ने कहा।

—"वह रुपया मेरा भी हो सकता है। लेकिन मैंने जान-बूझकर कंडक्टर को नहीं दिया था। कल मैं उसे दूसरा रुपया दे आऊंगा।"

"तुमने आज सबेरे मुझे खोटा रुपया दिया था?"—महेश ने अपनी पत्नी से कहा।

—"मेरे पास एक महीने से पड़ा था। कोई



लेता ही नहीं था। लेकिन तुमने दिन में ही चला दिया।''—पत्नी बोली।

महेश काफी खुश था। रात में उसे नींद भी अच्छी आई। सुबह उठा,तो उसकी सड़क पर टहलने की इच्छा हुई।

महेश कुछ दूर ही गया था कि सामने की ओर उसे कल वाली जीप दिखाई दी। उसने देखा—दो व्यक्ति उसके ड्राइवर से उलझ रहे थे।

महेश जीप के नजदीक पहुंचा, तो देखा कि ये तो कल वाले उसके दोनों सहयात्री ही थे।

ड्राइवर उनसे कह रहा था—''आप लोग चिंता मत करो। खोटा रुपया मैंने नाली में फेंक दिया।''

''लेकिन भाई, मैं कहता हूं कि वह मेरा था।''—एक यात्री बोला।

''नहीं, नहीं, मेरा था।''—दूसरे यात्री ने कहा।

ड्राइवर ने महेश से कहा—''लो, ये तीसरे सज्जन भी यही कहेंगे। मेरे पास एक ही रुपया खोटा आया था। वह मैंने नाली में फेंक दिया।''

महेश समझ नहीं पा रहा था कि यह हो क्या रहा है। 'क्या मैं जान-बूझकर धोखा देने के बाद अपनी गलती स्वीकार नहीं कर सकता?' —उसने सोचा। उसका मन उसे धिक्कार रहा था। वह सहसा बोल उठा—''चलो, हम तीनों मिलकर ड्राइवर को एक रुपया दे देते हैं।''

''बहुत अच्छा, लेकिन चौंतीस पैसे मैं दूंगा और तुम दोनों तेंतीस, तेंतीस देना।''—गोपाल ने कहा।

''नहीं, नहीं! चौंतीस मैं ही दूंगा।''—महेश ने दृढ़ता से कहा।

ड्राइवर बहुत खुश था। वह सोचने लगा—यदि कल मैं उस खोटे रुपए को बदलवाने के लिए जिद करता, तो रुपया न मिलता। तीनों यात्रियों में झगड़ा भी होता। लोग तमाशा देखते। उसने कहा—''चलो, आपके एक रुपए के साथ एक रुपया मेरा भी। हम सब मिलकर इन दो रुपयों की सामने चाय पी लेते हैं।'' यह सुन, सब खुश थे।●

गरीब मेहमान

— शांता ग्रोवर



एक गरीब किसान था भीखू। अचानक उसे बीमारी ने आ घेरा। वैद्यों ने बीमारी असाध्य बताई। भीखू की हिम्मत टूट गई। उसने सोचा— 'मैं बीमारी के कारण घर वाली को क्यों परेशान करूं? क्यों न मैं अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर लूं?' यह सोच वह विचारों की दुनिया में खो गया।

अगले दिन पत्नी के काम पर चले जाने के बाद भीखू उठा। रसोई में जाकर चावलों में विष मिलाकर खाने की सोचने लगा। तभी उसे ध्यान आया कि इस तरह तो पत्नी मुसीबत में पड़ सकती है। यह सोचकर, उसने चावलों को एक पोटली में बांधा। घर से दूर सुनसान जगह की तलाश में निकल पड़ा।

भीखू एक जंगल में पहुंचा। वह एक जगह बैठ गया। पोटली खोली। चावल खाने के लिए उसने हाथ बढ़ाया ही था कि एक मदमस्त हाथी चिंघाड़ता हुआ झाड़ियों से बाहर आया। उसने सूंड से पोटली उठाकर मुंह में डाल ली। जहर ने असर दिखाया। हाथी वहीं ढेर हो गया। भीखू दंग रह गया।

तभी भीखू को कुछ सैनिक उधर आते दिखाई दिए। सैनिक जब पास आए, तो हाथी को मरा देख खुशी से चिल्लाने लगे। एक सैनिक भीखू से बोला— ''भैया, आपने कमाल कर दिया। एक पागल हाथी को मार गिराया। चलिए राजा के पास।'' फिर सैनिक भीखू को राजा के पास ले गए।

सैनिकों ने सारी बात राजा को बताई। राजा प्रसन्न होकर भीखू से बोला—"तुम बहुत बहादुर हो। तुमने हाथी को मार गिराया, जो कई लोगों की जान ले चुका था। मैं तुम्हें अपना सेनापति बनाता हूं।"

यह सुनते ही दरबारियों में हलचल मच गई।

एक दरबारी बोला— "महाराज, अभी एक चीता भी हम सबके लिए खतरा बना हुआ है। जब तक चीता नहीं मारा जाता, तब तक नगरवासी अपने को सुरक्षित महसूस नहीं करेंगे।"

राजा बोला— "तुम ठीक कहते हो।" फिर वह भीखू से बोला— "भाई, तुम्हें अपनी बहादुरी का एक और नमूना दिखाना होगा। तभी तुम सेनापति बन सकोगे। नगर में एक चीते का आतंक छाया है। तुम उसे मार गिराओ।"

भीखू से अब चुप नहीं रहा गया। वह बोला— "महाराज, मैं बहादुर नहीं हूं। मैं बहुत कायर हूं।"

राजा हैरानी से बोला— "कायर! वह भला कैसे?"

"महाराज, दरअसल मैं अपनी बीमारी से परेशान था। एक दिन मैं आत्महत्या करने के लिए घर से निकला। जंगल में मैंने विष भरे चावलों की पोटली खोली, तो हाथी ने आकर वह पोटली झपटकर खा ली। वह हाथी चावल खाने से मरा था। भला मैं वीर कहां से हुआ?"— भीखू बोला।



"भीखू, मैं तुम्हारी बातें सुनकर बहुत खुश हूं। चाहे हाथी किसी भी तरह मरा हो, लेकिन वह मरा तो तुम्हारे कारण ही। इसलिए तुम चीते को भी मार गिराओ।"— राजा बोला।

"महाराज, जब मैं मरना चाहता था, तब हाथी ने मुझे बचाया। अब मैं जीना चाहता हूं, तो आप चीते के मुंह में धकेल रहे हैं।"— भीखू ने कहा।

राजा बोला— "ठीक है, तुम घर लौट जाओ। तुम्हारी पत्नी तुम्हारी राह देख रही होगी।"

भीखू उसी जंगल के रास्ते घर लौट पड़ा। साथ में कुछ सैनिक भी थे। अचानक किसी स्त्री के चिल्लाने की आवाज आई— "बचाओ, बचाओ।"

सैनिकों ने देखा कि एक स्त्री भागती हुई उधर आ रही है। चीता उसका पीछा कर रहा था। सैनिकों ने निशाना साधा। गोलियों की अवाज के साथ चीता ढेर हो गया। स्त्री हांफती-हांफती उनके पास पहुंची। तभी भीखू खुशी से चिल्लाया— "अरे, यह तो मेरी पत्नी है।" उधर सैनिक खुशी से चिल्ला उठे— "यह तो वही चीता है, जिसकी हमें तलाश थी। अब हमें खूब इनाम मिलेगा।" फिर एक सैनिक भीखू से बोला— "इस बात को बताने के लिए आप दोनों को महल में चलना होगा।" भीखू मान गया।

वे दोनों सैनिकों के साथ राजा के पास पहुंचे। सैनिकों ने राजा को सारी बातें बताईं। राजा खुश था। उसने कहा— "भीखू, तुम पति-पत्नी दोनों ही भाग्यशाली हो। हाथी और चीते को मारने में दोनों सहायक हुए हो। पहले तुम्हारे कारण हाथी मरा। फिर तुम्हारी पत्नी के कारण चीता सैनिकों द्वारा मारा गया। अब तुम दोनों मेहमान बनकर यहीं रहोगे। अच्छे वैद्य तुम्हारा इलाज करेंगे।"

भीखू बोला— "महाराज, मैं आपका बहुत शुक्रगुजार हूं। पर मैं आपका मेहमान बनना तब तक ही पसंद करूंगा, जब तक मैं स्वस्थ नहीं हो जाता, क्योंकि मेहमान थोड़े दिन का ही अच्छा लगता है।"

भीखू की बात सुनकर राजा मुसकरा कर गया।

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- **पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में** बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. खिलौने वाले, मुझे— की मूर्ति बना दोगे ? (बापू/बाघ)

२. आखिर तुम्हें उस चमत्कारी— की याद कैसे आई ? (गदा/गऊ)

४. भई, सर्कस में— का क्या काम ? (तोते/ तोप)

८. आज बहुत दिन बाद— खाने का मन हो आया। (खीर/ खील)

९. कोई हंस रहा था, कोई— रहा था। (गा/ रो)

११. क्या कहा, कुल कितने— हैं ? (राग/ नाग)

१२. इसकी संगीत लहरियों में अनोखा जादू है।

ऊपर से नीचे

३. गौर से देखो, यह उन्हीं— की जगमगाहट है ! (दीपों/ सीपों)

५. साथ रहते-रहते वह— मेरा मित्र बन गया। (शेर/ मोर)

६. हां राजन, उस— पर बैठे-बैठे मैंने यह सपना देखा। (टाट/ टापू)

७. तुमने महादेवी के मधुर गीतों की किताब— पढ़ी है न ! (यामा/ वामा)

१०. एक चिड़िया जो मीठे गाने गाती है।

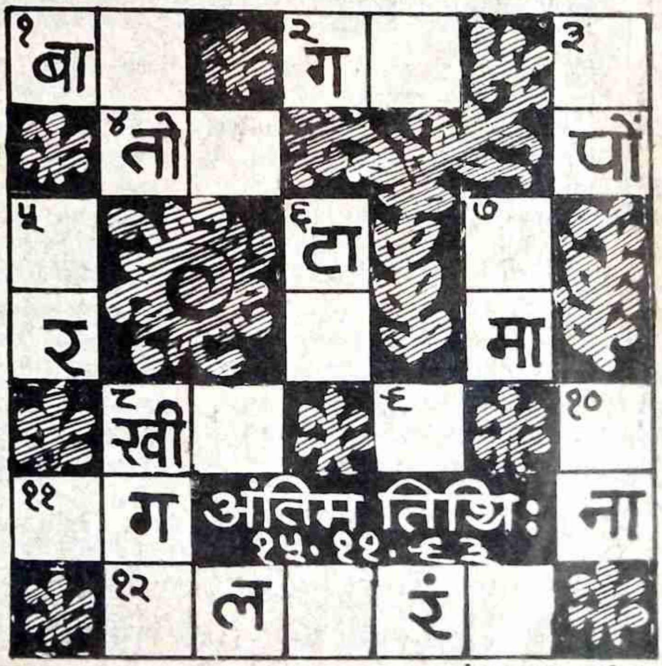
काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली : २९९

नाम ____________

उम्र ______ पता ____________

____



नं.ज्ञा.प. २९९

श्यामा का धवला

—उमेशप्रसाद सिंह

असम राज्य में काकोड़ी गांव है। यह गांव गुवाहाटी से अस्सी किलोमीटर दूर है। करीब पचास वर्ष पूर्व गांव के आसपास घना जंगल था।वहां एक गरीब किसान रहता था श्यामा। उसकी पत्नी पहले ही मर चुकी थी। श्यामा का एक बेटा था। उसका नाम राजवंशी था। उसके पास सफेद रंग का एक बैल था। सभी उसे धवला बैल कहते थे।

श्यामा पुचकार कर बैल को खिलाता। रात भर धवला पहरेदार की तरह श्यामा की झोंपड़ी की रखवाली करता। सुबह होते ही वह जंगल में चला जाता।

गांव का जमींदार अत्याचारी था। वह धवला को हथियाना चाहता था। एक बार जमींदार के आदमियों ने धवला को जंगल में घेर लिया। धवला घेरा तोड़कर भाग गया। जमींदार के दो आदमी घायल हो गए।

कुछ दिन बाद जमींदार ने श्यामा से धवला की मोल-तोल की। बैल बेचने का उसे प्रलोभन दिया। पर श्यामा नहीं माना।

इधर श्यामा का बेटा युवा हो चला था। वह गुवाहाटी हाईस्कूल में पढ़ता था। वहां वह अपने मौसा शिवदास के साथ रहता था। शिवदास कचहरी में मुलाजिम था। उसके कोई संतान नहीं थी। वह राजवंशी को अपना सगा बेटा मानता था।

सन् १९४२ के तूफानी दिन थे। प्रत्येक छात्र और नौजवान आजादी की लड़ाई में भाग लेना अपना कर्त्तव्य समझता था। राजवंशी भी उन लोगों में शामिल हो गया। वह लोगों को आजादी का महत्व समझाता। उन्हें निर्भय रहने की सलाह देता था।

राजवंशी के कार्यों की जानकारी जमींदार को मिली, तो वह उसे सबक सिखाने की सोचने लगा। एक दिन उसने श्यामा से कहा—"सुना है, तुम्हारा बेटा विद्रोही बन गया है। साहब बहादुर का आदेश है



कि उसे जेल भेजो या आठ रुपए का जुर्माना भरो।"

उन दिनों आठ रुपए बहुत होते थे। श्यामा के लिए आठ रुपए देना मुश्किल था। वह बहुत गिड़गिड़ाया, लेकिन जमींदार पर कुछ असर नहीं पड़ा। उसने श्यामा को चार दिन की मोहलत दे दी। श्यामा भारी मन से घर पहुंचा। उसके पास रुपए नहीं थे। वह रुपए कहां से लाता।

पांचवें दिन जमींदार कुछ सिपाहियों को लेकर श्यामा के घर पहुंचा। शाम के सात बज चुके थे। श्यामा खाना बना रहा था। जमींदार ने उसे बाहर निकलने के लिए कहा। उसने इंकार कर दिया। इस पर सिपाहियों ने गोलियां चला दीं।

गोलियों की आवाज सुन,धवला वन से दौड़ा-दौड़ा घर पहुंचा। उसकी नजर वहां खड़े लोगों पर पड़ी। वह समझदार था ही। तुरंत वह हुंकार भरकर, उन पर टूट पड़ा! वे जान बचाकर भागे। पर जमींदार न भाग सका। धवला ने उसे ऐसी पटकनी दी कि वह दूर जा गिरा, घायल हो गया।

इस बात से श्यामा घबरा गया। उसने गांव छोड़ने का निश्चय किया और धवला को साथ लेकर बर्मा की पहाड़ियों में चला गया।

वर्षों बाद देश आजाद हुआ। राजवंशी पढ़-लिख कर बड़ा अधिकारी बन गया था। उसने अपने पिता को खोज निकाला और उनके रहने के लिए उसने काकोड़ी में मकान बनवाया! जीवन भर धवला श्यामा के साथ रहा। आज भी काकोड़ी गांव के लोग श्यामा और धवला को याद करके रोमांचित हो जाते हैं। ●



□ पुलिस वाला— चोरी करने से पहले तुम क्या करते थे ?

चोर— मैं हर रोज दौड़ लगाता था। कुछ दिनों से अभ्यास छूट गया और आज मैं पकड़ा गया।

□ एक मित्र— तुम्हें समझाते-समझाते मेरा सिर दर्द करने लगा और तुम चुपचाप बैठे हो।

दूसरा मित्र— जब मेरे सिर में दर्द होने लगेगा, तो मैं चुपचाप यहां से चला जाऊंगा।

□ पिता— बेटा, तुमने तो कहा था कि परीक्षा में पास होने की पूरी उम्मीद है, पर फेल कैसे हो गए ?

बेटा— उम्मीद तो थी पिता जी ! पर गणित के पर्चे वाले दिन मेरे साथ वाला लड़का बीमार पड़ गया। भला मैं क्या करता ?

□ अजय— कल तुमने रुपए उधार देकर बहुत सहायता की। मैं यह कैसे भूल सकता हूं ?

संजय— वैसे ही भूल जाना, जैसे तुम उससे पहले के उधार को भूलते रहे हो।

□ एक पड़ोसी— वैसे तो तो बड़े हिम्मती बनते फिरते हो ? पर कल लड़ाई के वक्त घर से निकले तक नहीं।

दूसरा पड़ोसी— तुम ठीक कहते हो। कल मेरी पत्नी घर पर थी ही नहीं। वही मेरी हिम्मत बढ़ाती है।

□ एक दर्शक— वाह ! बहुत साफ-सुथरा शहर है।

गाइड— हां, क्योंकि आप जैसे लोगा यहां कम रहते हैं।

□ जज— अच्छा बताओ, तुमने घटना के समय क्या देखा ?

गवाह— हुजूर, देखता क्या ? मैं जल्दी में अपना चश्मा घर पर भूल गया था।

□ मां— बेटा, तुम छतरी ले गए थे, फिर भी भीग गए ?

बेटा— हां मां, मुझे डर था कि कहीं छतरी न भीग जाए।

□ एक बातूनी— आज कल तुम बहुत कम बोलते हो ?

दूसरा बातूनी— हां, क्योंकि अब मेरा काफी समय बातों को तोलने में लग जाता है।

□ नेता— हमें देश का इतिहास बदलना है।

एक छात्र— अच्छा, फिर इतिहास की उन किताबों का क्या होगा, जिन्हें हमने आज ही खरीदा है।

□ एक मित्र— तुम अंधेरे में तीर चला सकते हो ?

दूसरा मित्र— हां, तुम बचकर रहना। ऐसा न हो कि मेरे तीर से तुम घायल हो जाओ।

□ गोपाल— क्यों भाई, घर में बच्चे भी नहीं हैं फिर इतना शोर क्यों हो रहा है ?

विमल— बच्चे नहीं हैं, तो क्या हुआ ? मेहमानों की खातिरदारी न हो, तो क्या वे शोर नहीं मचाएंगे ?

□ पिता— बेटा, तुम हमेशा रोते रहते हो। गला बैठ जाएगा।

बेटा— पिता जी, मम्मी भी तो हमेशा डांटती रहती हैं, उनका गला तो कभी नहीं बैठता।

□ एक मित्र— मैं तुम्हारी फालतू बातें नहीं सुनना चाहता।

दूसरा मित्र— धन्यवाद ! यह रूई लो और अपने कानों में डाल लो।

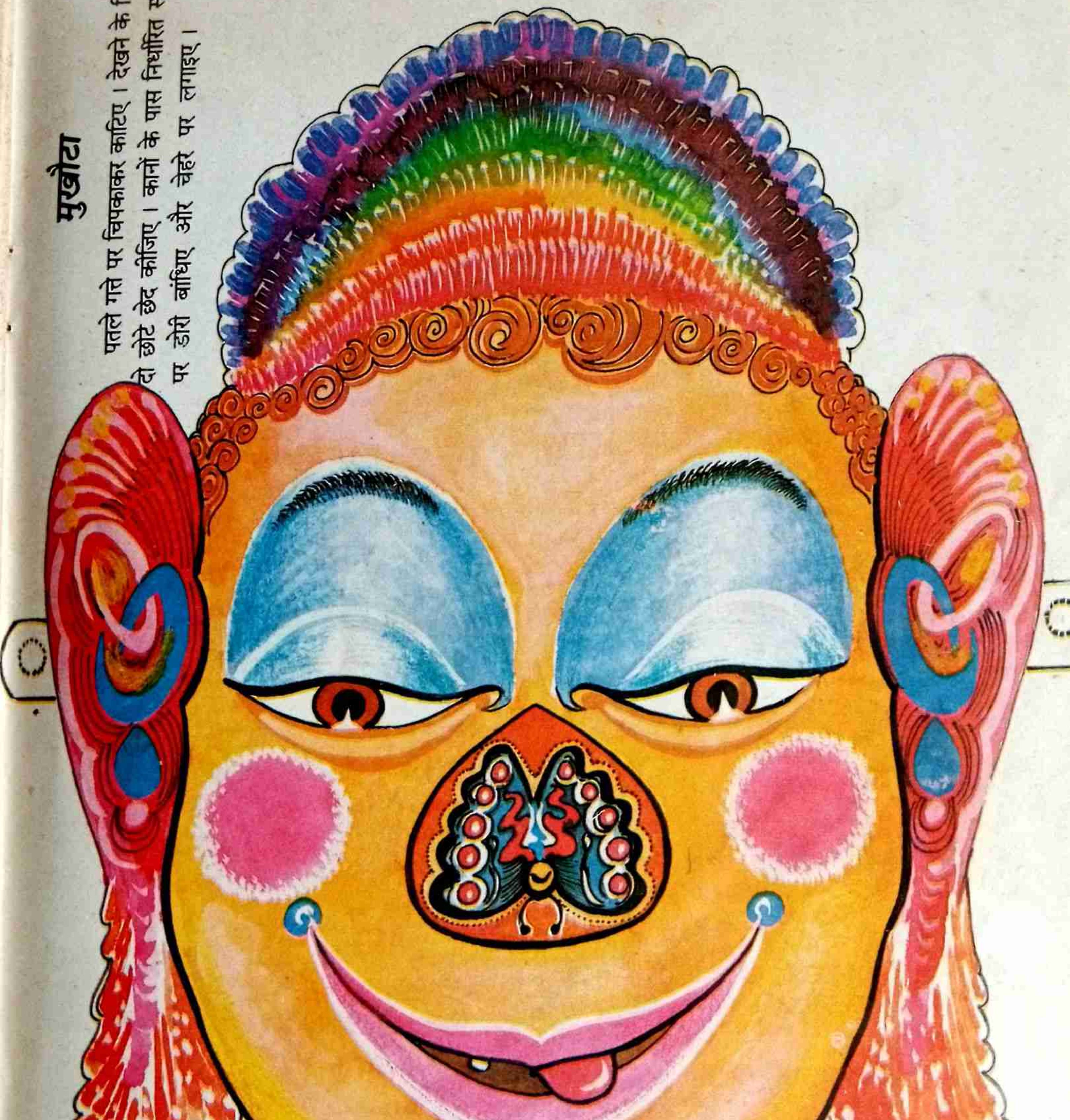
□ मां— बेटा, तुम्हें कैसे मालूम कि यह बिल्ली हमारे घर का दूध नहीं पिएगी।

बेटा— क्योंकि अभी-अभी मैंने सारी मलाई खा ली है और यह बिल्ली बिना मलाई वाला दूध नहीं पीती।



मुखौटा

पतले गत्ते पर चिपकाकर काटिए। देखने के लिए दो छोटे छेद कीजिए। कानों के पास निर्धारित स्थान पर डोरी बाँधिए और चेहरे पर लगाइए।




बन जाइए
बार्बी की
ड्रेस
डिज़ाइनर
अपनी सबसे प्यारी बार्बी को सुंदर कपड़ों में सजाने का यही तो है मौका!
बार्बी के भिन्न भिन्न लिबास काटिए..तरह-तरह की ड्रेस बनाइए और अपनी
मनपसंद ड्रेस बार्बी की तस्वीर पर चिपकाइए.
फिर बार्बी की पूरी तस्वीर को अपने नाम, उम्र, स्कूल और अपना पता लिखे
टिकटवाले लिफ़ाफ़े के साथ इस पते पर भेजिए: द फ़ैशन डिज़ाइनर गेम,
ब्लो प्लास्ट लि., (टॉएज़ डिवीज़न), लिओ हाउस, 88-सी, ओल्ड
प्रभादेवी रोड, बंबई-400025.
ध्यान रहे, सौ सबसे अच्छी ड्रेस में सजी प्रत्येक बार्बी के लिए है-एक
शानदार बार्बी पोस्टर.
Barbie
FROM
हर नन्हीं गुड़िया का सपना साकार.
HTA.1317.94

तेनालीराम ३०७

लोक उत्सव



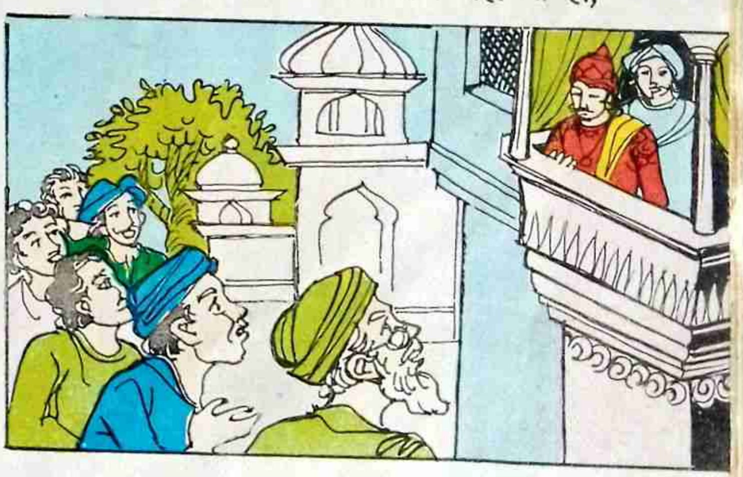
कार्तिक में समूचा विजयनगर हर्ष और उल्लास से भर उठता था। गांव-गांव और नगर-नगर में धूम-धाम से लोक उत्सव मनाए जाते। उनमें वहां के कलाकारों का सम्मान किया जाता। सारे आयोजन तेनालीराम की देखरेख में, राज्य के खर्च पर होते थे। दरबारी इससे चिढ़ते थे।

एक बार आयोजन शुरू ही हुए थे कि पड़ौसी देश ने विजयनगर पर आक्रमण कर दिया। राज्य को तुरंत धन की आवश्यकता पड़ी। कोष का काफी धन तेनालीराम ले जा चुका था। राजा कृष्णदेव राय ने तुरंत मंत्री से कहा— "तेनालीराम को खबर भिजवाओ। जितना धन शेष बचा है, उसे तुरंत लौटाए।"



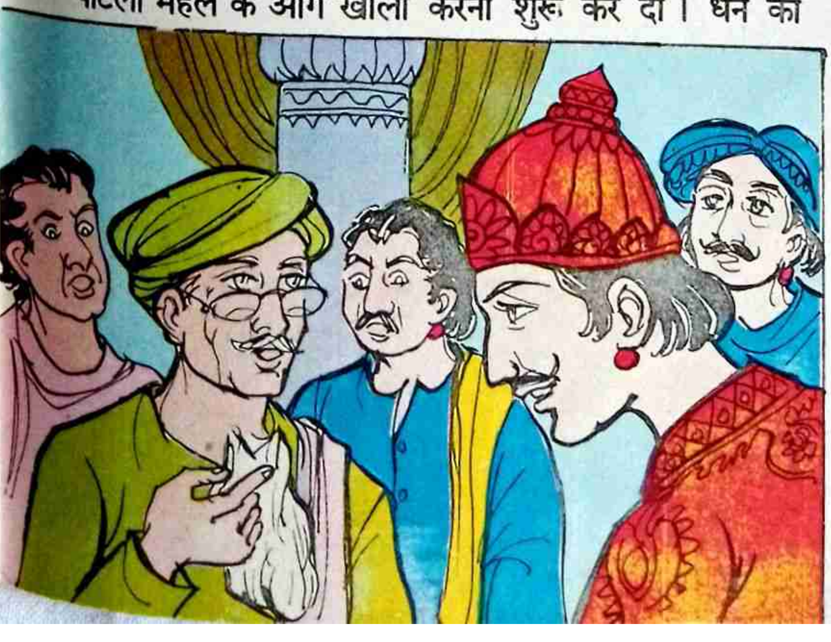
मंत्री ने उसी समय एक सैनिक तेनालीराम के पास रवाना कर दिया। किंतु कई दिन बीत गए। न तेनालीराम लौटा, न धन भेजा। दरबारियों ने राजा के खूब कान भरे।

राजा कुपित हो उठे। दरबारियों के उकसाने पर सेनापति को आदेश दिया— 'तेनालीराम जहां भी हो, तुरंत बंदी बना लिया जाए।" दरबारियों के चेहरे खिल उठे।



अगले दिन महल के बाहर जबरदस्त शोर की आवाजें सुनाई दीं। सैनिकों को सचेत कर, राजा दरबारियों के साथ अटारी पर आए। देखा— सामने हजारों लोग खड़े हैं।

भीड़ में से बूढ़ा निकलकर आगे आया। प्रणाम करके बोला— "हम आक्रमणकारियों से लोहा लेने आए हैं। अब तक कमाई सारी सम्पत्ति भी आपको समर्पित करने साथ लाए हैं।" कहकर उसने संकेत किया। हर व्यक्ति ने एक-एक पोटली महल के आगे खाली करनी शुरू कर दी। धन का अम्बार लग गया।



राजा और दरबारी चमत्कृत। ऐसा तो कभी नहीं हुआ। राजा नीचे उतर आए। उस बूढ़े व्यक्ति को गले से लगाने आगे बढ़े ही थे कि बूढ़ा पीछे हट गया। हाथ जोड़कर बोला— "नहीं अन्नदाता, मेरी जगह तो आपके चरणों में है। राज्य पर आक्रमण की बात सुनते ही मैंने लोक उत्सव, देश रक्षा उत्सवों में बदल दिए थे।"

कहकर उसने अपनी नकली दाढ़ी उतार फेंकी। वह तेनालीराम ही था।

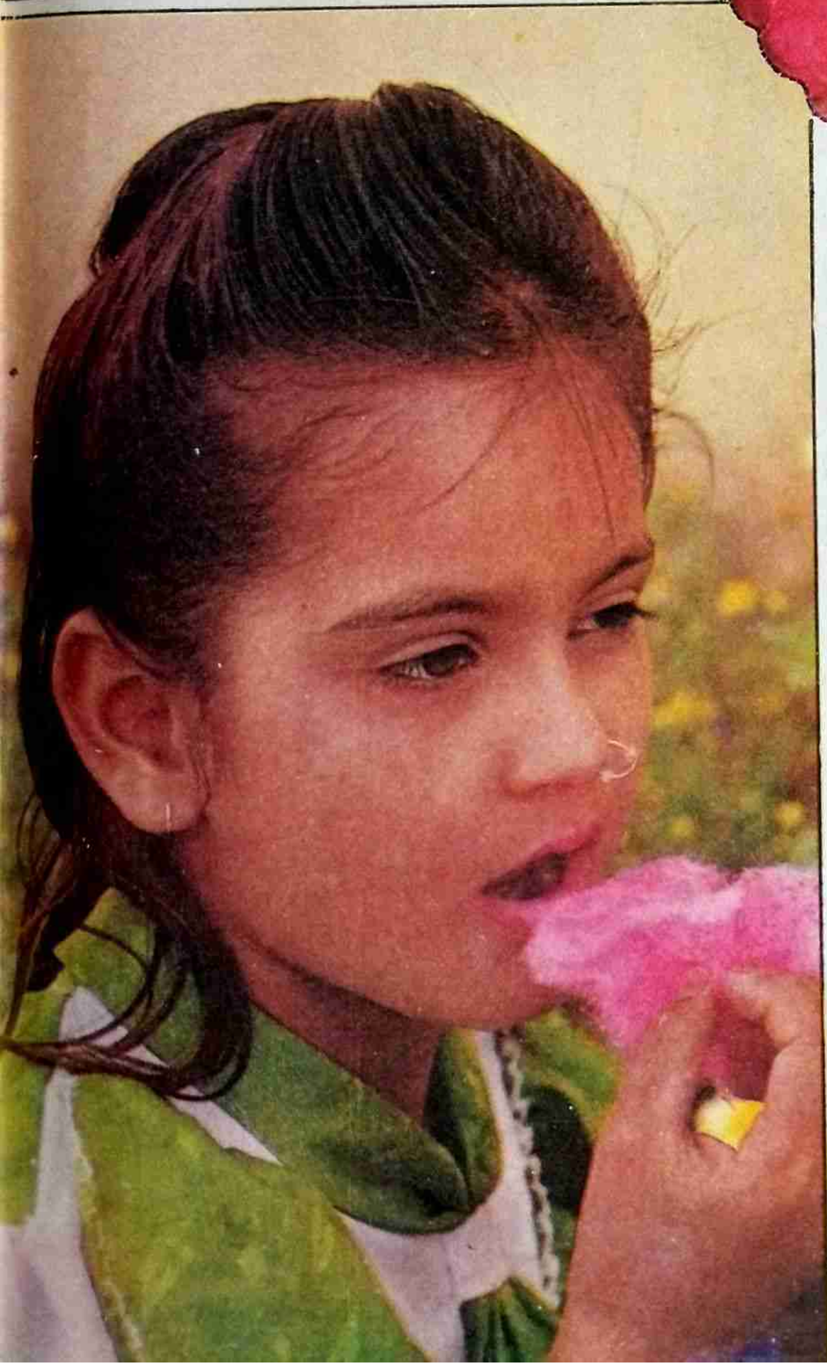

वैमीकोल चमत्कारी गम
ख़ूब चिपकाओ उसके संग
गुड़िया का एक सुन्दर सा घर बनाओ,फर्नीचर और दूसरी चीजों से सजाओ। मोटे-ताजे जानवर, मजेदार मुखौटे, और खिलौने। लकड़ी, कागज, कार्ड-बोर्ड, फैब्रिक... कुछ भी इस्तेमाल करो! मौज मस्ती की कोई सीमा नहीं। सोचते जाओ, बनाते जाओ. अपना खाली समय बेहतर ढंग से बिताओ।
VAMICOL®
आर्ट एण्ड क्राफ्ट एडहेसिव
वैम ऑरगेनिक
केमिकल्स लिमिटेड
स्काईलाइन हाउस, 85, नेहरु प्लेस, नई दिल्ली-110019
VAMICOL
ART AND CRAFT ADHESIVE
React/198/92 HIN

अजब मिठाई

बुढ़िया के बाल



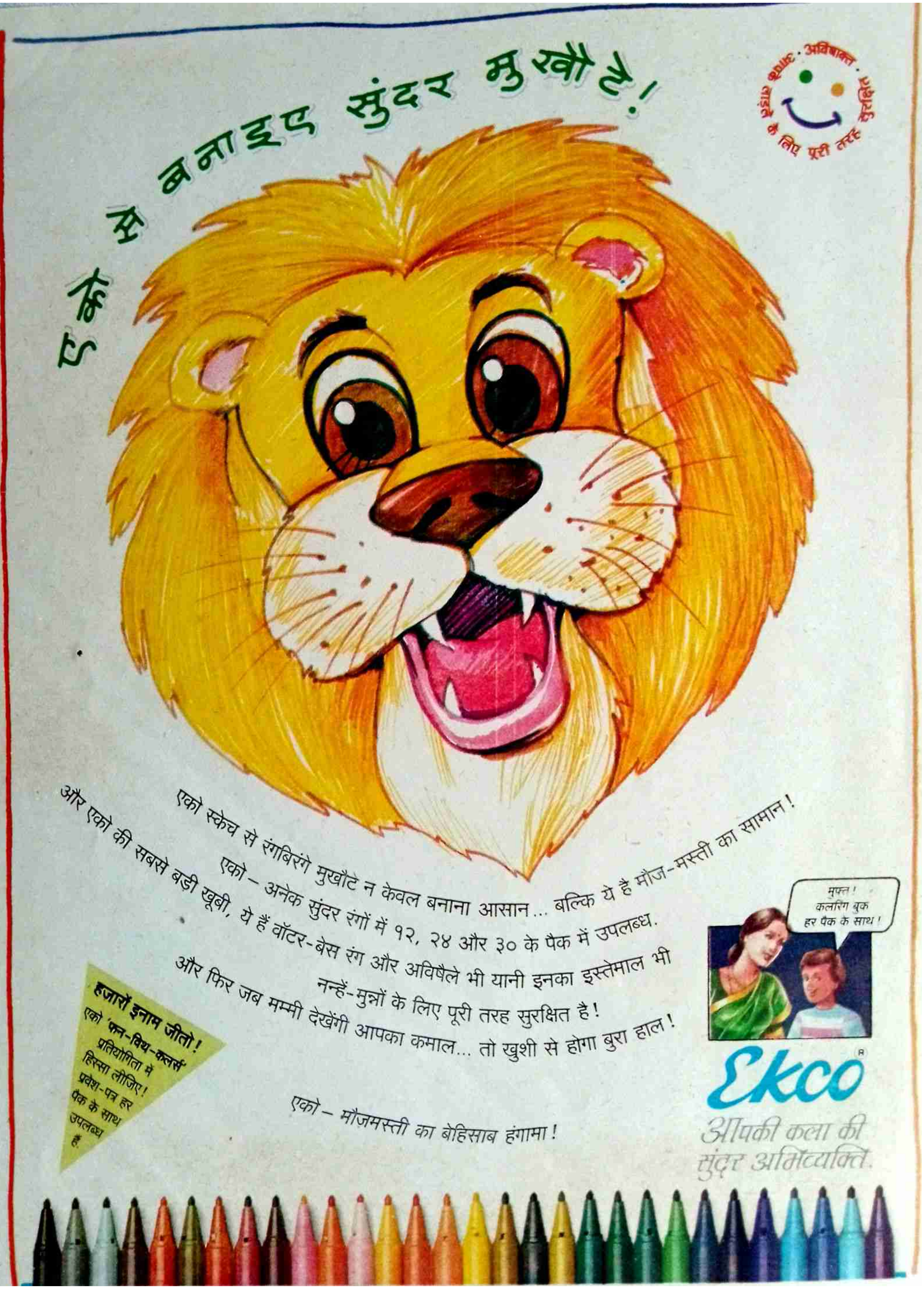




'बुढ़िया के बाल' कहो या 'गुड़िया के बाल'। गोल-गोल गुलाबी गुच्छे। मीठे-मीठे रेशमी रेशे। जाने कब से बनते-बिकते आ रहे हैं। सर्दी के दिनों में खूब बिकते हैं। बेचने वाले बांस के लम्बे डंडे पर इन्हें प्लास्टिक की थैलियों में बंदकर लटका लेते हैं। बनाने में केवल चीनी और थोड़ा-सा खाने वाला गुलाबी रंग काम में लाया जाता है। चरखेनुमा एक गोल चक्के वाली मशीन के एक ओर लोहे का गोल टब होता है और उसके बीच में एक गिलास और लोहे का तवा।

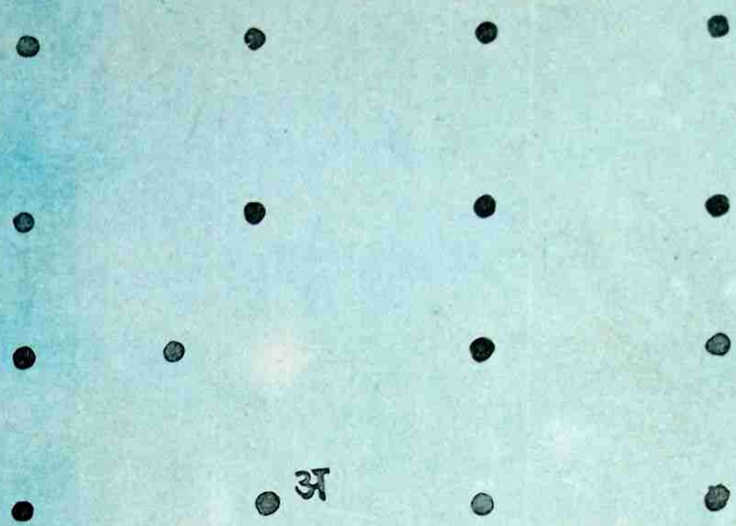
टब के नीचे जलता हुआ स्टोव रख देते हैं। गिलास में जरूरत के अनुसार चीनी और चुटकी भर खाने वाला गुलाबी रंग डाल देते हैं। गर्मी पाकर गिलास और तवा गर्म होता है। चीनी पिघलती है। मशीन चलाने पर गिलास, तवा और टब तेजी से घूमते हैं। इससे पिघली हुई चीनी महीन रेशों का रूप ले, टब में फैल जाती है। फिर इन रेशों को चाकू से काटकर गोल गुच्छे बना लिए जाते हैं।

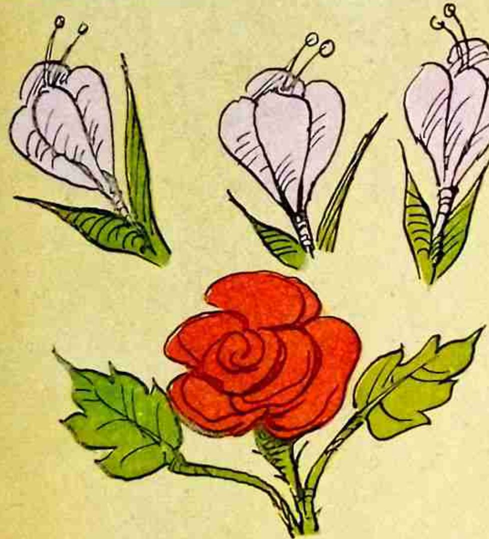
छाया व लेख : **श्यामसुंदर जोशी**


एको से बनाइए सुंदर मुखौटे!
अविषाक्त · आपके बच्चे के लिए पूरी तरह सुरक्षित
एको स्केच से रंगबिरंगे मुखौटे न केवल बनाना आसान... बल्कि ये है मौज-मस्ती का सामान!
एको – अनेक सुंदर रंगों में १२, २४ और ३० के पैक में उपलब्ध.
और एको की सबसे बड़ी खूबी, ये हैं वॉटर-बेस रंग और अविषैले भी यानी इनका इस्तेमाल भी
नन्हें-मुन्नों के लिए पूरी तरह सुरक्षित है!
और फिर जब मम्मी देखेंगी आपका कमाल... तो खुशी से होगा बुरा हाल!
एको – मौज़मस्ती का बेहिसाब हंगामा!
हजारों इनाम जीतो!
एको 'फन-विथ-कलर्स' प्रतियोगिता में हिस्सा लीजिए! प्रवेश-पत्र हर पैक के साथ उपलब्ध है.
मुफ्त! कलरिंग बुक हर पैक के साथ!
Ekco
आपकी कला की सुंदर अभिव्यक्ति.

गोरखधंधा

१. ऐसी रेखा खींचिए, जो हर बिंदु से मिले। शुरू किसी भी बिंदु से कीजिए, मगर रेखा एक ही बार में खिंचनी चाहिए। बीच में कलम न रुके, न उठे। अंत में रेखा 'अ' बिंदु से आकर मिले।



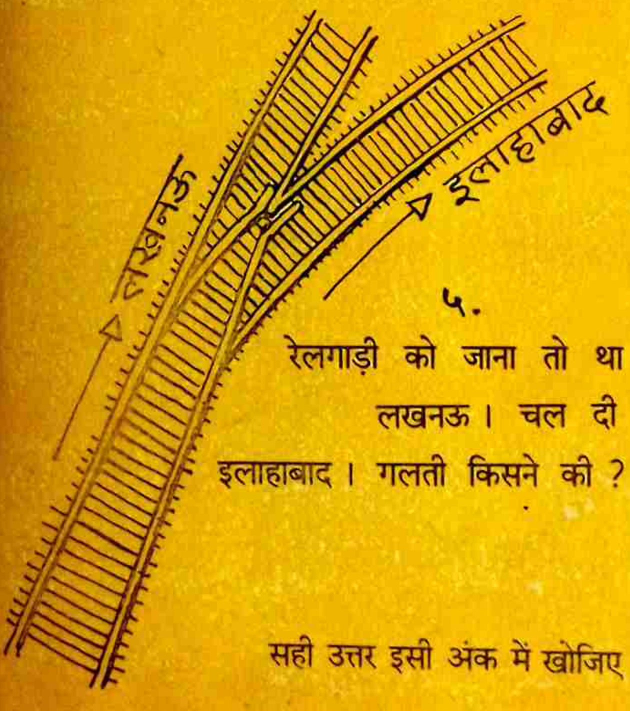


२. कागज के फूलों में ऐसी क्या विशेषता होती है, जो असली फूलों में नहीं होती ?

३. इस ताले की चाबी खो गई है। गुच्छे की किस चाबी से यह खुलेगा ?

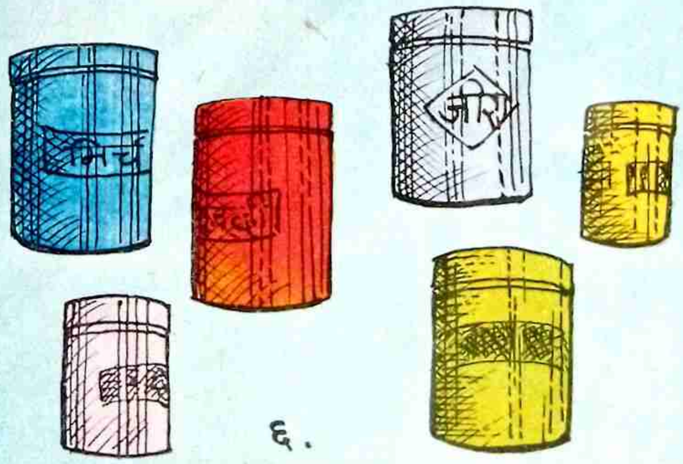


४. वह क्या है, जो कितना भी गंदा हो, हर कोई उसे अपनाना चाहता है ?



५. रेलगाड़ी को जाना तो था लखनऊ। चल दी इलाहाबाद। गलती किसने की ?

सही उत्तर इसी अंक में खोजिए।



६. मसाले भोजन को स्वादिष्ट बनाते हैं। पेड़-पौधों से मिलते हैं। हां, एक मिलता है पहाड़ों से और पानी से। कौन सा है वह ?

फूंक से मत बुझाना

—मृदुला सिन्हा



गौरी अपनी ससुराल में सब तरह से खुश थी। सास-ससुर, ननद-देवर सब प्यार करते थे। एक जेठानी भी थी। जेठानी-देवरानी में भी प्रेम था। लेकिन जेठानी का भाई जब कभी अपनी बहन से मिलने आता, गौरी बेचैन-सी हो जाती। उसकी जेठानी भाई की आवभगत में लीन हो जाती। भाई कुछ पकवान और मिठाइयां साथ ले आता। जेठानी इठला-इठलाकर अपनी पड़ोसिनों को बांटती। गौरी से कहती— "गौरी, मिठाई खा ले न। तेरा भी तो यही भाई है।" फिर भाई के साथ उसकी जेठानी मायके चली गई।

गौरी बड़ी दुखी थी। भगवान से कह रही थी, उसे एक भाई क्यों न दिया? बिना भाई के मायका क्या? भाभी नहीं तो मायके में कौन स्वागत करेगा? रात में बड़ी बेचैन थी। उसे नींद नहीं आ रही थी। तभी उसकी छत से कुछ गिरा। उसने दीपक जलाकर देखा, एक छोटा-सा सांप छटपटा रहा था। उसने धीरे से उस सांप को उठा लिया और एक घड़े में बंद कर दिया।

उसने सोचा— 'भगवान ने मुझे सांप के रूप में ही भाई दिया है। में इसी को पाल-पोसकर बड़ा करूंगी। यह मुझे प्यार भी करेगा और रक्षा भी।' गौरी अब बहुत खुश रहने लगी। घर का काम-काज भी मन से करती। घर वाले भी खुश थे। सुबह-सुबह उठकर धान का लावा बनाती और दूध के साथ उस घड़े में डाल देती। सांप वही खाकर रहता।

एक रात गौरी बड़ी खुश नजर आ रही थी। उसका पति जिद कर बैठा। बोला— "गौरी, इधर छह महीने से देख रहा हूं, तुम बहुत खुश हो। पहले मायके में एक भाई के न होने की भी चर्चा करती थीं। इन दिनों इतनी खुश क्यों रहती हो? राज क्या है? तुम्हें मेरी कसम है, मुझे बता दो।"

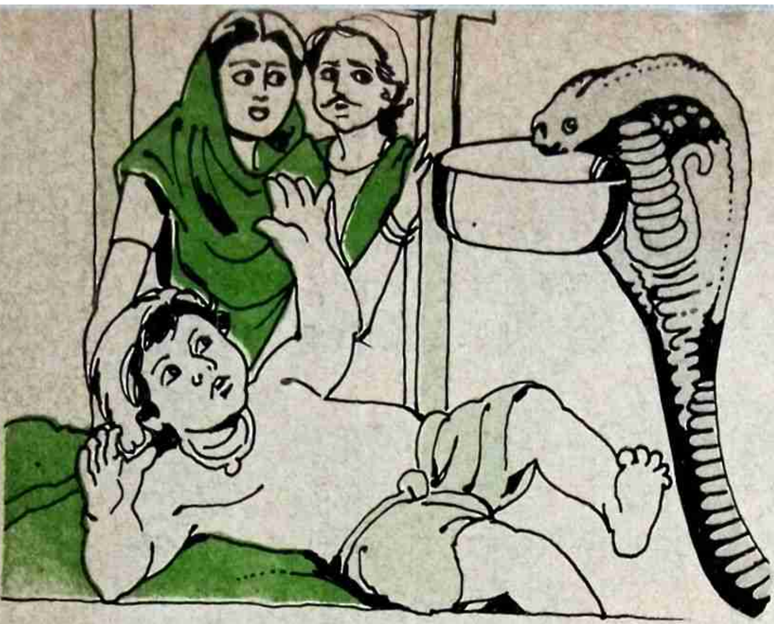
गौरी पति को बहुत प्यार करती थी। उसने पति को सारी घटना सुनाई। पहले तो उसका पति डर गया, परंतु गौरी ने उसे समझाया— "डरने की कोई बात नहीं। मैं तो उसे रोज दूध-लावा खिलाती हूं। बाहर निकालती हूं। मुझे कुछ नहीं कहता। मैंने बहन का प्यार दिया है इसे।" सुनकर पति को विश्वास हो गया।

कुछ समय बाद गौरी को एक लड़का हुआ। गौरी जब कभी आंगन में काम करने जाती, अपने भाई को घड़े से निकाल देती। बच्चे को पलंग पर सुला देती। बच्चा खेलता रहता। सांप एक तरफ कुंडली मारे बैठा अपने भांजे को देखता रहता। गौरी को अपने भाई पर बड़ा भरोसा हो गया था।

एक दिन पड़ोस की एक बुढ़िया आई। वह बच्चे को गोद में लिए प्यार कर रही थी। तभी उसे बच्चे के ऊपर के जबड़े में दो नन्हे-नन्हे दांत दिखे। बुढ़िया बोली— "अरे, बबुआ के ऊपर के दांत निकल आए! अब तो मामा को सोने के कटोरे में दूध-भात खिलाना होगा।"

गौरी की सास दुखी होती हुई बोली— "कहां है इस मुन्ने का मामा? भगवान ने मेरी बहू को भाई ही न दिया। कोई आस-पड़ोस का मामा आ जाएगा। मैं आज इसके मायके में खबर भेज देती हूं। दूध-भात खिलाना तो पड़ेगा ही, वह भी मामा के हाथ से।"

गौरी सब सुन रही थी। बुढ़िया के चले जाने पर गौरी ने अपनी सास से डरते-डरते कहा— "मां जी, मेरा तो एक बड़ा अच्छा भाई है।"



"कब हुआ भाई ?"–सास ने उत्सुकता जाहिर की । गौरी ने दबी जबान से सांप को भाई बनाने की बात कही । बुढ़िया चिल्लाई— "पागल हो गई है ! सांप भी कभी पाला जाता है । एक दिन तुम तीनों सांप के काटने से मर जाओगे । मैं अभी भगाती हूं उसे ।"

गौरी सास के पैरों पर गिर गई— "मां जी, ऐसा मत कीजिए । मैं आपको विश्वास दिलाती हूं । मेरा भाई हम सबकी रक्षा करेगा ।" उसने अपनी सास को बताया, कैसे सांप उसके मुन्ने की रखवाली करता है । बुढ़िया बड़ी डरी हुई थी, लेकिन बहू की विनती सुन, पिघल गई ।

उसी रात को सांप ने कहा— "बहन, मैं इस घड़े में अब नहीं अंटता। तुमने दूध-लावा खिला-खिलाकर मुझे मोटा कर दिया है । एक बार घर जाता हूं। माता-पिता से मिलूंगा। उनकी सेवा करूंगा । कभी-कभी तुम्हें और भांजे को भी देखने आऊंगा ।"

गौरी रोने लगी । सांप बोला— "पगली, क्या भाई अपनी बहन के घर रहता है ! कोई सुनेगा तो तेरी ही शिकायत होगी । मैं कोई दरिद्र हूं ।"

गौरी रोती हुई बोली— "भैया, तुम्हें एक काम करना होगा । मुन्ने के लिए सोने के कटोरे में दूध-भात ले आना ।"

सांप बोला— "एक क्या दस सोने के कटोरे लाऊंगा । मुझे जाने तो दे । तू रोएगी तो मैं नहीं जाऊंगा ।"

गौरी ने आंसू पोंछ लिए । सांप जंगल में चला गया, जहां उसके मां-बाप थे । मां-बाप बेटे को सुरक्षित पाकर बड़े खुश हुए । बेटे ने सारी बात बताई । नाग-नागिन ने कहा— "एक बार बहन को क्यों नहीं बुला लाते ?"

सांप बोला— "मैं कल ही सोने के कटोरे में दूध-भात लेकर जाता हूं । भांजे को खिला दूंगा और बहन को बुला लाऊंगा ।"

नागिन ने सारी तैयारी की । मुंहबोली बेटी के लिए सोना-चांदी दिया । नाती के लिए अशर्फी, हार, सोने के कटोरे में दूध और धान का लावा । सब लेकर सांप बहन के घर पहुंचा । बहन सब सामान देख, गद्गद् हो गई । अपनी सास को दिखाया । सास ने पड़ोसिनों को बुलवाया । आंगन में सब सामान रखा गया । सब लोग आश्चर्य चकित थे । तभी एक मोटा सांप दांत में कटोरा लगाए पहुंचा । सभी औरतें सांप को देख, भाग खड़ी हुईं । मुन्ने को वहीं छोड़ दिया । सांप अपने दांतों से कटोरा दबाए था । मुन्ना आठ महीने का हो चुका था । स्वयं दूध-लावा उठा-उठाकर खाने लगा । सांप वहीं कुंडली मारे बैठा रहा । मुन्ने की दादी को डर था—कहीं मुन्ने को कुछ हो न जाए । लेकिन मुन्ना भला-चंगा था ।

सांप के लिए भी दरवाजे पर बिछावन हुआ । गौरी की सास ने बहू के भाई की मेहमानदारी में कोई कसर न छोड़ी । दो दिन बाद सांप अपनी बहन को बुलाकर घर ले गया । नाग-नागिन बड़े खुश हुए । मुन्ने का लाड़-दुलार किया । गौरी को विदा करते समय सोना-चांदी एवं सांप की मणि दी । साथ ही सीख भी दी— "बेटी, मेरी दो बातें सदा याद रखना । जलते दीए को कभी मुंह से फूंक मारकर मत बुझाना । दूसरी, उसे बुझाकर प्रणाम कर लेना ।"

गौरी उनसे विदा होते समय फफक पड़ी । वह उनका कहा सदा मानती रही । आज भी बिहार की औरतें वैसा ही करती हैं ।

(बिहार की लोक-कथा)

कल ले जाऊंगा

—रवि दिवाकर

पुराने जमाने की बात है। गंगा नाम का एक आदमी सरसों के तेल का धंधा करता था। वह अपने टट्टू पर दो कुप्पे तेल भरकर आसपास के गांवों में बेचता था। तेल के इस धंधे से उसका गुजारा बड़े मजे से चल रहा था।

एक दिन की बात है, वह पास के गांव में तेल बेचने जा रहा था। रास्ते में एक छोटा-सा जंगल था। जंगल में उसे दो साधु मिले। वे बोले— "बच्चा, दौलत चाहिए ?"

महात्मा उसे जंगल में एक तरफ ले गए। एक पेड़ के नीचे खड़े होकर वे बोले— "इस पेड़ की जड़ में अपार दौलत है। खोदो और ले जाओ।"

गंगा ने पेड़ की जड़ में खुदाई की, तो उसे अशर्फियों से भरे दो देग दिखाई पड़े। वह खुशी से उछल पड़ा। उसने कुप्पों का तेल एक खड्डे में उलटकर जल्दी-जल्दी दोनों कुप्पों में अशर्फियां भर लीं। उन्हें टट्टू पर लादकर घर की तरफ चल पड़ा। मन ही मन वह सोच रहा था, भगवान बड़े ही दयालु हैं। जब देते हैं तो छप्पर फाड़कर देते हैं। अब तेल के इस धंधे से छुटकारा मिल जाएगा। आराम से सारा जीवन कट जाएगा। वह सोचता ही जा रहा था कि बड़े जोर का तूफान आया। मूसलधार बारिश होने लगी। वह घबराया। कुछ दूरी पर उसे रोशनी दिखाई दी। वह रोशनी एक दुकान में हो रही थी। उसने अपने टट्टू को तेज हांका और उस दुकान पर पहुंच गया। दुकानदार उसका परिचित निकला। वह उससे बोला— "भाई मेरे, ये दो कुप्पे अपनी दुकान में रख लो। मैं कल सुबह ले जाऊंगा। इनमें सरसों का तेल भरा हुआ है।"

गंगा दोनों कुप्पों को दुकान में रखकर चला गया।

दुकानदार के घर में बच्चा होने वाला था। उसके घरवालों ने उससे कहा— "कहीं से सरसों का तेल ले आओ।" आंधी-तूफान में तेल कहां से मिलता ? उसने सोचा-'सरसों के तेल के दो कुप्पे जो दुकान में रखे हैं, एक लोटा उन्हीं में से निकालकर ले आता हूं। सुबह कुप्पे में डाल दूंगा।'

दुकान में जाकर उसने एक कुप्पा खोला। कुप्पा खोलते ही उसकी आंखें चौंधिया गईं। इतनी सारी अशर्फियां ! उसने दूसरा कुप्पा खोला। वह भी ऊपर तक अशर्फियों से भरा था।

वह दौड़ा-दौड़ा घर गया। उसके घर बेटा हुआ था। घर-बाहर के लोगों ने उसे बधाई दी। उसने अपनी मां को अशर्फियों से भरे दो कुप्पों की बात बताई, जो तेल के कुप्पे कहकर उसकी दुकान में रखे गए थे। मां बोली— "जल्दी से उठा कर घर ले आओ। यह दौलत हमारे घर में जन्मे इस बच्चे की किस्मत से आई है।"

वह जल्दी से दुकान में गया। कुप्पे उठा लाया। उनमें से अशर्फियां निकालकर दोनों में सरसों का तेल भर दिया। फिर उसी जगह दुकान में रख आया।

गंगा सवेरे ही सवेरे दुकान पर पहुंचा। देखा, उसके दोनों कुप्पे ज्यों के त्यों रखे हैं। लपककर उसने दोनों कुप्पे उठाए और टट्टू पर लादकर घर जा पहुंचा। घर पहुंचकर उसने कुप्पे खोले। उनमें अशर्फियों के बजाए सरसों का तेल भरा देखा, तो वह चीख पड़ा। उसने अपना माथा पीट लिया। दुकानदार को कुछ कहने का भी उसका मुंह नहीं था, क्योंकि उसने उसे कुप्पों में सरसों का तेल भरा बताया था।

अगले दिन वह उसी जंगल में उन दोनों साधुओं की खोज में भटकने लगा। थोड़ी देर बाद उसे वे दोनों साधु दिखाई दिए। वह बोला— "महाराज, मैं तो लुट गया। मेरी सारी अशर्फियां लुट गईं। मुझे और दौलत दिला दीजिए।"

साधु गंभीर होकर बोले— "बच्चा, वह दौलत तुम्हारी किस्मत की नहीं थी। वह उसी दुकानदार के बच्चे के भाग्य की थी। तुम्हारे माध्यम से तो वह उसके पास तक जानी थी। वह उसे मिल गई, जिसके भाग्य की थी।"

गंगा मुंह लटकाए घर वापस आ गया। ●



कैसे मिला

—श्रीवराहम बालकृष्णन

बड़ा नटखट जल प्रपात । एक बालक न जाने क्या सोचते हुए उसके किनारे खड़ा था । लताएं अपनी परछाईं देखने के लिए झांक रही थीं । एक तितली नन्हे सफेद पत्तों पर चक्कर काट रही थी । बालक ने उसे देखा । देखता ही रह गया । तितली थोड़ी देर तक पंख फैलाए चक्कर काटती रही । फिर धीरे-धीरे वह एक लता से चिपककर बैठ गई ।

बालक को शरारत सूझी । उसने झट हाथ बढ़ाया । तितली उसके चंगुल में आ गई ।

"हाय, हाय ! बेचारी फंस गई ।"—बिल्कुल निकट से नन्ही आवाज सुनकर बालक ने मुड़कर देखा । पीले फूलों से लदा मंदार का पौधा तनकर खड़ा था । उसी पर से चिड़िया बोली थी ।

रत्ती जैसी छोटी, लाल चमकती आंखों में रुआंसा भाव भरकर चिड़िया बोली—"उसे छोड़ दो बच्चे । वह रो रही है ।"

बच्चे ने अंगुलियां फैला दीं । तितली अपने नन्हे पंख फड़फड़ाते हुए उड़ गई । उड़ते-उड़ते वह बालक की आंखों से ओझल हो गई । बालक का मन दुखी हो गया ।

"मेरी तितली दे दो । अभी दे दो ।"—वह रोते हुए बोला ।

लड़के का गुस्सा देखकर चिड़िया हंस पड़ी । —"शर्म नहीं आती ? लड़के भी कहीं रोते हैं !"

"हम नहीं बोलते तुमसे । मेरी तितली लौटा दो ।"—बालक सिसक रहा था ।

—"रोओ मत । एक चीज दूंगी तुम्हें । एक अनोखी चीज ।"

बालक का दुःख दूर हो गया । उसमें उत्साह उमड़ पड़ा । प्रसन्न भाव से उसने चिड़िया को देखा । चिड़िया ने बेर के फलों का एक गुच्छा उसे दिया । बालक ने वह ले लिया । फिर वहां से भाग गया ।

जंगल के साथ-साथ एक झरना बह रहा था । उसके किनारे आकर बालक रुक गया । वहां एक चट्टान थी, जो झरने के पानी से भीगी खड़ी थी । बालक उस पर चढ़ने लगा था कि हंसी की आवाज सुन, वह इधर-उधर देखने लगा । तभी मालूम हुआ कि झरना ही हंस रहा था । फेन से हंसते हुए झरने ने बालक के पांव सहलाए ।

"मुझे देखकर हंस क्यों रहे थे ?"—बालक ने पूछा ।

"तुम्हारे हाथ में बेर देखकर ।"—झरना बोला ।

फल पीठ के पीछे छिपाते हुए बालक बोला—"हम नहीं देंगे बेर ।"

—"तो मत दो । पर इतना तो बताओ कि तुम्हें बेर मिले कहां से ?"

पल भर सोचने के बाद बालक बोला—"चिड़िया ने दिए । फोकट में नहीं, मैंने बदले में एक तितली दी थी ।"

थोड़ी देर तक झरना चुप रहा । बालक जब चट्टान से उतरने लगा, तो झरने ने फिर पूछा—"नहीं दोगे ? .... दोगे न ?"

बालक ने चिढ़कर झरने को देखा । शायद झरने ने

यह देख लिया। बोला—"तो जाओ बच्चे।"

बालक ने हंसकर बेर वहीं छोड़ दिए।

थोड़ी दूर चलने पर बालक को बड़ी भूख लगी। सोचा—'यदि वे बेर मेरे पास होते तो ....' उसे झरने पर क्रोध आया। 'मुझे बातों में फंसाकर उसने बेर हड़प लिए।'

झरना यों बह रहा था, जैसे कुछ हुआ ही नहीं। बालक ने उसकी ओर नजर दौड़ाई।

"ऐसे मत देखो बच्चे।"—झरना बोला। "बेर के बदले एक बढ़िया चीज़ दूंगा।"

यह सुनते ही बालक की भूख मिट गई, तो भी हैरानी से कान लगाकर वह झरने की बातों की प्रतीक्षा करता रहा।

झरना बोला—"देखो बच्चे, क्या है यह ? एक बढ़िया मछली। तुम्हारे लिए है।"

सुनहरी रंग की मछली बालक को बहुत पसंद आई। बालक के हाथ में उछल-उछलकर मछली अठखेलियां करने लगी। दोनों हाथों से बालक ने उसे ढक लिया।

तभी एक दूसरा हाथ कहीं से उसकी ओर बढ़ा। मछली छीन ली गई। छटपटाते हुए बालक ने चारों ओर देखा। एक छोटा बंदर उसकी ओर देखकर दांत निपोर रहा था। बंदर के चंगुल में दबकर मछली छटपटा रही थी। तड़प रही थी।

"ऐसा मत करो।"—बालक चिल्लाकर बोला और बंदर से उलझ पड़ा।

उसने बंदर को पकड़ लिया। बंदर अपने को छुड़ा लेने की कोशिश में था। बालक ने जोर लगाया। बंदर हार गया। वह बालक के कब्जे में आ गया। दोनों में दोस्ती हो गई।

एक दोपहर को एक बालक बंदर को साथ लिए मेरे घर आया था। बालक ढोलक बजाता और बंदर उसी ताल में पैंतरेबाजी दिखाता। यह देखकर मुझे बहुत मजा आ गया। मैंने पूछा—"यह बंदर कैसे मिला ?" तब बालक ने यह सारा किस्सा सुना दिया।

(प्रस्तुति : के.जी. बालकृष्ण पिल्लै)

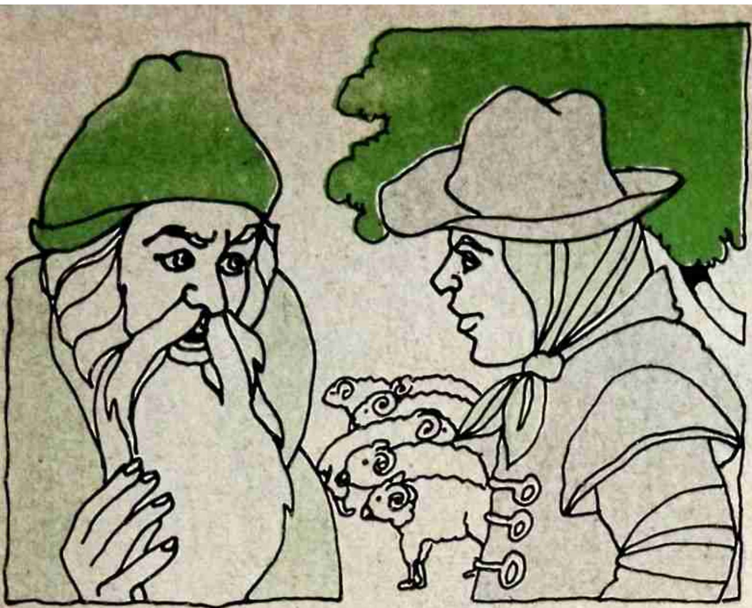
'सबसे सुंदर' प्रतियोगिता



अपने घर में और उसके आसपास ध्यान से देखो। सब से सुंदर क्या है— कोई फूल, पेड़-पौधा, पशु-पक्षी, जानवर, तसवीर, मूर्ति या कोई आदमी या बच्चा . . . या और कुछ भी। जो कुछ तुम्हें सबसे सुंदर लगे, उसके बारे में हमें भी बताओ। सौ शब्द से अधिक न हों।

चुने हुए दस सबसे सुंदर विचारों को इनाम दिए जाएंगे।

अपने विचार कागज के एक ही ओर साफ-साफ लिखकर १५ नवम्बर तक इस पते पर भेजिए—सबसे सुंदर प्रतियोगिता, सम्पादक 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१



पहाड़ी पर मूरत

—शारदा यादव

एक समय की बात है, गोराविया के कोलशत्येन राज्य में एक बूढ़ा चरवाहा रहता था। वह जंगल में भेड़ें चराने का काम करता था। दिन भर भेड़ों के साथ हरे-भरे जंगल व चरागाहों में घूमता रहता था। जंगल से लकड़ियां काट-चीर और तराशकर अनेक प्रकार के खिलौने बनाता था।

जब तक उसकी पत्नी जीवित रही, उसका जीवन सुखी था। उसे न तो खाना बनाने की चिंता थी और न कपड़े आदि धोने की। लेकिन पत्नी की मृत्यु के बाद उसे सब काम स्वयं ही करना पड़ता था। उसका बिगड़ा हुआ एकमात्र पुत्र उसकी तनिक भी सहायता नहीं करता था।

एक दिन पहाड़ी पर चढ़ते हुए बूढ़े चरवाहे का पैर फिसल गया। पैर में मोच आ गई। दर्द की वजह से अपने पैरों पर खड़ा भी नहीं हो सकता था। पीड़ा से कराहते हुए, उसने दूसरे दिन प्रातःकाल उठते ही अपने पुत्र से कहा कि वह उसके बदले भेड़ों को चराने जंगल की ओर चला जाए।

बेटे ने पहले तो टालने की कोशिश की, लेकिन पिता के जोर देने पर उसने कहा—"अब आप भेड़ों की चिंता न करें, मैं उन्हें ले जाऊंगा।"

फिर उसने अपने साथ जंगल ले जाने के लिए, अलमारी में से रोटी निकाली और थोड़ा सा पनीर भी साथ ले लिया। उसने खूंटी पर टंगे चाबुक को उतारा। फिर अपने शिकारी कुत्ते को भी साथ ले, भेड़ों के झुंड को हांकता हुआ जंगल की ओर चल दिया।

वह भेड़ों के झुंड को एक हरी-भरी पहाड़ी पर ले गया। वहां पहुंचकर वह स्वयं एक छायादार पेड़ के नीचे जमीन पर लेट गया। आकाश में घिर आए बादलों की ओर देखने लगा। भेड़ों की रखवाली का काम उसने अपने कुत्ते को सौंप दिया।

आकाश में काले बादल छा रहे थे, लेकिन बहुत दूर उसे बादलों में से चमकता हुआ नीला स्वच्छ आकाश भी दिखाई दिया। हवा बहुत तेज़ चल रही थी। उसे कुछ ठंड सी लगने लगी। ठंड से बचने के लिए उसने आग जलाने की सोची। यहां-वहां से कुछ ईंधन बटोरा और आग जला दी।

वह आग सेक ही रहा था कि एक नाटा-सा आदमी वहां आकर खड़ा हो गया। वह आकार में तो बहुत छोटा था, लेकिन उसकी दाढ़ी उसके आकार की तुलना में बहुत लम्बी थी। उस बौने नें चरवाहे से कहा—"अलाव की आग की ओर ध्यान दो। जरा-सी लापरवाही की, तो आग जलाकर सब कुछ राख कर देगी। तुम्हें भी नहीं छोड़ेगी।"

उस ढीठ लड़के ने गुस्से से कहा—"मुझे तुम्हारी सलाह नहीं चाहिए। तुम्हें इस अलाव की आग से क्या मतलब ?"

गुस्से में वह उठा। उसने कमर में बंधी अपनी पेटी उतारकर बौने को मारने के लिए घुमाई ही थी कि वह पीछे हट गया। फिर अपनी बात जारी रखते हुए कहा—"तुम्हें शायद पता नहीं कि यह आग मैंने स्वयं ही जलाई है। जब मैं चाहूंगा, इसे बुझा दूंगा।"

चरवाहे के पुत्र को लगा, जैसे उसने कोई सपना देखा हो। उसने एक पेड़ से एक हरी टहनी झटके से तोड़ी और उसे आग में झोंक दिया। जैसे ही उसने टहनी को आग में डाला, एक बूढ़ी मादा खरगोश दौड़कर आई। अपनी पिछली दोनों टांगों पर खड़ी होकर विनती करने लगी—"जमीन को आग से बचाओ। यहां से कुछ दूरी पर मेरे छोटे-छोटे बच्चे

हैं। आग की लपटों से वे मर सकते हैं।''

उसने मादा खरगोश को भी मारना चाहा, लेकिन चाबुक लगने से पहले ही वह जल्दी से वहां से भाग गई। उसके जाते ही हवा जोरों से चलने लगी और आंधी-तूफान में बदल गई। आग पहले धीरे-धीरे फिर तेज गति से पूरे जंगल में फैलने लगी। हरी घास झुलसकर काली होने लगी।

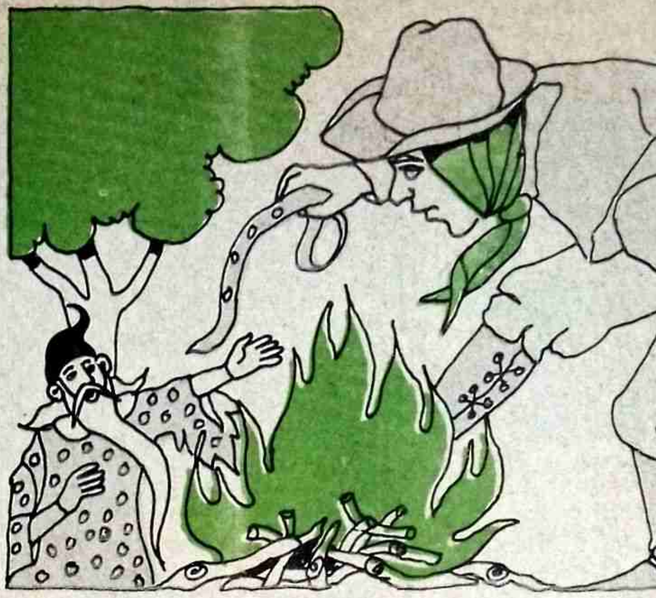
आग की जलती लपटों की ओर उस चरवाहे का ध्यान बिल्कुल नहीं था। उसने फिर से दोनों हाथों से लकड़ियां आग में झोंक दीं। आग की लपटें एकदम आसमान को छूने लगीं।

तभी सामने खड़े चीड़ के वृक्ष से मादा उल्लू उड़ी और जोर-जोर से चिल्लाई—''अभागे चरवाहे, तुम स्वयं भी इन आग की लपटों में जलकर मर जाओगे।''

उस चरवाहे ने मादा उल्लू की बात पर जरा भी ध्यान नहीं दिया, लेकिन उसकी बात पर उसे गुस्सा आया। उसने उल्लू पर पत्थर फेंककर मारा। वह सावधान थी, तुरंत जंगल की ओर उड़ गई। लेकिन उसी समय बिजली बहुत जोर से कड़की। जमीन हिलने लगी। भेड़ों का झुंड नीचे की ओर उतरने और दौड़ने लगा।

चरवाहे की समझ में कुछ नहीं आया कि वह क्या करे। तभी उसके सामने सहसा धरती फट गई। धरती फटते ही दरार में से बहुत से बौने, परियां निकल आईं। उन्होंने चरवाहे और भेड़ों को चारों ओर से घेर लिया। अब चरवाहे को समझ में आया कि वह किस मुसीबत में फंस गया है।

आंधी धीरे-धीरे मंद और फिर बंद हो गई। हवा की सरसराहट कभी-कभी सुनाई देती थी। उसी समय उन बौनों, परियों के बीच एक विशालकाय, सफेद बालों वाला व्यक्ति प्रकट हुआ। उस व्यक्ति के शरीर का आकार धीरे-धीरे बढ़ता ही चला गया। उसके पैर नीचे पहाड़ी पर थे और उसका सिर ऊपर की ओर बादलों को छू रहा था। चरवाहा इन सब आश्चर्यजनक घटनाओं को देखकर भयभीत हो गया।



उस विशालकाय आदमी ने गुस्से में आकर चरवाहे से कहा—''तुमने घास और पेड़ों को नष्ट करने का साहस कैसे किया ? तीन बार तुम्हें हरियाली को नष्ट न करने की चेतावनी दी गई, लेकिन तुमने किसी की बात नहीं मानी। इस लापरवाही के लिए तुम्हें कठोर दंड दिया जाएगा। मैं पहाड़ों का राजा हूं। तुम्हें शाप देता हूं कि तुम पत्थर की मूर्ति बन जाओ।''

इससे पहले कि भयभीत चरवाहा कुछ बोलता, उसके हाथ-पैर सख्त होने लगे और धीरे-धीरे उसका सांस लेना कठिन हो गया। शीघ्र ही वह पत्थर की मूर्ति में बदल गया।

विशालकाय आदमी अपना काम समाप्त करने के बाद धरती से एक बड़े बादल की भांति ऊपर उठा। हवा उसे अपने पंखों पर उड़ाकर पहाड़ों से ऊपर उठा ले गई।

उसके अदृश्य होने के साथ ही बौने और परियां धरती में पड़ी दरार में समा गईं। धरती सहसा पहले जैसी हो गई। इसके बाद हल्की वर्षा हुई जिससे जंगल में लगी आग धीरे-धीरे समाप्त हो गई।

शाम को जब भेड़ें अपने आप घर वापस लौटीं, तो लोग चरवाहे को खोजने के लिए निकले। पत्थर बना चरवाहा भयावह मुद्रा में अचल खड़ा दिखाई दिया।

आज भी जब कभी जंगल के सैलानी वहां जाते हैं, तो चरवाहे की मूर्ति को देखकर आश्चर्य में पड़ जाते हैं। बच्चे-बूढ़े सभी उसकी कहानी को जानते हैं। ●


चीटू-नीटू
सेहत बनाने के लिए सर्दी अच्छा मौसम है। आज से ही योगासन...
अच्छी सेहत
अरे, गर्दन की नस पर नस चढ़ गई, कोई मुझे सीधा करो
योग विद्या आसान नहीं। आओ तुम भी रस्सी कूदो, इससे सेहत और कद दोनों...
रस्सी उलझ गई। संभालो अपने आप को, जाओ और लटक कर व्यायाम करो
यहां भी दुर्घटना। सुबह तेजी से चलना अच्छा व्यायाम है, उससे कोई खतरा भी नहीं
आ...छी...
लगता है तुम्हें सर्दी लग गई है, घर चलो और रजाई में घुस जाओ
लम्बा सांस भीतर खींचो और बाहर निकालो, तुम्हारे लिए यही सुरक्षित व्यायाम है

शीर्षक बताइए

कैसी लगती है पगड़ी : इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई सुंदर-सा शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ नवम्बर १९९३ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। पसंद आए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : जनवरी '९४ अंक





पुरस्कृत चित्र

गणेश माधव मिश्र, आयु १२ वर्ष, श्री सत्यनारायण मिश्र, द्वारा श्री भवेशचन्द्र, पुराने डाकघर से दक्षिण (लाल निवास) मधुबनी-८४७२११।

इनके चित्र भी पसंद आए—आशीष वर्मा, हजारीबाग; कु. स्मिता पांडेय, वाराणसी; शम्पा पाठक, जबलपुर; रसिका पुंडीर, ननौता (सहारनपुर); नमन जुनेजा, मसूरी।

बाल सभा



राजेश ओझा प्रभात रोहिला मंजरी सिंह नितिन पराशर पवनकुमार गुप्त

पत्र मिला

□ 'नंदन' की नई पाठिका हूं। पत्रिका पढ़ना ही इतना रोमांचक है कि एक दिन में खत्म हो गई। अगर कुछ और कहानियां होतीं, तो मजा आ जाता। सितम्बर अंक में 'कूम लौट आया', 'नया नौकर' तथा 'छड़ी की आवाज' कहानियां बहुत मजेदार थीं।

—अनुराधा सेन, राऊरकेला (उड़ीसा)

□ आदि कवि वाल्मीकि का चित्र बहुत आकर्षक था। 'नारद ने कहा', 'ठग-महाठग' और 'अचूक निशाना' कहानियों के क्या कहने।

—प्रीतम गोइंदानी, भाटापारा

□ यह पत्रिका ज्ञान का सागर है। 'तेनालीराम', 'चटपट' तथा 'चीटू-नीटू' पढ़कर मन प्रसन्न हो जाता है। 'नंदन बाल समाचार' के लिए बहुत उत्सुक रहता हूं। पत्रिका पढ़कर बहुत प्रेरणा मिलती है।

—विक्रमकुमार सिंह, पूर्णिया (बिहार)

□ 'नंदन' के सितम्बर अंक में 'नारद ने कहा', 'ठग-महाठग', 'पानी-पानी', 'फैसला', 'छड़ी की आवाज', 'नया नौकर', 'उसे बुला' कहानियां बहुत अच्छी लगीं। आशा है कि पत्रिका इसी तरह हमारा मनोरंजन करती रहेगी।

—नीरज खिंदरी, अमृतसर

□ 'नंदन' को हर उम्र के लोग पसंद करते हैं। मुझे भी इसका हर अंक पसंद आता है।'तेनालीराम', 'चटपट', 'चीटू-नीटू', 'चित्र-कथाएं' इसमें चार चांद लगा देते हैं। सितम्बर अंक में 'एक चपाती' कविता सबसे अच्छी थी।

—पीयूष श्रीवास्तव, इटावा

□ आप तो बच्चों की सदैव सुनते हैं। मैं नौ साल की हूं। 'नंदन' पढ़ने का बहुत शौक है। हर महीने चुपचाप बचे हुए पैसों से 'नंदन' मंगाकर पढ़ती हूं। चुपचाप इसलिए कि मम्मी की डांट पड़ती है। पर 'नंदन' पढ़ने में जो आनंद आता है, उसे मैं ही जानती हूं।

—डॉली मिश्रा, भीमनगर (म. प्र.)

□ 'राजा ने वर मांगा', 'तब में अब', 'उड़ा तोता', 'उसे बुला' कहानियों के अलावा 'आओ बात करें' तथा दूसरे स्तम्भ बहुत अच्छे लगे।

—योगेंद्रकुमार गौतम, कोटा

□ मैं कभी-कभी सोचता हूं कि अब 'नंदन' नहीं पढ़ूंगा। लेकिन जिस माह इसे न खरीदूं तो बेचैन हो जाता हूं। दूसरे बच्चों को पत्रिका पढ़ते देखता हूं तो रोने लगता हूं। फिर जल्दी से पत्रिका खरीदकर खुश हो जाता हूं।

—रवि वर्मा, सीतामढ़ी

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : अशोककुमार शर्मा, बडौली (हरि.); निखिलकुमार, हजारीबाग; विकासकुमार गर्ग, लालड़ू (पंजाब)।

आगामी अंक

- गुलाबी सरदी और गुलाबों के मौसम में
- **भगवान बद्रीनाथ के मनोहारी दर्शन : नंदन एलबम में**
- खेलने के बाद टूटे खिलौने बच्चों ने फेंक दिए। तभी बाढ़ आ गई। बेघर खिलौनों को घर चाहिए। उनकी कहानी शुरू हुई—कैसे, कहां, कब पढ़िए महान कृति में!
- दो पृष्ठों में अद्भुत बहुरंगी झांकी और दो चित्रकथाएं
- ढेरों कहानियां, तेनालीराम लाया दूर की कौड़ी और चीटू-नीटू फिर बैठे सिर पकड़कर

और भी बहुत कुछ

पुरस्कृत कथाएं

करो वायदा

बहुत पुराने समय की बात है। रामपुर गांव में अचानक ही कई वर्षों तक अकाल पड़ा। अकाल के कारण खेती की जमीन बंजर हो गई। वह एक निर्धन गांव हो गया। उस गांव के लोग सीधे-सादे थे। उन्हीं में हरिश्चंद्र नामक ईमानदार एवं परिश्रमी लड़का अपने दादा-दादी के साथ रहता था। उसकी उम्र बारह वर्ष की थी। हरिश्चंद्र के गांव की ज्यादातर जमीन धन्नामल के यहां गिरवीं रखी थी। वह एक अत्याचारी व पापी मनुष्य था। अपने यहां गिरवी जमीन की ब्याज के बदले, गांव के लोगों से अपने खेतों में कड़ी धूप व ठंड में देर रात तक काम कराता था। उन्हें खाने को दो मुट्ठी अनाज देता था।

हरिश्चंद्र से किसी का दुःख नहीं देखा जाता था। वह खुद गरीब होते हुए भी दूसरों की मदद करना चाहता था। हरिश्चंद्र के दादा-दादी बूढ़े तथा असहाय थे। इसीलिए उसे धन्नामल के खेतों पर काम करने जाना पड़ता था। वह सवेरे जल्दी उठकर ईश्वर का नाम लेता। दादा-दादी के चरण छूकर स्नान आदि करता। कुछ खाकर धन्नामल के यहां काम करने जाता। वहां बड़े परिश्रम से काम करता।

एक सवेरे कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। हरिश्चंद्र जगह-जगह से फटी, आधी बाजू की कमीज पहने धन्नामल के खेतों पर काम करने निकला। उसने देखा, झोंपड़ी के पास, पेड़ के नीचे एक सांप घायल पड़ा है। उस निडर बालक के मन में दया की भावना जाग उठी। वह उस सांप के पास गया। सांप घायल था और दर्द से छटपटा रहा था। हरिश्चंद्र अपनी झोंपड़ी में गया। थोड़ा-सा ही दूध बचा था। वह दूध ले आया और सांप के सामने रख दिया। कुछ देर बाद जब सांप कुछ ठीक हुआ, तो उसने हरिश्चंद्र को एक मणि दी। वह मणि को लेकर धन्नामल के खेतों पर गया। धन्नामल मणि के तेज प्रकाश से चकाचौंध हो गया और हरिश्चंद्र से उसे मांगने लगा। हरिश्चंद्र बोला —"मैं यह मणि आपको दे दूंगा, परंतु आपको कुछ वायदे करने होंगे।" वह मान गया।

हरिश्चंद्र ने कहा —"जिन गांव वालों की जमीन आपने गिरवी रखी है, उन्हें वापस कर दें। गरीब व असहाय लोगों के साथ दयालुता व सहयोग करने का वचन दें।"

धन्नामल की आंखें यह सोचकर भीग गईं कि इस बालक ने इतनी कीमती मणि के बदले में, अपने लिए कुछ नहीं मांगा। गांव के गरीब व असहाय लोगों की खुशी का ध्यान रखा। उसने हरिश्चंद्र की बात का सिर हिलाकर, हां में उत्तर दिया। बालक की पीठ थपथपाकर प्यार किया। मणि भी नहीं ली। जब हरिश्चंद्र के दादा-दादी और गांव वालों को यह बात पता चली, तो उन्होंने उसे खूब आशीर्वाद दिया।

—अजितकुमार शर्मा, दिल्ली



राजा को सीख

रामू एक बहुत ही नेक व प्यारा लड़का था। उसके माता-पिता बहुत ही गरीब थे। इसी गरीबी के कारण वह पढ़ नहीं पाता था। रामू दूसरों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहता था।

उसका गांव बहुत ही पिछड़ा हुआ था। वहां के लोगों को दो वक्त की रोटी भी मुश्किल से मिलती

थी । वे रात-दिन मेहनत करते, फिर भी उनके बच्चों की उचित देखभाल न होती । गांव वाले बहुत दुखी रहते थे, लेकिन राजा को इस बात की चिंता ही न थी ।

गांव वालों की हालत देखकर, रामू भी परेशान हो उठता । लेकिन वह बच्चा था । उसकी समझ में नहीं आता था कि लोगों की मदद कैसे करे ?

एक दिन रामू कहीं जा रहा था । चलते-चलते वह बहुत दूर निकल गया । एक झाड़ी के पास आराम करने लगा । अचानक उसकी नजर झाड़ी के नीचे पड़ी एक चमकती हुई चीज पर पड़ी । उसे हाथ में उठाकर आश्चर्य से देखने लगा । वह एक चमकता हुआ गोला था । उस गोले में इतनी चमक थी कि रामू की आंखें चौंधिया गईं । रामू उस चीज को घर ले आया । माता-पिता को दिखाया । माता-पिता उसे देखकर बहुत खुश हुए । वह सोने का एक गोला था, जो अंधेरे में भी चमक रहा था ।

रामू की मां ने कहा कि इसे बेचकर वे धनवान बन सकते हैं ।

यह सुनकर रामू बोला—"गांव में बहुत जरूरतमंद लोग हैं । हमें उनकी मदद करनी चाहिए।न कि सिर्फ अपने बारे में सोचना चाहिए ।" रामू के माता-पिता को भी यह बात बहुत अच्छी लगी । उन्होंने गोला बेचा और सारा धन गांव वालों में बांट दिया । चारों तरफ रामू की प्रशंसा होने लगी ।

राजा को यह बात पता चली, तो उसे बहुत अच्छा लगा । यह भी लगा—'जब एक छोटा बच्चा सबकी मदद कर सकता है, तो मुझे भी अपनी प्रजा का ध्यान रखना चाहिए ।' राजा ने उसी दिन से प्रजा की कठिनाइयों पर ध्यान देना शुरू कर दिया । रामू के भरण-पोषण की जिम्मेदारी राजा ने अपने ऊपर ले ली ।

—भारती दास, पुरी (उड़ीसा)

इनकी कहानियां भी पसंद आईं : अखिलेश कुमार सिंह, इटावा; सुमित जैन, दार्जिलिंग; गणेशशंकर सूर्य, उधना जं. (गुज.) ।

नई पुस्तकें



बालस्वरूप राही जाने-माने कवि हैं । गीत, गजल और रूबाइयां वह लिखते रहे हैं । सराहना होती रही है लेकिन उन्होंने बाल-गीत और बढ़िया शिशु-गीत भी खूब लिखे हैं । 'दादी अम्मा मुझे बताओ'—पुस्तक पर राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था । राही जी की पुस्तक 'हम जब होंगे बड़े' भी लोकप्रिय हुई है । हाल ही में उनकी दो सुंदर पुस्तकें आई हैं—

(१) हम सबसे आगे निकलेंगे
(२) बंद कटोरी मीठा जल

दोनों पुस्तकों के प्रकाशक—पर्ल (इंडिया) पब्लिशिंग हाउस लि., देशबंधु गुप्ता मार्ग, देव नगर, नई दिल्ली-५; प्रत्येक का मूल्य : नौ रु. पचास पैसे ।

पहली पुस्तक में बाइस शिशु गीत हैं—सारे ही मनोरंजक और मजेदार । बानगी लीजिए—रोबोट

मम्मी एक खिलौना लाई,
लाई बड़े कमाल का ।
चलता-फिरता बौना जैसे,
हो दस-बारह साल का ।
चम-चम करती आंखों वाला,
डग-मग डग-मग चाल का ।

दूसरी पुस्तक में भी बाइस शिशु-गीत हैं । नारियल के बारे में चार पंक्तियां हैं—

कौन नारियल के पेड़ों पर,
जादू-सा कर जाता है ।
बंद कटोरी में मीठा जल,
चुपके से भर जाता है ।

एक कविता तितलियों पर है—

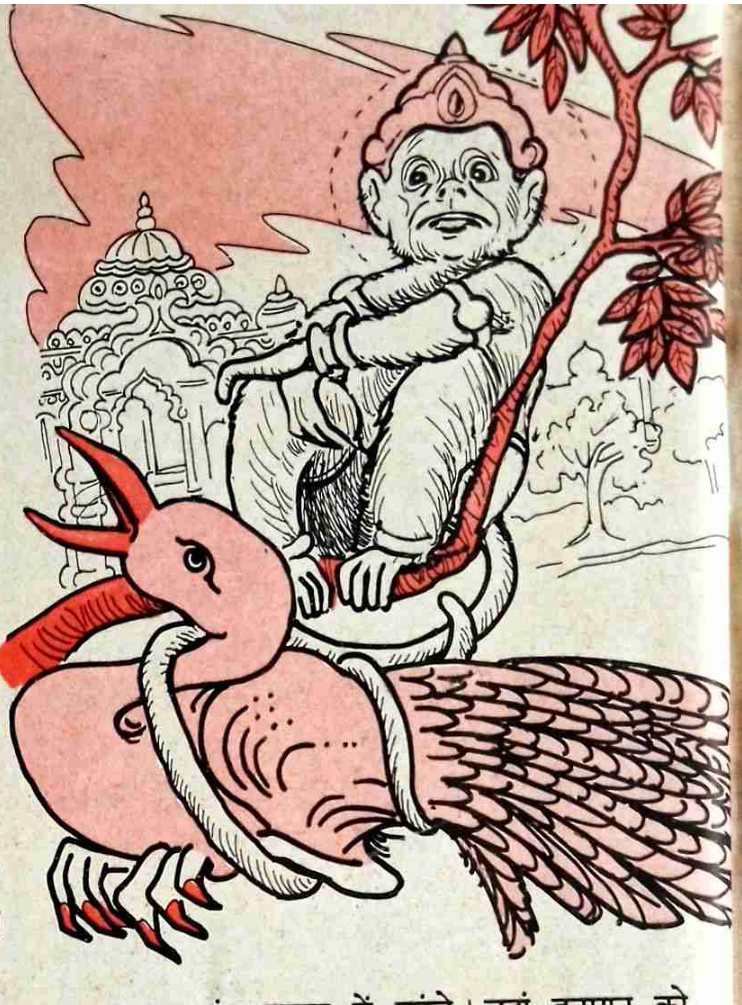
रंग-बिरंगी कई तितलियां,
लाल-हरी चम्पई तितलियां ।
जब-जब फूल नए खिलते हैं,
आ जाती हैं नई तितलियां ।

दोनों पुस्तकों में कवि जैसे शब्दों से खेल रहा हो । राही जी का कहने का अपना अंदाज और खरी बाल कविता । वह बच्चों के श्रेष्ठ कवि हैं—इसमें दो राय नहीं हो सकतीं ।

बड़े आकार की पुस्तकों में बहुरंगे चित्र बालक को आकर्षित करते हैं । छपाई भी सुंदर है ।

महल में वानर

— डा. एम. एस. अग्रवाल



द्वापर काल के अट्ठाइसवें मन्वंतर का समय था। श्रीकृष्ण द्वारका में निवास कर रहे थे। एक दिन सत्यभामा ने कृष्ण से पूछा— "जनकदुलारी मुझसे अधिक सुंदर थीं, जिनके कारण आपको श्रीराम का शरीर धारण करके, उन्हें ढूंढ़ने के लिए दर-दर भटकना पड़ा था?"

यह सुन द्वारकाधीश ने कोई उत्तर नहीं दिया। उन्हीं दिनों उनके तेजस्वी चक्र ने सुरेंद्र के वज्र को भी पराजित कर दिया था। उस चक्र में भी अभिमान के अंकुर फूट आए थे। वह अपने को विश्व का सबसे अधिक शक्तिशाली अस्त्र समझने लगा था।

प्रभु के वाहन गरुड़ में भी अपनी शक्ति के कारण अहंकार आ गया था। उन्होंने देवताओं और दानवों के युद्ध में अपनी चोंच से कई दानवों को मार गिराया था।

इन तीनों का अभिमान दूर करने के लिए द्वारकाधीश ने हनुमान को याद किया। हनुमान तुरंत द्वारका आ गए। उद्यान में प्रवेश किया। प्रहरियों ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन उनके लाल नेत्रों के भय से वे एक तरफ दुबक कर बैठ गए।

हनुमान एक वृक्ष पर चढ़ गए। वह फल खाने लगे। उन्होंने डालियां तोड़कर इधर-उधर फेंक दीं। थोड़ी देर में सारी वाटिका तहस-नहस हो गई। डरते-डरते प्रहरी द्वारकाधीश के समीप पहुंचे। बोले— "प्रभो, कोई बलवान वानर उद्यान में आ गया है। वह उद्यान को पूरी तरह नष्ट करने पर तुला है।"

प्रभु ने आदेश दिया— "तुम सेना लेकर जाओ। उसे पकड़कर ले आओ।" गरुड़ पास ही बैठे थे। उन्हें प्रभु की बात पसंद नहीं आई। उन्होंने कहा— "प्रभो, एक छोटे- से वानर के लिए सेना! उसके लिए मैं अकेला ही पर्याप्त हूं।"

"ठीक है। जैसे भी हो, वानर को मेरे पास लेकर आओ।"— कृष्ण ने कहा।

गरुड़ तुरंत उद्यान में पहुंचे। वहां हनुमान को देखा। वह उनकी तरफ पीठ किए बैठे हुए थे।

गरुड़ ने गुस्से से कहा— "वानर, द्वारकाधीश के उद्यान को नष्ट करने का साहस तुमने कैसे किया?"

हनुमान ने उत्तर दिया— "मैं वानर हूं। मैं ऐसा सदा से करता आ रहा हूं। वानर जो कुछ करते हैं, वहीं मैंने किया है।"

—"अच्छा, द्वारकाधीश के पास चलो। वह तुम्हें बुला रहे हैं।"

—"मैं किसी द्वारकाधीश को नहीं जानता।"

गरुड़ बोले—"तुम मुझे नहीं जानते? मेरा नाम गरुड़ है।"

—"तुम जैसी चिड़ियां बहुत देखी हैं। अगर तुममें बल हो, तो वह भी दिखा लो।"

यह सुनते ही गरुड़ ने हनुमान पर हमला कर दिया। हनुमान ने उन्हें अपनी पूंछ में लपेट लिया। अब गरुड़ घबराकर बोले—"मुझे श्रीकृष्ण महाराज ने भेजा है। उन्होंने तुम्हें बुलाया है।" हनुमान ने उन्हें

छोड़ दिया।

हनुमान ने हंसते हुए कहा—"मैं किसी श्रीकृष्ण को नहीं जानता। मैं कोसल नरेश श्रीरामचंद्र का भक्त हूं। मैं श्रीकृष्ण के पास क्यों जाऊं?"

—"श्रीकृष्ण और राघवेंद्र एक ही हैं। तुम्हें उनकी सेवा में उपस्थित होना चाहिए।"

"तुम ठीक कहते हो। लेकिन श्रीराम के सिवाए किसी दूसरे के दर्शन करना मेरे वश की बात नहीं।"—हनुमान बोले।

गरुड़ को फिर क्रोध आ गया। वह बोले—"वानर, तुम्हें द्वारकाधीश की सेवा में चलना ही पड़ेगा।"

—"गरुड़, बेकार की जिद मत करो। मुझे शांति से उद्यान का आनंद लेने दो।"

गरुड़ ने एक बार फिर हनुमान पर झपट्टा मारा। हनुमान साफ बच गए। उन्होंने गरुड़ को अधिक आघात पहुंचाना उचित नहीं समझा। इसलिए उन्होंने गरुड़ को पूंछ में लपेटकर समुद्र में फेंक दिया।

गरुड़ किसी तरह प्रभु के समीप पहुंचे। प्रभु सब जानते ही थे। उन्होंने पूछा— "अरे गरुड़, क्या समुद्र में स्नान करके आ रहे हो?"

—"प्रभो, वह वानर असाधारण है। उसने मुझे समुद्र में फेंक दिया।"

"गरुड़, वह रामभक्त हनुमान हैं। अब वह मलयगिरि पर चले गए हैं। वहां जाकर उनसे कहना कि श्रीरामचंद्र ने याद किया है।"—श्रीकृष्ण ने गरुड़ को समझाते हुए कहा।

अब गरुड़ मलयगिरि की तरफ उड़ चले। इधर सत्यभामा से श्रीकृष्ण ने सीता जी का रूप धारण कर अपने महल के पास आने को कहा। फिर चक्र को आदेश दिया कि कोई भी अंदर प्रवेश न करे।

गरुड़ हनुमान के समीप दोबारा पहुंचे। उन्होंने साहस करके हनुमान से कहा—"द्वारका में श्रीराम ने आपको बुलाया है।"

"गरुड़, तुम चलो, मैं अभी आता हूं।"— प्रसन्न होकर हनुमान ने उत्तर दिया। गरुड़ द्वारका की तरफ चल दिए।

इधर हनुमान गरुड़ से पहले द्वारकाधीश के महल के द्वार पर पहुंच गए। अपने प्राणनाथ के दर्शन में बाधक चक्र को उन्होंने मुख में रख लिया। अंदर जाकर वह प्रभु के चरणों में लोट गए।

हनुमान ने भाव विह्वल होकर प्रभु से पूछा—"नाथ, माता जी कहां हैं?" पास बैठी सत्यभामा यह सुन, बड़ी लज्जित हुईं। उसका सारा अभिमान गायब हो गया। उसी समय गरुड़ ने अंदर प्रवेश किया। वहां हनुमान को पहले से विराजमान देखा, तो उनका भी सिर झुक गया। राम ने मुसकराते हुए हनुमान से पूछा—"तुम्हें यहां आते हुए किसी ने रोका तो नहीं?"

"प्रभो, द्वार पर आपका चक्र मुझे अंदर आने से रोक रहा था। मैं उसे अपने मुख में रखकर अंदर चला आया हूं।"—यह कहकर उन्होंने मुंह खोला, तो चक्र बाहर आ गया।

सत्यभामा, गरुड़ और चक्र प्रभु की इस लीला को देखकर अपने अहंकार को भूल गए थे। तभी श्रीकृष्ण अपने रूप में आ गए। हनुमान का कहीं पता न था।





शीर्षक बताइए

परिणाम

नंदन सितम्बर '९३ में छपे रंगीन चित्र पर पुरस्कार के लिए ये शीर्षक चुने गए।

आओ तुमको खबर सुनाऊं, बिना पढ़े सब कुछ बतलाऊं।

—श्रद्धा शुक्ला, टाइप I, म. नं. २, सेक्टर के, केंद्राचल कालोनी, अलीगंज, लखनऊ।

पढ़ना चाहें हम अखबार, पर पढ़ न पाएं एक भी बार।

—शैलेश गोयल, १०९ पार्क कालोनी, भिवानी (हरि.)।

कैसे पढ़ूं अंग्रेजी अखबार ! मैं करता हिंदी से प्यार।

—सावित्री चौधरी, २९ सिंधी कालोनी, आदर्शनगर, जयपुर।

पढ़ना आता नहीं मुझे, फिर भी पढ़ाता हूं तुझे।

—बबिता, २१-२-७६९ पैटर गैटी, पटेल मार्केट चौकामन, हैदराबाद।

इनके शीर्षक भी सराहे गए : मिथिलेशकुमार, वैशाली (बि.); प्रांतुश, मरीगांव (असम); विकास शर्मा, जींद (हरि.); मोनिका गुप्ता, लुधियाना; मुन्ना पोल, कलकत्ता।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. पुस्तक रैक के नीचे लगा आधार दूसरा है।
२. उसके नीचे लगी रेलिंग में एक पट्टी कम है।
३. सोफे की दाईं बाजू अधिक लम्बी है।
४. गुलदस्ते में एक फूल अधिक है।
५. उस पर बने डिजाइन से एक गोला गायब है।
६. टेलीविजन के तार में बल पड़ा है।
७. दाएं कोने में मेज का ऊपरी भाग चौड़ाई में काले रंग का है।
८. उस पर रखे बर्तन का हैंडिल लम्बा है।
९. कोने में रखे टेबिल लैम्प के नीचे का गोला अधिक टूट गया है।
१०. सामने वाली खिड़की के पर्दे का डिजाइन बदल गया है।

नंदन ज्ञान-पहेली : २९७



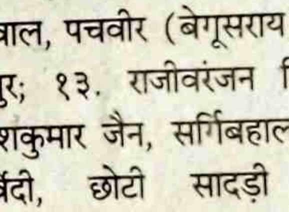
परिणाम

इस बार भी पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। ढेरों सर्वशुद्ध हल आ गए। परिणाम के लिए लाटरी का सहारा लेना पड़ा। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

सर्वशुद्ध : पचीस : प्रत्येक को चालीस रुपए

१. राजू श्रीवास्तव, दिल्ली; २. मीनाक्षी कुमारी, सूर्यपुरा (रोहतास); ३. सीमा, गाजियाबाद; ४. मंजुला कुमारी, सीतामढ़ी; ५. विकास महाजन, जालंधर सिटी; ६. दिनेश, मोर (पटना); ७. सांवलराम मीना, थूनियां (दौसा); ८. प्रशांत शर्मा, लश्कर, ग्वालियर; ९. प्रवीणकुमार दुबे, कुशीनगर; १०. निशांत भास्कर, मुजफ्फरपुर; ११. अर्जुनकुमार अग्रवाल, पचवीर (बेगूसराय); १२. नरेंद्रकुमार वर्मा, जयपुर; १३. राजीवरंजन मिश्र, गोपालगंज; १४. योगेशकुमार जैन, सर्गिबहाल (उड़ीसा); १५. नीता चतुर्वेदी, छोटी सादड़ी (चित्तौड़गढ़); १६. प्रवीणकुमार सुमन, भागलपुर; १७. पल्लवी दुबे, नई दिल्ली; १८. सुरेशकुमार गौतम, बड़ौदा (श्योपुर); १९. धीरेंद्रकुमार चतुर्वेदी, वगही (परौना); २०. संजीदा बानो, देवली (टोंक); २१. शिवकुमार मेहता, दरिगांव; २२. दीपक शर्मा, इस्माइलाबाद (कुरुक्षेत्र); २३. रोहिताश शर्मा, सूरतगढ़; २४. कुंदनकुमार लक्की, भूपतिपुर (पूर्वी चम्पारण); २५. अखिलेश कुमार, इलाहाबाद।

गोरखधंधा : उत्तर

१. 

२. कागज के फूल मुरझाते नहीं हैं।
३. ताला खुला हुआ ही है।
४. सिक्का या नोट ५. पाइंटमैन ६. नमक

अपना देश प्रतियोगिता

सर्वशुद्ध हल

१. संस्कृत में बनी **भगवद्गीता** फिल्म को इस वर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया है। २. **लखनऊ** में ऐसा मंदिर बन रहा है। ३. कवि नरेश मेहता को **ज्ञानपीठ** पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। ४. भारत में बनाए गए सुपर कंप्यूटर का नाम **परम** है। ५. हिमालय की चोटी पर चढ़ने वाली सबसे कम उम्र की पर्वतारोही हैं **डिकी डोल्मा**। ६. भारत का सबसे ऊंचा पर्वत शिखर है **कंचनजंघा**। ७. भागीरथी और अलकनंदा नदियों का संगम होने के बाद इसका नाम **गंगा** हो जाता है। ८. प्रमुख गणितज्ञ आर्यभट्ट **चंद्रगुप्त द्वितीय** के समय में हुए थे। ९. पशु-पक्षियों की कहानियों की सबसे प्राचीन पुस्तक है— **पंचतंत्र**। १०. खजुराहो मंदिर **चंदेल** राजाओं ने बनवाए थे। ११. काली मिट्टी **कपास** की उपज के लिए सबसे अधिक सहायक होती है। १२. सौर परिवार का सबसे छोटा ग्रह **प्लूटो** है। १३. शास्त्रीय गायन के लिए **भीमसेन जोशी** को तानसेन पुरस्कार दिया गया। १४. भारत में प्रथम दूरदर्शन केंद्र **दिल्ली** में स्थापित किया गया था। १५. खेलों का नेता जी सुभाष राष्ट्रीय संस्थान **पटियाला** में है। १६. **आंध्र प्रदेश** नदियों का राज्य कहलाता है।

परिणाम

देश के कोने-कोने से हजारों पाठकों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। पुरस्कार पाने वाले विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं—

१. विजया तिवारी, रांची; २. निधि गोयल, मुजफ्फर नगर; ३. आशीष जायसवाल, नई दिल्ली; ४. श्वेतकमल, सहरसा; ५. दिलशाद अंसारी, सागर; ६. अभिषेककुमार, पटना; ७. मधुर गुप्ता, झांसी; ८. संतोष श्रीवास्तव, डंगरी; ९. प्रियंका प्रियदर्शिनी, मिर्जागांव; १०. स्वर्णलता, सासाराम; ११. पंकज तायल, खुर्जा; १२. अनुपमा सहाय, छपरा; १३. मानसिंह, तेजगढ़ (उ.प्र.); १४. लीला नाथभज, मधुबनी; १५. रोहित साहा, बल्लभगढ़; १६. अमित कुमार आढ्य, बालेश्वर (उड़ीसा); १७. रुचि, चंडीगढ़; १८. पार्थ सारथी खजूरिया, जम्मू-तवी; १९. सुरभि अग्रवाल, बड़ौदा; २०. वरुण गमेरीवाला, अमृतसर; २१. अखिलेश तिवारी, आतपुर (प.बं.); २२. रमनकुमार मोहिंद्रू, शिमला; २३. राकेशकुमार वर्मा, चनपटिया; २४. प्रवीण साहा, दिल्ली; २५. रजत कुमार मुखर्जी, मोहनगंज (बिहार); २६. अंकुर अग्रवाल, नवलगढ़ (राज.); २७. अभिसार वर्मा, भोपाल; २८. नवीन गुप्ता, दिल्ली; २९. संजय गौतम, श्रीनगर (गढ़वाल); ३०. रूपेशकुमार, बुनियादगंज (गया); ३१. प्रज्वलगोपाल झा, सहरसा; ३२. चंदन अतुल, अजमेर; ३३. अवनि सोनी, बड़नगर (म.प्र.); ३४. नेहा गोयल, मेरठ; ३५. वेदप्रकाश इंदौरिया, दिल्ली; ३६. अनिताकुमारी, बिहारशरीफ; ३७. स्वाति शर्मा, चुरू (राज.); ३८. राहुल सोनी, उज्जैन; ३९. शुचिता किशोर, लखनऊ; ४०. शिप्रा गोयल, मुजफ्फरनगर; ४१. रवीश रंजन, पटना; ४२. राजीव मिश्र, हजारीबाग; ४३. अविनाश खटोड़, पाली; ४४. ब्रजेशकुमार सिंह, मुरादाबाद; ४५. परिमल सौरभ, भागलपुर; ४६. श्रुति मिश्र, टुंगरी; ४७. दीपक दुबे, भरतपुर; ४८. मीरा बघेल, इंदौर; ४९. पारस प्रवीण चंदोला, नंदप्रयाग; ५०. अमित शर्मा, दिल्ली।



पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ______________ आयु ______

पूरा पता ______________

____

रुचि ______________

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. हिमांशु कुमार, १४ वर्ष, हरेंद्र पांडेय, ग्रा. हरदिया, पो. अरेराज, पूर्वी चम्पारण; २. वंदना बजाज, १५, १५-यू ए जवाहर नगर, दिल्ली; ३. अमित केड़िया, १४, केड़िया स्टोर्स, दिन बाजार, जलपाई गुड़ी (प. बं.); ४. गौरव अग्रवाल, ११, एफ ३१५ कमला नगर, आगरा; ५. जितेंद्रकुमार वार्ष्णेय, १३, खजांचीलाल वार्ष्णेय, नई कोतवाली के पास, सासनी, अलीगढ़; ६. दिलीपसिंह, १५, आर. बी. सिंह, मथुरा मार्केट चौक, पटना; ७. हरकिरन कौर, ११, ५५१घ/३ रामगली, नटखेड़ा रोड, आलमबाग, लखनऊ; ८. कुमार राहुल, १४, नागेंद्रनाथ झा, पथ निर्माण विभाग, सहरसा; ९. किरण लाकोल, १२, न्यू बोर्डिंग स्कूल, महाराज गंज, काठमांडू (नेपाल); १०. ओमकांत शर्मा, १०, गोविंददेव शर्मा, नवलगढ़, झुंझुनू (राज.); ११. जितेंद्र रस्तोगी, १६, राधेकृष्ण रस्तोगी, वस्त्र विक्रेता, सलोन, रायबरेली; १२. सीमंतनी शास्त्री, १४, २५१ श्रीगोपाल नगर, जयपुर; १३. अनूपकुमार गुप्ता, १२, दयाशंकर गुप्ता, माली टोला, निकट-गुप्ता लॉज, बस्ती (उ.प्र.); १४. नीरज प्रकाश, १५, रोड नं. ४, उत्तरी पटेलनगर, पटना; १५. नरेश परिहार, १५, महेश इंजिनियरिंग वर्क्स, जोधपुर रोड, बालोतरा (राज.); १६. अशोककुमार उपाध्याय, १५, २६/७ पी.एन.टी. कालोनी, बोकारो स्टील सिटी; १७. पूनम अग्रवाल, १५, महेशचंद्र अग्रवाल, १०५ गांधीनगर, भर्थना, इटावा (उ.प्र.); १८. पार्श्व मुरडिया, ९, ४० स्टाफ कालोनी, जोबनेर, जयपुर; १९. निभा कुमारी, १२, चंद्रभानु प्रसाद यादव, ग्रा.+पो. सैदपुर, खगड़िया; २०. बलदेव जुमनानी, १३, जुमनानी आटा चक्की, सिंधी कालोनी, ग्वाल टोली, होशंगाबाद; २१. संजयकुमार कुशवाहा, १६, १८४/बी रेलवे कालोनी, लाइनपार, टूंडला, फिरोजाबाद; २२. मनोज आत्रेय, ११, ईश्वरचंद्र आत्रेय, ग्रा.+पो. सिसाय, हिसार, (हरि.); २३. शैलेशकुमार जैन, १६, चंद्रेशकुमार जैन, जैन मंदिर के पीछे, जसवंत नगर, इटावा; २४. सचिन कुमार, १४, राजेंद्र प्रसाद, नई बस्ती महादेवा, सिवान (बि.); २५. विवेककुमार शर्मा, १३, बैजनाथप्रसाद शर्मा, निकट-बस अड्डा, सेवढ़ा, दतिया (म.प्र.); २६. अनूप कुमार, १०, दामोदर महतो, टाटा सिजुआ, १२, भेलाटांड, धनबाद; २७. अभिषेक देव उपाध्याय, १०, देवालय पंचशील कालोनी, रामगंज, अजमेर; २८. शमा परवीन, १२, अब्दुल वाजिद, मुहल्ला अली खां सिद्दिकियान मस्जिद, काशीपुर, नैनीताल।

खेल, संगीत और चित्रकला में रुचि :

१. प्रज्वल कार्की, १६ वर्ष, पो. बाक्स नं. ५४०३, काठमांडू (नेपाल); २. संदीपकुमार कक्कड़, १५, कृष्णा ट्रेडर्स, रेलवे क्रासिंग मंदिर के नीचे, किच्छा, नैनीताल; ३. पवन गुप्ता, १२, ६३, रायगंज सीपरी बाजार, झांसी; ४. सौरभ गोस्वामी, १०, वार्ड १४, सोगा पथ, बालाघाट (म.प्र.); ५. आलोक अरुण, ११, परमानंद झा, धर्मपुर, समस्तीपुर; ६. प्रियंका मिश्रा, ११, ११ मनुजेंद्र दत्त रोड, दमदम कैंट, कलकत्ता; ७. ऋतुराज उप्रैती, १६, रेडियो हाउस, नया बाजार, पिथौरागढ़; ८. रचना कंचन, १५, अजय भवन, दास लेन, पूर्वी लोहानीपुर, पटना; ९. जफर अहमद, १२, १७२/१२६ हाता लाल खां, अमीनाबाद, लखनऊ; १०. जीनत परवीन १२, १४५ कार्ल मार्क्स सरणी, खिदिरपुर, कलकत्ता; ११. परमजीत, ११, २२/२२८७ डा. एच.सी. सेन रोड, दिल्ली; १२. सुशीलकुमार सिंह, १३, सुशील स्टूडियो, गौर बाजार, बस्ती; १३. गगन गुप्ता, १४, ६३ रायगंज, सीपरी बाजार, झांसी; १४. अनिल सितलानी, १६, ८ द्वारकानगर, लाल माटी, जबलपुर; १५. आदित्य श्याम देव, १४, १९, नेहरू नगर, वार्ड नं. ५, महाराजगंज; १६. शबनम खान, १२-सगीर खान, सैक्टर-२१ ए/१९५ एन.आई.टी., फरीदाबाद; १७. विवेकमोहन, १३, सत्यभामा काम्पुलेक्स, द्वितीय मंजिल, जस्टिस राजकिशोर पथ, कदम कुंआ, पटना; १८. रवि आर्य, १२, डा. हरिनाथ मेहरोत्रा, सिविल लाइंस, इटावा; १९. अन्नू सिंह, १२, ज्ञानेंद्रसिंह, भारतीय स्टेट बैंक आफ इंडिया, मीठापुर, पटना; २६. धनंजयकुमार, निर्मल, १४, प्रजा निवास, पो. रामपुर, पटना; २७. नीलू सिन्हा, १२, डाक बंगला रोड, एच/१४, पिछोर, शिवपुरी; २८. अमितकुमार, १२, १११/४१ अशोकनगर, मोती झील, कानपुर; २९. अब्दुल्लाह, १५, अताउल्लाह, पिपरापुर, मल्लाह टोला, जि. गोरखपुर; ३०. श्रुति अग्रवाल, १५, बालेश्वर प्रसाद अग्रवाल, अग्रवाल लॉज, खनुआ रोड, छपरा (बि.)।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन


mango
bite

रजि. नं. डी.एल.-२७००५/९३ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४

